ISSN 2348-4683
मूल्य: ₹20 मात्र

पाँचवाँ स्तंभ

सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक

सं जानीध्वं, सं गच्छध्वम्

मार्च 2020

वर्ष 14, अंक 152

सामाजिक सुधार
विकास का आधार

- पूर्ण शराबबंदी – अभूतपूर्व सामाजिक परिवर्तन की बुनियाद।
- बाल विवाह तथा दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों के विरूद्ध व्यापक अभियान।
- गाँधी जी के विचारों का प्रचार–प्रसार।

गाँधीजी के विचार में सात सामाजिक पापकर्म :–

1 सिद्धांत के बिना राजनीति
2 परिश्रम के बिना धन
3 विवेक के बिना सुख
4 चरित्र के बिना ज्ञान
5 नैतिकता के बिना व्यापार
6 मानवता के बिना विज्ञान
7 त्याग के बिना पूजा

''पृथ्वी सभी मनुष्यों की जरूरत पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान करती है, लेकिन लालच पूरा करने के लिए नहीं।''

– महात्मा गांधी

बिहार सरकार

सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग

लोकतंत्र का
पाँचवाँ स्तंभ
सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक
वर्ष 14, अंक, 152, (कुल पेज 64, कवर सहित)

संस्थापक संपादक : मृदुला सिन्हा
संपादक : संगीता सिन्हा
सलाहकार संपादक : डॉ. रामशरण गौड़
सह–संपादक : संजय कुमार मिश्र
कला एवं सज्जा : प्रहलाद यादव
: नीता राय

कार्यालय
पी.टी. 62/20, डी.डी. ब्लॉक, कालकाजी,
नई दिल्ली- 110019
इ.मेल: editorpanchwastambh@gmail.com
panchvan.stambh@gmail.com
वेबसाइट : www.sathionline.com
फोन/फैक्स : 011-26231999

शुल्क
एक अंक : ₹20
वार्षिक : ₹220
पाँच वर्षीय : ₹1000
आजीवन के लिए : ₹2500

समस्त चेक/बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, पाँचवाँ स्तंभ (Panchwa stambh) नई दिल्ली के नाम स्वीकार्य होंगे।

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्रीमती संगीता सिन्हा द्वारा, पी.टी. 62/20, कालकाजी, नई दिल्ली–110019 से प्रकाशित तथा एना प्रिंट ओ ग्राफिक्स प्रा.लि. 347–के, उद्योग केन्द्र एक्सटेंशन-II, सेक्टर–ईकोटेक-II, ग्रेटर नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र. से मुद्रित

न जातीय, न एकाकम्

'साथी' (सोशल एक्शन थ्रू इंटिग्रेटेड नेटवर्क) का मासिक प्रकाशन

पाँचवाँ स्तंभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी कानूनी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायालय की अधिकारिता में।

इस अंक में

मंथन 04

संकल्प
प्रकृति और मानव
मृदुला सिन्हा 06

विशेष : बिहार
बिहार की प्रबुद्ध धरती और आधी आबादी
उषाकिरण खान 08

मेरा गाँव तब और अब
डॉ. रामकृपाल सिन्हा 10

शहर : साहित्य, संस्कृति, भाईचारे का
संजय पंकज 13

बिहार के विकास में स्वैच्छिक संगठनों का उल्लेखनीय योगदान
डॉ. ध्रुव कुमार 17

बागमती-कछार के तीन रचनाकार
पूनम सिन्हा 19

भारतीय पुनर्जागरण और बिहार
रामकुमार निराला 21

राजकुमार शुक्ल : जिसकी जिद ने गांधी और भारत का परिचय एक-दूसरे से कराया
चंदन शर्मा 23

बिहार में पयर्टन की असीम संभावनाएँ
डॉ. रामशरण गौड़ 25

कविताएँ
सखि वे मुझसे कह कर जाते
मैथिलीशरण गुप्त 27

जागो मन के सजन पथिक ओ!
फणीश्वरनाथ रेणु 27

लड़कियाँ
अशोक सिंह 28

होली आ गई
भारती पांडे 38

मन में उतरा वसंत
जनार्दन मिश्र 45

सरोकार
किसान और कृषि : 2020-21 बजट की प्राथमिकता
प्रो. लल्लन प्रसाद 29

महिला दिवस
स्त्री-अधिकार और सोशल मीडिया
सुभाष सेतिया 35

पर्वोत्सव
होली के साथ बदले हैं लोकगीत भी
शारदा सिन्हा 37

होली तेरे रंग अनेक...
शास्त्री कोसलेन्द्रदास 39

अभिनव प्रयास
बिहार फाउंडेशन : परिचय एवं उद्देश्य
मनोज सिंह राजपूत 42

पटना : गंगा के घाटों का कायाकल्प
उत्कृष्ट गौरव 44

स्वैच्छिक प्रयास 46

बिहार को सम्मान
पद्म पुरस्कार 2020 : आठ विभूतियों ने बढ़ाया बिहार का मान 48

संस्कार प्रवाह
पहला सत्याग्रही : प्रह्लाद
श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी 50

बया हमारी चिड़िया रानी
महादेवी वर्मा 51

प्राकृतिक संस्कृति का संपोषण करतीं लोककथाएँ
ओम प्रकाश शर्मा 52

कहानी
अन्तिम इच्छा
बदीउज्जमाँ 54

'सत्य के प्रयोग' से
महात्मा गांधी 59

किस्त-दर-किस्त
संजय कुमार मिश्र 62

बिहार का रंग

यह अंक बिहार प्रदेश को समर्पित है, जिसने देश को लोकतंत्र का आइडिया दिया। बिहार आज आगे बढ़ रहा है, वहाँ के लोग, वहाँ की बेटियाँ, सभी नए आयाम गढ़ने की कोशिश कर रहे हैं और वह कोशिश कामयाबी की तरफ भी ले जाती है। बिहार का एक गाँव बेटियों के लिए ऐसी मिसाल पेश कर रहा है, जिस पर पूरा देश नाज कर सकता है। सहरसा जिले के सत्तरकटैया गाँव की 56 बालिकाएँ राष्ट्रीय खिलाड़ी हैं।

22 मार्च को 'बिहार दिवस' है। आप सभी को बिहार दिवस की बहुत शुभकामनाएँ। आज बिहार और बिहारी किसी से अपरिचित नहीं। बिहार की भूमि देश के गौरव को सुशोभित करने वाली और सबसे प्राचीन संस्कृति की संरक्षक है। माँ सीता की जन्मभूमि है तो गौतम बुद्ध की तपोभूमि भी है। प्राचीन काल का मगध और पाटलिपुत्र का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि भारत। सच पूछिए तो विविधता में एकता ही बिहार की भौगोलिक, साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक बनावट का अंतःसूत्र रहा। गंगा घाटी में अवस्थित बिहार एक तरफ हिमालय और तीन तरफ समुद्र से घिरे विशाल भू-भाग को भारत राष्ट्र के रूप में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक पहचान बनाने में निर्णायक भूमिका अदा करता रहा है। इसलिए कहा जाता है कि भारत की उत्पत्ति और विकास के प्राचीन इतिहास का तीन-चौथाई वस्तुतः बिहार का इतिहास है।

राजेन्द्र बाबू की जन्मभूमि बिहार वह राज्य है, जहाँ कवि कोकिल विद्यापति का जन्म हुआ। गंगा, बागमती, कोसी, कमला, गंडक, घाघरा, सोन, पुनपुन, फल्गु तथा किऊल नदियाँ यहाँ की जीवनधारा हैं। अंगिका, भोजपुरी, मगही, मैथिली और बज्जिका जैसी मीठी भाषाएँ और बात करने का लहजा शायद ही कहीं और देखने को मिलता है। मिथिला पेंटिंग जैसी सदियों पुरानी चित्रकला विदेशों तक विख्यात है। नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्व स्तर के विश्वविद्यालयों का पुरातन स्वर्णिम इतिहास है। सन् 1857 के प्रथम मुक्ति संग्राम में बिहार की अग्रणी भूमिका थी, जिसका नेतृत्व बाबू कुँवरसिंह और उनके भाई अमर सिंह ने किया था। बिहार की राजनीतिक सोच हमेशा से परिपक्व रही है। कहा जाता है कि लोकतंत्र सदैव अपूर्ण होता है और इसको परिष्कार तथा पूर्णता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया से गुजरते रहना पड़ता है, लेकिन शर्त यह है कि वहाँ का लोक अपने तंत्र की जड़ों से जुड़ा रहे।

इतिहास से इतर आज का बिहार भी बढ़-चढ़कर अपनी उपलब्धियाँ गिनवा रहा है। बिहार में हाल ही में जल-जीवन-हरियाली, नशामुक्ति, बाल-विवाह एवं दहेज प्रथा उन्मूलन के खिलाफ विश्व की सबसे बड़ी मानव शृंखला बनाई गई। आधे घंटे तक 4.27 करोड़ से अधिक लोग एक दूसरे का हाथ थामे खड़े हुए तो विश्व रिकार्ड बनना ही था। एक-दूसरे के हाथ थामे इन लोगों की संख्या कनाडा और ऑस्ट्रेलिया सहित विश्व के 192 देशों की आबादी से बड़ी थी। मानव शृंखला का मुख्य कार्यक्रम पटना के गांधी मैदान में हुआ, जहाँ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में इसका आरंभ किया गया। इसके लिए 15 हैलिकॉप्टर ऐरियल फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी में लगाए गए। मानव शृंखला को देखने के लिए लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड और गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया था। हो सकता है, यह बात लोगों को इतनी बड़ी न लगे, लेकिन ऐसे संकल्प बेहतर बिहार बनाने की कोशिश को नए आयाम देंगे।

यह अंक बिहार प्रदेश को समर्पित है, जिसने देश को लोकतंत्र का आइडिया दिया। बिहार आज आगे बढ़ रहा है, वहाँ के लोग, वहाँ की बेटियाँ, सभी नए आयाम गढ़ने की कोशिश कर रहे हैं और वह कोशिश कामयाबी की तरफ भी ले जाती है। बिहार का एक गाँव बेटियों के लिए ऐसी मिसाल पेश कर रहा है, जिस पर पूरा देश नाज कर सकता है। सहरसा जिले के सत्तरकटैया गाँव की 56 बालिकाएँ राष्ट्रीय खिलाड़ी हैं। मात्र तीन वर्षों में इन्होंने अपनी पहचान बनाई है। वालीबॉल में 15 बेटियों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपना जौहर दिखाया है। वहीं 24 एथलेटिक्स और कबड्डी में बिहार की तरफ से गोल्ड मेडल ला चुकी हैं। राष्ट्रीय स्तर पर भी खेलने की तैयारी में हैं। इसके अलावा कबड्डी में आठ और हैंडबॉल प्रतियोगिता में 9 बेटियों ने जगह बनाई है। पूजा और प्रीतम को तो गाँव के लोग पी. टी. उषा यानी उड़नपरी के नाम से पुकारते हैं। निश्चय ही यह उड़ान बिहार के विकास को पंख लगाने वाली है और इसे रंगेंगे कुछ अलग रंगों में। इस वर्ष बिहार में चुनाव होने वाले हैं। सत्ता का बदला हुआ रंग कैसा होगा देखेंगे। लेकिन यह भी सच है कि कुछ रंग हमेशा दिल के करीब रहते हैं, उसमें बदलाव की जरूरत हमेशा नहीं महसूस होती।

लंबी लड़ाई के बाद सेना में महिलाओं को बराबरी का हक मिलने का रास्ता साफ हो गया है। एक अभूतपूर्व फैसले में उच्चतम न्यायालय ने 17 फरवरी को केंद्र सरकार को आदेश दिया कि उन सभी महिला अफसरों को तीन माह में स्थाई कमीशन दिया जाए, जो यह विकल्प चुनना चाहती हैं। सैन्य बलों में लैंगिक भेदभाव खत्म करने पर जोर देते हुए अदालत ने कहा कि अब

मानसिकता बदलनी होगी। भले ही इसके लिए कुछ समय लग जाए, लेकिन इसके बड़े अच्छे नतीजे देखने को मिलेंगे। जैसे महिलाएँ पूर्णकालिक, कर्नल या उससे ऊपर रैंक पर पदस्थ होकर अहम भूमिका निभाएँगी। इसके अलावा ब्रिगेडियर, मेजर जनरल, लेफ्टिनेंट जनरल और सेना प्रमुख पद तक पहुँच सकेंगी और इससे बढ़कर महिलाएँ सेना में इंजीनियर-इन-चीफ, इंटेलिजेंस चीफ, सिग्नल प्रमुख हो सकती हैं।

समाज बेटियों को लेकर अपनी सोच बदल रहा है। फरीदाबाद बिल्लौच गाँव में बेटी का जन्म होने पर न केवल खुशी मनाई गई, बल्कि जच्चा-बच्चा का बैंड बाजे से स्वागत किया गया। 'मन की बात' में भी प्रधानमंत्री ने कहा कि बंदिशे तोड़ नई ऊँचाई पर पहुँच रही हैं बेटियाँ। उन्होंने भागीरथी अम्मा के बारे में भी सभी को बताया कि 'केरल के कोल्लम की भागीरथी अम्मा ने 105 साल की उम्र में न सिर्फ पढ़ाई शुरू की बल्कि परीक्षा 75 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण भी की।' सीखने की ललक और जिजीविषा को जिंदा रखने के लिए उन्होंने मुंबई के नेवी चिल्ड्रेन स्कूल में सातवीं की छात्रा काम्मा कार्तिकेयन की कहानी सुनाई। जिसने 12 वर्ष की उम्र में अमेरिका महाद्वीप में एंडिज पर्वत की सबसे ऊँची पर्वत माउंट अंकोका गुफा को फतह करने का कारनामा दिखाया है। कहने का अर्थ यह कि महिलाएँ धीरे-धीरे अपनी राहों के बीच आने वाले बंद दरवाजों को एक-एक कर खोलने में सफल हो रही हैं। 8 मार्च को 'महिला दिवस' मनाते हुए हम अपने इन उपलब्धियों पर इतराएँगे जरूर, लेकिन साथ ही आने वाली चुनौतियों का भी डटकर सामना करते हुए अभी नए रास्ते भी बनाएँगे।

जीवन में हमें आनंद का जो भी अनुभव होता है, वह हमें स्वयं से प्राप्त होता है। इस उत्सव में हम वह सभी छोड़कर शांत हो जाते हैं, जिसे हमने जकड़ा हुआ है। उत्सव चेतना का स्वभाव है और वह उत्सव, जो मौन से प्राप्त होता है, वही वास्तविक है। केवल शरीर तथा मन ही उत्सव नहीं मनाते, चेतना भी उत्सव मनाती है और उस स्थिति में जीवन रंगयुक्त हो जाता है। होली जैसे त्योहार लगभग सारी दुनिया में मौजूद हैं, जो बसंत में आने या होने की खुशी में मनाए जाते हैं। धीरे-धीरे मौसम गरम होता है और शिथिलता में गुनगुनाहट आती है। होली का वक्त मौसम के ऐसे बदलाव का होता है, जब लगभग आखिरी बार आग के पास होना सुखद लगता है। रचनात्मक और सृजन के लिए दोनों ही चीजें जरूरी हैं- उन्मुक्तता और अनुशासन। अनुशासन तो रोज ही हमारे सामाजिक जीवन में है, लेकिन उन्मुक्तता के लिए भी कोई वक्त होना चाहिए। होली वह वक्त है। लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि एक भीड़ से निकलकर होली की भीड़ में शामिल होना अलग तो है, लेकिन फिर भी भीड़ का हिस्सा होना है। जरूरत शायद यह है कि हम होली को अपने अंदाज में मना सकें, हम अपने बारे में सोच सकें, अपने राग-रंग की पहचान करें। दरअसल होली एक खिड़की खोलती है, जिसके जरिए हम अपनी विशिष्टता को देखने की शुरुआत कर सकते हैं। होली वह आईना है, जिसमें हमें अपनी जानी-पहचानी नहीं, बल्कि रंग-बिरंगी सूरत दिखती है।

बिहार में तीन दिन तक होली का त्योहार बहुत उत्साह से मनाया जाता है। इसे फगुआ के नाम से मनाया जाता है। 'फगुआ' में जोगीरा गाने का रिवाज है। कीचड़, धूल-मिट्टी, गीले रंग, सूखे रंग होली मिलन बिहार अपने विविध रंगों में डूबा रहता है, होली के एक हफ्ते पहले से। होली के रंग सच पूछिए तो प्रकृति की ही छाया हैं। ध्यान से देखें तो पृथ्वी

होली जैसे त्योहार लगभग सारी दुनिया में मौजूद हैं, जो बसंत में आने या होने की खुशी में मनाए जाते हैं। धीरे-धीरे मौसम गरम होता है और शिथिलता में गुनगुनाहट आती है। होली का वक्त मौसम के ऐसे बदलाव का होता है, जब लगभग आखिरी बार आग के पास होना सुखद लगता है।

का अपना फागुनी रूप है। फागुनी रस से गदबाई धरती सजती है, सँवरती है। भू का हृदय आनंदोल्लास से भर गा उठता है- कोयल के स्वर में, वन-प्रांत खड़खड़ा उठते हैं, आम की डाली महक उठती है, खेत झूम-झूम जाते हैं, भारत की धरती और भारत के लोगों का स्वभाव भी पानी सरीखा है। इस भारतभूमि पर अनेक जातियाँ और धर्मों के रंग घुले-मिले हैं। इस देश में आर्य आए, शक आए, हूण आए, कुषाण आए और इस देश के हो गए, एक हो गए। अनेक-अनेक जातियों और धर्मों से मिलकर इस देश की गौरवशाली परंपरा का निर्माण हुआ है। यह इसी तरह से है, जिस तरह विविध रंगों की बौछारों और पिचकारियों से होली का पर्व। कितना अच्छा हो, प्रेम के रंग में तरबतर होकर एक बार फिर धरती के आँगन में एकता का उत्सव मना सकें और मानवता नाच उठे।

मनुष्य और प्रकृति के त्योहारों के मनाए जाने में यही मौलिक फर्क है कि मनुष्य के द्वारा मनाए जाने वाले त्योहार मनते दीखते हैं। लेकिन प्रकृति अपने त्योहार बिना किसी दिखावे के मनाती है। उसका कतई आग्रह नहीं रहता कि कोई उसके त्योहार मनते देखे, कोई देखे कि उसके हर्ष की आतिशबाजियाँ कैसी हैं और कितना गुलाल फेंका जा रहा है। यह इसलिए कि प्रकृति ने अपने त्योहार मनाने के कभी कोई पैमाने नहीं बनाए। हम त्योहार मनाते कभी-कभी डर जाते हैं, क्योंकि हम प्रकृति की तरह मुक्त नहीं रह पाए। हम उन्मुक्त तभी होंगे, जब मुक्त होंगे। जब जीवन बेरंग हो जाए तो शांति और सुकून देने वाले रंगों से जिंदगी सँवारनी चाहिए। क्योंकि इंद्रधनुषी रंगों का महत्त्व आज भी वही है, जो कल था। रंग हमारे रोज के जीवन में विद्यमान हैं, जो हमें संतोष देता है, प्रेरणा देता है, जिदंगी देता है और सहयोग का एक वातावरण तैयार करता है। कहते हैं, रंग भावुक होते हैं, इसलिए हम रंगों को पसंद करते हैं और सबसे बढ़कर हम रंगों का त्योहार भी मनाते हैं। 'होली' बसंत में खिलने वाले रंग-बिरंगे वातावरण को और रंगीला बना देती है। खेतों में झूमते पीले-पीले सरसों के फूल की चूनर ओढ़े मौसम में हर दिल गुनगुनाने लगता है।

आप सभी को महिला दिवस एवं होली की शुभकामनाएँ।

संगीता सिन्हा

संगीता सिन्हा

प्रकृति और मानव

मृदुला सिन्हा
पूर्व राज्यपाल, गोवा

इस प्रश्न के चारों लघु प्रश्नों के जवाब बहुत ही गहरे चिंतन, सांसारिक व्यवहार एवं मनन से निकले हुए हैं और समाज को एक संदेश देने वाले भी। युधिष्ठिर का चिंतन निश्चय ही भारतीय दर्शन के मंथन से नवनीत निकालने जैसा है। भारत की संस्कृति में माता को बहुत गौरव का स्थान दिया गया है। इसलिए युधिष्ठिर का उत्तर है, ''माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है।''

अपने पिछले प्रश्न 'श्रेष्ठ पुरुष कौन हैं', का उत्तर युधिष्ठिर से सुनकर यक्ष प्रसन्न हुए। और उन्होंने अगला प्रश्न प्रकृति और मानव से संबंधित पूछा-

किंस्विद् गुरुतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्।
किंस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद् बहुतरं तृणात्।।

यक्ष ने पूछा- पृथ्वी से भारी क्या है? आकाश से भी ऊँचा क्या है? वायु से भी तेज चलने वाला क्या है? और तिनकों से भी अधिक बड़ा क्या है?

प्रकृति के अवयव पृथ्वी, आकाश, वायु तथा तिनकों के संबंध में यक्ष द्वारा पूछे गए चार लघु प्रश्नों से उनका आशय प्रकृति और मानव के बीच गुणों का एकात्म खोजना था। इस प्रश्न को सुनकर युधिष्ठिर भी प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा, ''माता गुरुतरा भूमेः खात् पितोच्चतरस्तथा। मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्।। अर्थात् माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है। पिता आकाश से भी ऊँचा है। मन वायु से भी तेज चलने वाला है और चिंता तिनकों से भी अधिक असंख्य एवं अनंत है।

चारों लघु प्रश्नों के जवाब बहुत ही गहरे चिंतन, सांसारिक व्यवहार एवं मनन से निकले हुए हैं और समाज को एक संदेश देने वाले भी। युधिष्ठिर का चिंतन निश्चय ही भारतीय दर्शन के मंथन से नवनीत निकालने जैसा है। भारत की संस्कृति में माता को बहुत गौरव का स्थान दिया गया है। इसलिए युधिष्ठिर का उत्तर है, ''माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है।'' यह बहुत बड़ी सोच है और माता ही नहीं, संपूर्ण समाज को ऊपर उठाने वाला है, जो माता का गौरव बढ़ाता है, वह अपने और समाज के लिए भी उपयोगी होता है। आदर्श बनता है।

युधिष्ठिर दूसरे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहते हैं कि ''पिता आकाश से भी ऊँचा है।'' पिता का स्थान माता के बाद ही आता है। लेकिन जिस तरह आकाश के बिना पृथ्वी नहीं, आकाश एक पृथ्वी की छत्रच्छाया के रूप में बहुत कुछ देता है, जो चाँद और तारों को भी सँभालकर रखता है। ग्रह-नक्षत्रों से आकाश भारतीय साहित्य में प्रकृति का बहुत बड़ा उपादेय है। उससे पिता की तुलना की गई है।

तीसरे लघु प्रश्न का उत्तर देते हुए युधिष्ठिर प्रकृति का अवयव वायु से मनुष्य के मन की तुलना करते हैं और कहते हैं कि मन वायु से भी तेज चलने वाला है। मैं समझती हूँ कि हर मनुष्य के मन में यह चिंतन, यह उत्तर ऐसे ही आएगा, क्योंकि हर मनुष्य का यह अनुभव होता है कि उसका मन इतना चंचल है। कहाँ-कहाँ भागता है। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा, ''मनः एव मनुष्य नाम, कारणम् बन्ध मोक्षयो।'' अर्थात् सांसारिक बंधन और मोक्ष मनुष्य के मन के कारण ही होता है। अर्जुन ने भी कहा-''चन्चलः ही मनः कृष्ण।'' अर्थात्, हे कृष्ण! मन बहुत अधिक चंचल है।

मन की गति वायु से तेज चलकर मनुष्य को चंचल बना देती है। चौथे प्रश्न का उत्तर चिंता, तिनकों से भी असंख्य एवं अनंत है। वैदिक काल से लेकर आजतक पेड़ तो गिने गए, नदियाँ गिन ली जाती हैं, पहाड़ गिने

जाते हैं, लेकिन तिनके नहीं गिने जाते हैं। असंभव है कार्य। और मनुष्य के अंदर जो चिंता होती है, उन्हें तिनकों से भी अधिक असंख्य और अनंत माना है युधिष्ठिर ने।

यक्ष प्रश्न का उत्तर मानव का अध्ययन किया हुआ व्यक्ति मानव के इतिहास का अध्ययन किया हुआ व्यक्ति मानव के वर्तमान को देखते हुए, उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए व्यक्ति ऐसे प्रश्नों का उत्तर दे सकता है। जो कल का सत्य है, आज का भी सत्य है और आने वाले कल के लिए भी यही सत्य रहेगा। इसीलिए भारत का इतिहास विलक्षण है। क्योंकि भारत का दर्शन मानवतामूलक है। मानव को हर परिस्थिति में अध्ययन करके उसके और प्रकृति के साथ-साथ रहने की संभावना तलाशते हुए आगे की राह बताने वाला दर्शन है। जब तक मानव है तब तक इस भारतीय दर्शन के सूत्रों पर जीता रहेगा। वह स्वयं दर्शन को समझे या न समझे।

भारतीय वाङ्मय में महाभारत का बहुत बड़ा स्थान है। जीवन के उतार-चढ़ाव को भोगते हुए जो राजा, प्रजा, गुरु, शिष्य एवं साधारण व्यक्ति के जो अनुभव हैं, चिंतन हैं, चिंतन से निकले हुए मानव जीवन के लिए नवनीत हैं। वे स्थायी हैं।

इस प्रकार का अनुभव रखने वाले व्यक्ति हमारे शास्त्रों में बहुत हैं। स्त्री और पुरुष ने भी समय-समय पर जीवन जीने की राह दिखाई है। लेकिन धर्मपुरुष युधिष्ठिर उन सबमें विशेष लगते हैं। यक्ष साधारण मानव नहीं हैं और उनके द्वारा पूछे प्रश्नों का जवाब सही-सही देना, यक्ष के ज्ञानानुकूल देना, यह साधारण व्यक्ति से संभव नहीं था। यह यक्ष भी जानते थे। इसलिए उन्होंने उनके चारों भाइयों को मूर्च्छित

भारतीय वाङ्मय में महाभारत का बहुत बड़ा स्थान है। जीवन के उतार-चढ़ाव को भोगते हुए जो राजा, प्रजा, गुरु, शिष्य एवं साधारण व्यक्ति के जो अनुभव हैं, चिंतन हैं, चिंतन से निकले हुए मानव जीवन के लिए नवनीत हैं। वे स्थायी हैं।

करके युधिष्ठिर को बुलाया और उनसे यह कठिन परंतु प्रकृति और मानव जीवन की कठिनाइयों को झेले हुए मनुष्य, सांसारिक जीवन के उतार-चढ़ाव को जिए हुए मनुष्य, युधिष्ठिर से पूछते हैं। युधिष्ठिर के जीवन में आने वाले समय का उन्हें आभास है। इसलिए उनके अनुभवजन्य ज्ञान से परिचित होते हैं। लेकिन सबसे बड़ी बात यह कि पाँच हजार वर्ष बीत जाने के बाद भी भारत में ज्ञानार्जन करने वाले लोग महाभारत को पढ़ते हैं, उनमें अनेकानेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग हैं। अनेकानेक ऋषि-मुनि और विद्वानों ने जीवन जीने की कला सिखाई है। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण और चर्चित 'गीता' के बाद यह यक्ष प्रश्न है। यक्ष प्रश्न के उत्तरों में कई बार ऐसा लगता है कि इसी प्रकार के विषय गीता में भी आए हैं। फिर मानना पड़ता है कि सूत्र तो एक ही है, भारतीय संस्कृति के सूत्र।

(प्रश्न यक्ष का, उत्तर युधिष्ठिर का– 9)

प्रेरक लघुकथा

धर्मप्राण नारी

महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों को दीक्षा देने से इनकार कर दिया था। यह उनके जीवन का संक्रमण का दौर था। उन्हें ऐसा लगा था कि जो सौ लोग मेरे पास दीक्षा लेने आते हैं, उनमें से निन्यानबे के आकर्षण का कारण स्वयं बुद्ध हैं, बुद्धत्व नहीं। तब फिर यह बात तो पुरुषों पर भी समान रूप से लागू होती है। फिर स्त्रियों को ही दीक्षा देने से क्यों इनकार करें। समाज के अधिकतर लोग धर्म-पुरुषों के चरण पूजते हैं, आचरण नहीं। जब बुद्ध के मन में यह ऊहापोह चल रहा था तभी वहाँ कृशा गौतमी नामक एक स्त्री आ गई। उसने बुद्ध को स्मरण कराया, ''जब आप महाउपवास करके कृशकाय हो गए थे और बुद्धत्व प्राप्त करके उठे ही थे तो आपको खीर की भेंट चढ़ानेवाली भी तो एक स्त्री ही थी। क्या हम स्त्रियों को बुद्धत्व नहीं मिलेगा? क्या स्त्री होना हमारा कसूर है? फिर आप कब आएँगे दोबारा हमारे लिए? स्त्री होने का ऐसा दंड हमें मिल रहा है। आपको संदेह है कि हम बुद्ध के लिए आई हैं, बुद्धत्व के लिए नहीं। तो मैं आपको बता दूँ कि हम बुद्धत्व के लिए ही आई हैं।''

बुद्ध ने तो पहले ही फैसला कर लिया था कि अब स्त्रियों के लिए भी बुद्धत्व के द्वार खोलने हैं। स्त्री-पुरुष में क्या भेद है। उन्होंने कृशा गौतमी को दीक्षा दे दी और स्त्रियों के लिए बुद्धत्व के द्वार खुल गए। बुद्ध के लगभग पाँच सदी बाद ऐसी ही एक घटना जीसस क्राइस्ट के जीवन में भी घटी। जब उन्हें सूली पर चढ़ाया गया तो वहाँ एकत्रित सारे पुरुष डर के मारे भाग गए थे। मगर कुछ स्त्रियाँ वहाँ उपस्थित थीं। उस युग की सर्वाधिक सुंदर स्त्री मेग्दलीन ने जीसस के शव को सूली से उतारा था। संभवतः जीसस के प्रारंभिक विचार भी स्त्रियों के बारे में बुद्ध के ही समान रहे हों। आज संसार के सभी धर्मों में नारी ही सर्वाधिक धर्मप्राण देखी जाती है।

बिहार की प्रबुद्ध धरती और आधी आबादी

उषाकिरण खान
वरिष्ठ लेखिका

सनातनी बौद्धों और मुस्लिमों के शासन काल में धीरे-धीरे स्त्रियाँ चारदीवारी में सिमटने लगीं। लेकिन अंग्रेजी शासन के वक्त फिर से अपने को पहचानना शुरू कर दिया। अंग्रेजी शासन के समय फिर से शिक्षा की आस जगी। शिक्षित स्त्रियाँ समझने लगीं कि देश पर विदेशी शासन लाद दिया गया है।

बिहार का इतिहास दरअसल भारत का इतिहास है। यह आर्यावर्त्त का इतिहास है। ऐतिहासिक रूप से स्त्रियों की सदा उच्च सत्ता आर्यावर्त्त में रही है। स्त्री पुरुष में विभेद नहीं था, परंतु मातृशक्ति होने के कारण बड़ी थी स्त्रियाँ। वैदिक काल में विवाह की संस्था बनने से पहले और बाद में स्त्री पुरुष के बराबर थी। उपनिषद् काल आते-आते स्त्रियाँ गृहोपयोगी क्रियाकलापों में लग गई, परंतु शिक्षित होने की कोई रोक न थी। बौद्ध काल में तथा जैल काल में स्त्रियाँ पुरुषों की तरह गृह त्याग का अधिकार रखती थीं। गृह त्याग शिक्षा और ज्ञान के लिए था।

सनातनी बौद्धों और मुस्लिमों के शासन काल में धीरे-धीरे स्त्रियाँ चारदीवारी में सिमटने लगीं। लेकिन अंग्रेजी शासन के वक्त फिर से अपने को पहचानना शुरू कर दिया। अंग्रेजी शासन के समय फिर से शिक्षा की आस जगी। शिक्षित स्त्रियाँ समझने लगीं कि देश पर विदेशी शासन लाद दिया गया है। देश-विदेश पढ़ने तथा नौकरी करने वाले लोगों ने यहाँ रहने वाले नेताओं के कंधे से कंधा मिलाकर काम किया स्त्रियों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की।

स्वतंत्रता आंदोलन का सन् 1942 सबसे अहम पड़ाव है, जिसने अंग्रेजी सत्ता के ताबूत में आखिरी कील जड़ी। उसे महाक्रांति की संज्ञा दी गई।

सन् 1942 ई0 की महाक्रांति में भी बिहार की महिलाओं ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। क्रांति 9 अगस्त को विद्यार्थियों की हड़तालों के साथ शुरू हुई। पटना-मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों के साथ मेडिकल-कॉलेज-अस्पताल की परिचारिकाओं ने भी हड़ताल की। पश्चात् देशरत्न राजेन्द्र बाबू के बीच-बचाव से उनकी हड़ताल समाप्त हुई। पटना में महिला-चर्खा क्लब (अब 'महिला-चर्खा-समिति') की बहनों ने अगस्त-क्रांति की ज्वाला को धधकाने और उसे व्यापक बनाने का काम किया। 9 अगस्त को उन्होंने महिलाओं का एक विराट् जुलूस पटना में निकाला। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की बहन श्रीमती भगवती देवी की अध्यक्षता में महिलाओं की एक सभा हुई, जिसमें श्रीमती सुन्दरी देवी, श्रीमती रामप्यारी देवी तथा अन्य महिलाओं के भाषण हुए। सभा में सरकारी कर्मचारियों से अपनी नौकरी और वकीलों से अपनी वकालत छोड़ने तथा जनता से सरकारी दमन का दृढ़तापूर्वक सामना करने की अपील की गयी। फिर12 अगस्त को कई जुलूस पटना नगर में निकाले गए और सैंकड़ों महिलाएँ उनमें शामिल हुईं। श्रीमती धर्मशीला लाल, बार-एट-लॉ भी जुलूस में शामिल हुई और गिरफ्तार की गयी। बिहार के अन्य प्रमुख नगरों में भी महिलाओं ने अगस्त-क्रांति में भाग लिया। इन सिलसिले में मानभूमि जिले के पुरुलिया नगर में कुछ महिलाएँ गिरफ्तार हुईं। पुरुलिया के शिल्प-आश्रम को पुलिस ने जब्त कर लिया और उसमें रहने वाले राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के साथ श्रीमती लावण्यप्रभा घोष और उनकी सुपुत्री कमला घोष को भी गिरफ्तार किया ।

हजारीबाग जिले में स्थानीय नेताओं की गिरफ्तारी के बाद अगस्त-क्रांति की बागडोर श्रीमती सरस्वती देवी

ने सँभाली। 11 अगस्त की हजारीबाग नगर में एक विराट् जुलूस उनके नेतृत्व में निकाला गया। उसी दिन संध्या में वे गिरफ्तार कर ली गयीं और उन्हें भागलपुर भेज दिया गया । भागलपुर में अगस्त-क्रांति का नेतृत्व विद्यार्थी कर रहे थे। 12 अगस्त को जब श्रीमती सरस्वती देवी एक अन्य महिला कैदी के साथ हजारीबाग से भागलपुर केन्द्रीय कारागार में लाई जा रही थी, तब विद्यार्थियों के एक जत्थे ने उन्हें पुलिस की हिरासत से छीन लिया। उसी दिन लाजपत-पार्क में विद्यार्थियों की एक सभा हुई, जिसमें सरस्वती देवी के जोशीले भाषण हुए। 14 अगस्त को वे पुनः गिरफ्तार कर ली गयीं। उधर भागलपुर जिले के बिहपुर-क्षेत्र की कांग्रेस-कार्यकर्त्री श्रीमती माया देवी ने सरकार को परेशान कर रखा था। पुलिस ने जब उन्हें गिरफ्तार किया, तब जनता ने इसके विरुद्ध जुलूस निकाला और माया देवी को पुलिस की हिरासत से छुड़ाना चाहा। इसपर पुलिस ने गोली चलायी, जिसके फलस्वरूप अनेक लोग मरे। इसी प्रकार, सारन (छपरा) जिले में सरकार के विरुद्ध जो हड़तालें और प्रदर्शन हुए, उनमें महिलाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। रेलवे स्टेशनों, डाकघरों आदि पर आक्रमण करने के कार्यक्रमों में भी इस जिले की महिलाओं ने भाग लिया। 15 अगस्त को छपरा-टाउन-हॉल में एक विराट् सभा का आयोजन हुआ, जिसकी अध्यक्षता एक महिला शांति देवी ने की। अपने भाषण में शांति देवी ने छपरा के नागरिकों से अगस्त-क्रांति की आग को जलाए रखने के लिए अपील की।

फिर मुंगेर जिले की महिलाओं ने भी अगस्त-क्रांति में यथायोग्य हिस्सा लिया। वैजनाथ-हाई-स्कूल (मुंगेर) की छात्राओं ने इस सिलसिले में महत्त्वपूर्ण काम किया-जुलूस निकालकर और घर-घर जाकर अगस्त-क्रांति का संदेश प्रसारित किया। अगस्त-क्रांति के महायज्ञ से इस जिले ने अपने कई सपूतों और ललनाओं की बलि चढ़ायी। चौथम थाने के अंतर्गत रुहियार गाँव के लोगों पर गोरी फौज के सिपाहियों ने अमानुषिक अत्याचार किए। उन्होंने 2 सितम्बर को इस गाँव के लोगों पर भयंकर गोली वर्षा की, जिसके फलस्वरूप कई महिलाएँ और बच्चे शहीद हुए। श्रीमती हुंकेरी तेलिन अपनी तीन साल की बच्ची और सात साल के बच्चे के साथ तथा श्रीमती सुरनी देवी अपने तीन साल के बच्चे के साथ इस गोलीबारी का शिकार बनीं। इनके अतिरिक्त श्रीमती हकनी और श्रीमती संपतिया अपनी एक लड़की तूरी के साथ गोरी फौज की गोली खाकर शहीद हुईं।

गोरे सिपाहियों ने इस क्रांति को दबाने के लिए ऐसे-ऐसे घृणित अत्याचार किए, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनका सबसे घृणित कार्य था- महिलाओं पर बलात्कार करना। ऐसी अनगिनत घटनाएँ बिहार में हुईं और हमारी अनगिनत ललनाएँ गोरे सिपाहियों की पशुता (कामुकता) का शिकार बनीं। बिहार के कुछ हिस्सों में क्रांति की आग वर्षों तक जली रही और अँगरेजी सरकार के जुल्म भी वहाँ होते रहे। अतः, बिहार की महिलाओं पर ढाये गये जुल्मों की कहानी अनन्त है, अकथनीय है। बिहार की महिलाओं ने अँगरेजी सरकार के इन सारे जुल्मों, अत्याचारों का वीरतापूर्वक मुकाबला किया और इस प्रकार देश की स्वतंत्रता के लिए एक बड़ी कीमत चुकायी। 'पिछड़े हुए' बिहार की 'पिछड़ी हुई' महिलाओं का स्वतंत्रता-संग्राम में जो सहयोग रहा, उसका मूल्यांकन भावी इतिहासकारों को करना है। केवल इतना

देश की आजादी के समय स्त्रियों को इकट्ठा करने में प्रभावती जी की अहम भूमिका थी। अपने पति की अनुगामिनी के रूप में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की पत्नी श्रीमती राजवंशी देवी तो थीं, पर प्रभावती ने जनजागरण का कार्य किया। प्रभावती जी के समकक्ष किशोरी देवी, शकुन्तला देवी तथा सुंदरी देवी थीं। श्रीमती सरस्वती देवी, रामरती देवी, सुनीति देवी एवं तारारानी श्रीवास्तव का साथ भी इन्हें मिला।

कह सकते हैं कि देश की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने जो कुछ किया, वह बिहार का ही नहीं, भारत का भी मस्तक ऊँचा रखने के लिए पर्याप्त है।

देश की आजादी के समय स्त्रियों को इकट्ठा करने में प्रभावती जी की अहम भूमिका थी। अपने पति की अनुगामिनी के रूप में देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की पत्नी श्रीमती राजवंशी देवी तो थीं, पर प्रभावती ने जनजागरण का कार्य किया। प्रभावती जी के समकक्ष किशोरी देवी, शकुन्तला देवी तथा सुंदरी देवी थीं। श्रीमती सरस्वती देवी, रामरती देवी, सुनीति देवी एवं तारारानी श्रीवास्तव का साथ भी इन्हें मिला।

दलित महिला श्यामा कुमारी पासवान एम.एल.ए तक बन कर सेवा कर सकीं। श्रीमती राम दुलारी सिन्हा प्रखर स्वतंत्रता सेनानी की पुत्री थी। वे एम.एल.ए., एम.पी. हुई तथा माननीय राज्यपाल के पद को भी सुशोभित किया। रामदुलारी सिन्हा केरल की राज्यपाल हुईं।

कालांतर में बिहार की प्रखर सांसद तारकेश्वरी सिन्हा की ख्याति खूब हुई। तारकेश्वरी सिन्हा साहसी और निर्भय विदुषी थीं। एम.पी., एम.एल.ए. महिलाओं की भागीदारी सघन होने लगी। आधुनिक समय में राबड़ी देवी ने सात वर्षों तक शासन की बागडोर मुख्यमंत्री की हैसियत से संभाली।

हमारे समय की पहली बिहारी महिला राष्ट्रीय समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा हुईं। वे हैं श्रीमती मृदुला सिन्हा। उन्होंने गोवा की राज्यपाल का पद तक सँभाला। श्रीमती सुखदा पाण्डेय शैक्षणिक रूप से सबल हो पटना विश्वविद्यालय के मगध महिला कॉलेज की प्रिंसिपल हुईं तथा राज्य की कला संस्कृति मंत्री तक हुईं।

बिहार कला साहित्य से भी परिपूर्ण है। मिथिला कला में अबतक छः महिलाओं को पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है। स्व. कुमुद शर्मा एक सुविख्यात कलाकार रही हैं। लोकगीत गायिका पदभावी विन्ध्यवासिनी देवी तथा पद्मभूषण शारदा सिन्हा की मधुर आवाज घर-घर में व्याप्त है।

साहित्याकाश भी यहाँ का सूना नहीं है। आप प्रकाशवती नारायण से शुरू कर शांता सिन्हा, बिन्दु सिन्हा, निरोज सिन्हा, विनीता अग्रवाल के अलावा आज की साहित्यकार श्रीमती मृदुला सिन्हा, ऋता शुक्ला तथा उषाकिरण खान का नाम आदर से ले सकते हैं ।

कला-कौशल, साहित्य संगीत में नाम अधिक है। बिहार अपनी महिलाओं पर गौरव कर सकता है।

संपर्क : 9334391006

मेरा गाँव तब और अब

डॉ. रामकृपाल सिन्हा
पूर्व केंद्रीय मंत्री

सन् 1870 के बाद उत्तर बिहार में रेलगाड़ियों का जाल बिछने लगा। अंग्रेजी शासन काल में सड़कों की हालत ठीक की जाने लगी। पक्की सड़क और नदियों पर लोहे के पुल बिछने लगे।

बागमती नदी की गोद में बसा है मेरा गाँव 'मटिहानी'। यह जिला मुजफ्फरपुर से सीतामढ़ी जाने वाली सड़क से लगभग 30-32 किलोमीटर उत्तर में है। इसके पश्चिम में बसंत, भरत पट्टी, दक्षिण में शाही जीवर, बनौली एकमा और पूरब में बेरौना-फतेहपुर इत्यादि गाँव हैं। गाँव के उत्तर में बेनीपुर और भरथुआ चौड़ है। यह औराई प्रखंड के अंतर्गत स्थित है।

मेरे गाँव में बहुसंख्यक आबादी भूमिहार-ब्राह्मणों की है। भूमिहार नाम पिछले सौ वर्षों में ही ज्यादा प्रचलित हुआ है। 1860-80 के सर्वे या रजिस्ट्री के दस्तावेजों में लोग पश्चिमा ब्राह्मण ही लिखते थे। सभी ब्राह्मण एक ही वंश के हैं, महोवरिया कश्यप गोत्रीय। इस गाँव से उत्तर बिहार के कई गाँवों में बस गए हैं। गाँव से सटे पूरब एक छोटा-सा टोला है, जिसे बेरौना कहते हैं। वहाँ के लोग भी यहीं से जाकर बसे हैं। एक गाँव सूरसंड (सीतामढ़ी जिला) के पास रघरपुरा बसा है। कुछ लोग मधुबनी जिले में भी जाकर बसे हैं। एक गाँव सरहसा के पास भी है। भारत के मुस्लिम शासकों के अत्याचारों से अपने जान-मान की रक्षा के लिए कई ब्राह्मण कुनबे समय-समय पर उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश से भाग कर बिहार में बसते रहे। आज उनमें ज्यादातर लोग 'भूमिहार' कहलाते हैं।

सन् 1870 के बाद उत्तर बिहार में रेलगाड़ियों का जाल बिछने लगा। अंग्रेजी शासन काल में सड़कों की हालत ठीक की जाने लगी। पक्की सड़क और नदियों पर लोहे के पुल बिछने लगे। यातायात और व्यापार बढ़ने लगा। अंग्रेजी राज की केंद्रीय सत्ता कलकत्ते में थी। वहाँ से अंग्रेजी शिक्षा एवं सत्ता का विस्तार होने लगा। अंग्रेजी और देशी भाषाओं में अखबार भी छपने लगे। इन सब परिवर्तनों का इस छोटे से गाँव पर भी असर होने लगा। 1901 तक गाँव में शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं था। एक मौलवी साहब के पास कुछ लोग फारसी पढ़ा करते थे। सभी सरकारी दफ्तरों में फारसी का ही बोलबाला था। अब धीरे-धीरे अंग्रेजी भी पैर फैलाने लगी थी। हिंदी की पढ़ाई भी कहीं-कहीं होती थी। चिट्ठी आदि कैथी लिपि में लिखी जाती थी।

मैथिल पुरोहित सभी कारोबार मिथिलाक्षर में करते थे। देवनागरी और हिंदी केवल रामचरित मानस, सुखसागर आदि धार्मिक ग्रंथों में ही उपलब्ध थी। 1901 के बाद राष्ट्रीय चेतना के प्रचार में आर्य समाज का भी बहुत योगदान रहा। इस गाँव से भी कुछ लोग कलकत्ता हाईकोर्ट में अपने मुकदमों की पैरवी के लिए जाते थे और वहाँ से आकर देश-दुनिया में होने वाले परिवर्तनों की चर्चा करते थे।

सन् 1912 तक बिहार बंगाल प्रदेश के साथ था। बाद में बिहार और उड़ीसा अलग राज्य इकाई का अस्तित्व आया। बिहार का केंद्र पटना बना। जिला बोर्ड को शिक्षा, स्वास्थ्य और सड़क की जिम्मेदारी दी जाने लगी। 'मटिहानी' गाँव में भी एक प्राथमिक स्कूल खुला। अब तो इस गाँव में दो मिडिल स्कूल और एक हाईस्कूल है। सन् 1951 में गाँव के बीचोबीच एक पुस्तकालय भवन बना। वह भवन अब रखरखाव के अभाव में काल के गाल में समा चुका है।

सन् 1953 में गाँव के सामूहिक प्रयास और बाबू महावीर सिंह के आर्थिक सहयोग से हाईस्कूल बना, अच्छा चल रहा है। सभी स्कूलों की सरकारी व्यवस्था से शिक्षा व्यवस्था में अच्छी प्रगति हुई है। लड़कियों और गरीब लोगों के बच्चों की पढ़ाई में सुविधा हुई। आज इस गाँव की अनेक बेटियाँ शिक्षिका हैं। यहाँ के मिडिल स्कूल में अधिकांश शिक्षिकाएँ तो गाँव की बहुएँ ही हैं।

स्वास्थ्य की देखरेख के लिए पहले कोई सरकारी व्यवस्था नहीं थी। रुन्नीसैदपुर, औराई और रामपुर हरि में जिला बोर्ड का आयुर्वेदिक औषधालय था। मटिहानी गाँव में बाबू रामगुलाम सिंह के घर पर एक नन्हूक मिश्र वैद्य थे। वे गाँव और उसके पास के बीमारों की देखरेख करते थे। पानी पीने के लिए हर टोले में पक्का कुआँ था। इस गाँव में 1940 तक बारह कुएँ इस्तेमाल में थे। हैजे का प्रकोप होता रहता था। लोग बड़ी संख्या में काल-कवलित हो जाते थे। मलेरिया दूसरा भयानक रोग था। द्वितीय महायुद्ध के बाद 1944-46 में उत्तर बिहार में भयानक मलेरिया फैला था। सरकार ने मलेरिया केंद्र बनवाए थे। कुनैन की गोलियाँ बाँटी जाती थीं। मटिहानी ऐसे छोटे से गाँव में भी लगभग 40-50 लोग मलेरिया से मरे थे। औरतों के भोजन, रहन-सहन और स्वास्थ्य का कोई ध्यान नहीं रखा जाता था। प्रसव ग्रामीण परंपरा से सेवादारनी की देखरेख में कराया जाता था। अधिकांश बच्चे छोटी उमर में मर जाते थे। प्रसव के समय और प्रसवजनित रोगों से मरने वाली महिलाओं की संख्या अधिक थी। उन दिनों गाँव में महिला डॉक्टर के नाम से लोग अनभिज्ञ थे।

मुजफ्फरपुर नगर से सीतामढ़ी तक की सड़क जिला बोर्ड की देख-रेख में थी। एक नंबर पर ईंटें बिछी थीं। बैलगाड़ियाँ केवल तीन नंबर पर चल सकती थीं। गाँव की सड़कों को कोई देखने वाला नहीं था। पास के खेत वाले या मकान वाले अपने बगल की सड़क का निजी इस्तेमाल लाठी के बल पर करते थे।

आम लोगों को पैदल चलने के सिवा और कोई साधन नहीं था। किसान बैलगाड़ी का इस्तेमाल करते थे। मटिहानी गाँव में 15-20 अच्छे घोड़े होते थे। इनका इस्तेमाल शादी-ब्याह में होता था। मगर मुख्य उद्देश्य घोड़ा पालकर सीतामढ़ी, कांट-ब्रह्मपुर, सोनपुर मेले में बेचकर पैसा कमाना होता था। 1940 के बाद बाबू महावीर सिंह, रामगोपाल सिंह, रामनंदन सिंह और राजनंदन सिंह ने कुछ दिनों के लिए हाथी भी पाल रखे थे। शादी, ब्याह में या बहू-बेटियों को नैहर-ससुराल जाने में पालकी, खड़खड़िया या बैलगाड़ी ही उपयोग में थी। गाँव में चार-पाँच पालकी व खड़खड़ियाँ थीं और खेतहर मजदूर अपने मजबूत कंधों पर पालकी और खड़खड़िया लेकर तेजी से दौड़ते थे। बरसात के दिनों में नाव या डोंगी का खूब इस्तेमाल होता था। बाढ़ में व्यापारी भी नाव से ही सामान ढोते और गाड़ियों का इस्तेमाल करते थे। 1940-45 तक तो गाँव में किसी के पास साइकिल भी नहीं थी।

आग अपने चूल्हे में, बोरसी या घूरा में सँभालकर रखी जाती थी। माचिस का प्रचलन नहीं था, न कोई बीड़ी, सिगरेट पीता था। कुछ महिलाएँ हुक्का पीती थीं। पुरुषों में कई लोग भाँग खाते या पीते थे। ताड़, खजूर से निकाली गई ताड़ी ऊँची जाति के लिए वर्जित थी। शराब कोई छूता नहीं था। मांस-मछली खाने वाले थे, लेकिन मुर्गा, अंडा वर्जित था। वैष्णव शाक्त या शैव एक ही परिवार में थे। कुछ लोग आर्य समाज के प्रभाव में आकर छुआछूत को तोड़ने लगे। ऐसे लोगों को चौके में खाना खिलाना बंद कर दिया गया था। उनका भोजन पात्र अलग रहता और आँगन में खाना दिया जाता था। बाद में लोगों के विचार में बदलाव आया और धीरे-धीरे लोग इस तरह की 'वारना' (विलगाना) छोड़ते चले गए।

स्वराज्य आंदोलन और खादी का प्रचार 1922 के बाद काफी बढ़ा। 1937 में बिहार में डॉ. श्रीकृष्ण सिंह प्रधानमंत्री (मुख्यमंत्री का प्रयोग बाद में शुरू हुआ) तो खादी और हरिजन उद्धार, नारी शिक्षा इत्यादि में युवा वर्ग का उत्साह बढ़ा।

1934 के 14 जनवरी को उत्तर बिहार में भयंकर भूकंप का झटका लगा। मटिहानी के अधिकांश लोगों के घर कच्ची दीवाल और खपरैल के थे। फूस के घर पर कम असर पड़ा। कई आँगन और खेतों में धरती फट गई। बालूमय फव्वारे फूट गए। फसल नष्ट हुई। खेत बालू से भर गए। नदी की धार उथली हो गई। ऊँची जमीन नीची और नीची जमीन ऊँची हो गई। 1934 में महात्मा गाँधी भरथुआ चौर देखने आए। जलभराव से किसानों की दुर्दशा होती थी। उनके हस्तक्षेप से बिहार सरकार ने बेनीपुर से कटरागढ़ तक नहर निकालने का निर्णय लिया।

मटिहानी गाँव के श्री योगेन्द्र सिंह तथा सूर्यदेव सिंह ने आगे बढ़कर गांधी के अभियान में साथ दिया। जब वेदौल में खादी केंद्र था, तो मटिहानी और आसपास के गाँव में घर-घर चर्खा पर सूत कातने, उसके बदले खादी वस्त्र लेने का आंदोलन खड़ा हुआ। एक समय था, जब मटिहानी में लगभग एक सौ कत्तिनें थीं। अब सब समाप्त है।

इस गाँव में जीविका का मूल साधन खेती और उससे जुड़े कार्य थे। पशुपालन और दूध के लिए भैंस का पालन भी महत्त्वपूर्ण था। गरीब परिवार बकरी पालते थे। सोनार के दरवाजे पर सोना-चाँदी पीटने की आवाज आती थी। अब वह हुनर और हथौड़े गायब हैं। कुम्हार

स्वास्थ्य की देखरेख के लिए पहले कोई सरकारी व्यवस्था नहीं थी। रुन्नीसैदपुर, औराई और रामपुर हरि में जिला बोर्ड का आयुर्वेदिक औषधालय था। मटिहानी गाँव में बाबू रामगुलाम सिंह के घर पर एक नन्हूक मिश्र वैद्य थे। वे गाँव और उसके पास के बीमारों की देखरेख करते थे। पानी पीने के लिए हर टोले में पक्का कुआँ था। इस गाँव में 1940 तक बारह कुएँ इस्तेमाल में थे। हैजे का प्रकोप होता रहता था। लोग बड़ी संख्या में काल-कवलित हो जाते थे। मलेरिया दूसरा भयानक रोग था। द्वितीय महायुद्ध के बाद 1944-46 में उत्तर बिहार में भयानक मलेरिया फैला था। सरकार ने मलेरिया केंद्र बनवाए थे। कुनैन की गोलियाँ बाँटी जाती थीं। मटिहानी ऐसे छोटे से गाँव में भी लगभग 40-50 लोग मलेरिया से मरे थे।

सारे गाँव तथा पड़ोसी गाँवों में भी मिट्टी के बरतन देते थे, अब तो सब मजदूर बन गए हैं। बनियों के घरों से चीउडा और मूढी-लाई की गंध आती थी। दलित परिवार के लोग मजदूरी करते थे। मरे पशुओं के खाल और चमड़े पर उनका अधिकार था। पूजा, शादी, ब्याह, जनेऊ ऐसे समारोहों के मौके पर ढोल-पीपही बजाते थे और उससे भी उनकी कमाई होती थी। महिलाएँ प्रसवकाल में मदद करके इनाम पाती थीं।

मुशहर समाज में खेत-मजदूरी प्रमुख धंधा था। कुछ लोग कहारी जानते थे। पालकी, खड़खड़िया ढोकर लगन के समय अतिरिक्त आमदनी करते थे। मल्लाहों के कई हुनर थे। बाँस की टोकरी, छीटी बनाना, फूस बाँस का घर खड़ा करना। मछली पकड़ने के लिए कोंती, घना, जाल बनाना। हल जोतना, कुदाल चलाना, खुरपी, हँसुआ से घास निकालना गाँव के सभी मजदूर जानते थे। महिलाएँ हल नहीं चलातीं, पर वह सभी काम ढेंकी, मूसल, ओखल, जाँता, रोटी, चावल, तरकारी बनाना खेत के कटनी, कमैनी, अलुआ कोडना करती। पशुपालन का काम सभी जाति के लोग करते थे। अब ये सभी काम या तो बंद हो गए या भी मशीन से तैयार किए जाने लगे। पहले जहाँ खेती बैलों और मजदूरों पर निर्भर थी, अब खेती का सभी कार्य मशीनों द्वारा किया जाने लगा।

तब भोर के चार बजे गाँव के कुछ बुजुर्गों द्वारा पराती गाई जाती थी, जिसमें विद्यापति, तुलसी, कबीर आदि कवियों के भजन गाए जाते थे, वे सब अब समाप्तप्राय हैं।

1950 से पूर्व बहुत कम लोग गाँव छोड़कर शहरों में मजदूरी करने जाते थे। बाद में कई मल्लाह नौजवान बाँस के काम के लिए पूर्णिया और आसाम जाने लगे। गाँव में एक भी सरकारी कर्मचारी नहीं था। वेतन भोगियों में प्राथमिक स्कूल के तीन-चार शिक्षक और एक डाक पीउन मात्र थे।

अब सत्तर दशकों बाद मेरे गाँव की तस्वीर बिल्कुल बदल गई है। गाँव में हाईस्कूल, मिडिल स्कूल सहित चार विद्यालय हो गए। दलित एवं पिछड़ी जातियों के बच्चे और महिलाएँ भी अच्छे कपड़े और आभूषण पहनने लगी हैं। सभी जातियों के बच्चे स्कूल जाते हैं। उनको सरकार से साइकिल, कपड़े और किताबें मिलती हैं। अधिकांश घरों में अब रेडियो की जगह टेलीविजन ने ले ली है और अधिकांश लोग मोबाइल और इंटरनेट से भी जुड़ गए हैं। प्रायः सभी घरों में अब गैस का चुल्हा जल रहा है। हर घर में बिजली पहुँच गई है।

पहले जिन जातियों के लोग कुछ जातियों का सम्मान करते हुए उनके साथ कुरसी या चौकी-खटिया पर एक साथ नहीं बैठते थे, वे अब बराबरी में संग-साथ उठने-बैठने लगे हैं। पीने के पानी के लिए जहाँ पहले कुएँ पर निर्भर रहते थे, अब गाँव में सरकार द्वारा पाइपलाइन बिछा दी गई है। पहले गाँव में कच्ची सड़कें थीं, अब गलियों में भी पक्की सड़कें हो गई हैं। पहले गाँव में कुछ लोगों के ही मकान पक्के थे, अब प्रायः सभी घर पक्के बन गए हैं। अब प्रायः सभी घरों में बाइक, मोटरसाइकिल एवं अन्य गाड़ियाँ हैं।

ग्राम पंचायत में भी सभी जातियों एवं वर्गों का प्रतिनिधित्व है। अब मेरे गाँव में शिक्षा, सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता के कारण सभी वर्गों में समृद्धि तो आई है, वहीं दूसरी तरफ युवा वर्ग अपने परंपरागत कार्यों से अलग होकर शिक्षा और रोजगार के लिए बड़े शहरों और महानगरों की ओर पलायन भी कर रहे हैं। जिसके कारण खेती-किसानी दिनोदिन महँगी एवं मुश्किल होती जा रही है। ©पाँ.स्तं.

बिहार बजट

विकेंद्रित विकास का बजट

नए वित्तीय वर्ष के लिए पेश राज्य का बजट संतुलित व विकासोन्मुखी होने के साथ ही पर्यावरण संकट को ध्यान में रखते हुए हरियाली बढ़ाने पर केंद्रित है। यह पहली बार है, जब बजट में तकरीबन सभी विभागों की योजनाओं में हरित आवरण बढ़ाने के लिए कुछ-न-कुछ विशेष प्रावधान की कोशिश झलकती है। साथ ही इसमें जिस तरह कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, कौशल विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, उद्योग, ग्रामीण विकास और आधारभूत संरचनाओं में वृद्धि समेत अन्य सभी क्षेत्रों को समदर्शी तरीके से महत्त्व दिया गया है, इससे पता चलता है कि नीतीश सरकार की नीतियों के अनुरूप यह समावेशी और विकेंद्रित विकास की ओर ले जाने वाला बजट है।

यही कारण है कि कई अर्थशास्त्री इसकी सराहना कर रहे हैं। इससे पूर्व सोमवार को बजट सत्र के पहले दिन राज्य विधानसभा में पेश किया गया 2019-20 का आर्थिक सर्वेक्षण भी उत्साह बढ़ाने वाला है। निश्चय ही यह गर्व की बात है कि बिहार लगातार तीसरे वर्ष देश की विकास दर से आगे रहने वाला राज्य बन गया है। सीमित संसाधनों के बाद भी यदि एक दशक में बिहार के अंदर लगातार सामाजिक और आर्थिक विकास देखने को मिल रहा है तो यह नीतीश सरकार की प्रबल इच्छाशक्ति व कुशल प्रबंधन का परिचायक है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि सभी क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन जारी रहने के साथ ही लोगों की आय बढ़ रही है। आर्थिक सर्वेक्षण का यह परिणाम उत्साहजनक है कि पिछले एक दशक के दौरान प्रदेश में युवाओं के लिए रोजगार व स्वरोजगार के नए-नए अवसर बढ़े हैं। राज्य सरकार ने शिक्षा, ज्ञान व कौशल विकास के माध्यम से बिहार को विकसित प्रदेश बनाने का संकल्प लिया है, जो उसके दूरदर्शी होने का प्रमाण है। राज्यपाल फागू चौहान ने विधानमंडल के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए उचित ही कहा कि राज्य की नीतीश सरकार न्याय के साथ विकास के मूलमंत्र को अपनाते हुए सभी क्षेत्रों और वर्गों के उत्थान के लिए प्रयासरत है। आर्थिक सर्वेक्षण के परिणाम साबित करते हैं कि सरकार की समावेशी और विकेंद्रित विकास की नीति अब आकार लेने लगी है। उम्मीद की जानी चाहिए कि आर्थिक सर्वेक्षण के बाद मंगलवार को नए वित्तीय वर्ष के लिए विधानसभा में पेश राज्य का बजट बिहार को समस्त क्षेत्रों में उन्नति के पथ पर तेजी से अग्रसर करने में समर्थ हो सकेगा। उल्लेखनीय है कि हाल के वर्षों में बिहार की देश में छवि सुधरी है। लोगों को अपना भविष्य बेहतर दिखने लगा है।

शहर : साहित्य, संस्कृति, भाईचारे का

संजय पंकज
वरिष्ठ साहित्यकार

तोड़ने में नहीं जोड़ने में अपने आपको अर्थ-विस्तृत करता यह शहर सांप्रदायिक सौहार्द्र, सामाजिक समरसता और मानवीय संवेदनशीलता की अच्छी-भली, साफ-सुथरी, निष्कंटक राह पकड़ कर प्रेम की शिखरयात्रा पर बढ़ता-चढ़ता सतत चला जा रहा है। भाईचारा इसका प्रेमल संबल है।

किसी भी सभ्य समाज के सुसंस्कार का उन्नयन उसकी सांस्कृतिक गरिमा से होता है। संस्कृति व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की व्यापक पहचान है। संस्कृति का निर्माण कुछ दिनों या कुछेक सालों में नहीं होता है। यह तो बड़ी ही बारीकी के साथ निरंतर सजगता, संवेदनशीलता और सद्भावना से विकसित होती हुई चेतना को सकारात्मक दिशा देती है। संस्कृति मानवीय मूल्यों की सुरक्षा में सदा सचेष्ट, सतर्क, तत्पर और सतेज रहती है। संस्कृति की कोई स्थूल या शिथिल संरचना नहीं होती है, यह सूक्ष्मता से पल्लवित-पुष्पित होती हुई यथासमय प्रत्यक्ष रूप से संघटित हो जाती है। व्यक्ति के आचरण, समाज की सभ्यता और राष्ट्र के संवेदन-संभाषण में इसे सहज ही देखा-समझा जा सकता है। 'संस्कृत' का अर्थ होता है : संस्कार किया हुआ। यह संस्कार व्यक्ति की चेतना का होता है। चेतना की सहज गति 'संस्कृति' है ।

वैभवशाली बिहार की सांस्कृतिक राजधानी मुजफ्फरपुर साहित्य, संस्कृति और भाईचारे का प्यारा शहर है। यह शहर साहित्य, संगीत, कला की विराट विरासत को अपनी थाती बनाए आज भी सक्रिय रचनात्मकता और संवेदनशील आत्मीयता से जागरूक तथा जीवंत है। गहरी रागात्मकता लिए एक लंबी परंपरा है, जो रामायण काल, पौराणिक काल, ऐतिहासिक काल-तात्पर्य कि काल के बाद काल के अंतराल को पाटती वर्तमान समय में भी समर्थ, सक्षम और सार्थक है। समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाती विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में एक ही साथ कई कई पीढ़ियों की सक्रियता रचना-जगत् को आश्चर्यचकित करती आश्वस्त करती है कि संवेदना की शाश्वत यात्रा मनुष्यता की सुंदर मंजिल तक पहुँचती है। प्रेम, सद्भाव, स्नेह, सौहार्द जैसे आत्मिक सौंदर्य को अपनी निष्ठा में बसाए यह जनपद एक-दूसरे के दिल में धड़कता है। मानवीय मूल्यों को व्यापक जन-संवाद में उतारता यह शहर दिन-रात जगा हुआ रागात्मक अलख जगाता रहता है। अपने महान पूर्वजों की कीर्तिगाथा गाता यह मुजफ्फरपुर लीचियों की मिठास में घुला-मिला दूर-सुदूर तक प्रसरित होता रहता है। करुणा, अहिंसा, शक्ति और ज्ञानधाराओं से संपन्न यह क्षेत्र संपूर्ण संसार को अपने चिंतन, सृजन और संस्कार से आज भी आलोकित कर रहा है।

तोड़ने में नहीं जोड़ने में अपने आपको अर्थ-विस्तृत करता यह शहर सांप्रदायिक सौहार्द्र, सामाजिक समरसता और मानवीय संवेदनशीलता की अच्छी-भली, साफ-सुथरी, निष्कंटक राह पकड़ कर प्रेम की शिखरयात्रा पर बढ़ता-चढ़ता सतत चला जा रहा है। भाईचारा इसका प्रेमल संबल है। यहाँ मंदिरों में जानेवाले सिर्फ हिन्दू नहीं हैं, मजारों पर चादरपोशी करने वाले सिर्फ मुसलमान नहीं हैं, गुरुद्वारे में मत्था टेकने वाले सिर्फ सिक्ख नहीं हैं और गिरजाघरों में आत्मसाक्षात्कार-आत्मस्वीकृति करने वाले सिर्फ ईसाई नहीं हैं। हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई सही मायने में दिल खोलकर डंके की चोट पर भाई-भाई हैं। सर्वधर्म समभाव के खोखले नारों-सिद्धांतों से सर्वथा पृथक् यहाँ की हर सुबह

सर्वधर्म की ताजगी लिए और हर शाम समभाव की ज्योति जलाए आती है। ''मंदिरों की धुन, मस्जिदों की अजान, गुरुद्वारे की वाणी और गिरजाघरों की घंटियाँ जब समवेत स्वर में एकालाप लेती हैं तो साक्षात् ईश्वर पूरे वातावरण में अपनी दिव्यता के साथ होता है। यहाँ मंदिर के शंख से मस्जिद की अजान को कोई एतराज नहीं गुरुद्वारे के सबद-कीर्तन पर गिरजाघरों का क्रॉस जिस ज्योतिवलय से आलोकित हो उठता है, वह नानक, ईसा, मोहम्मद, बुद्ध, राम, कृष्ण, कबीर की आत्मा का होता है। जब भी समय आता है मस्जिद बढ़कर मंदिर के माथे तिलक लगाती है और मंदिर का कलश झुककर आदाब बजाता है। एतबार और उम्मीद लिये गुरुद्वारा और चर्च अलौकिक लय में डूब जैसे ही सम पर आते हैं, संपूर्ण परिवेश में सिर्फ आनंद और आनंद की लहरें ही ही होती हैं, बस जिसपर धरती, आसमान और दिशाएँ ताल देते हैं केवल। विराट् मानवीय पर्व का नजारा हरदिन जो होता है, उसे देखने चुपके आती हैं देवात्माएँ बरसा कर अपने आशीष आते-जाते जब भी कोई गले-गले मिलता है बस, वहाँ देह नहीं आत्मा होती है केवल।''

यहाँ कवि-सम्मेलन और मुशायरों की एक समृद्ध परंपरा है। शायद ही कोई कवि-सम्मेलन ऐसा हुआ हो, जिसमें उर्दू शायरी की छौंक नहीं और कोई मुशायरा ऐसा नहीं, जिसमें हिन्दी कविता की गमक नहीं रही हो। शायर और कवि दोनों अपनी अपनी मस्ती और हस्ती के साथ बस्ती-बस्ती में गीत-गजल और कविता-नज्म की साझा संवेदनशीलता लिए आते-जाते मानवीय मूल्यों की हिफाजत में आज भी अलख जगाते रहते हैं। कभी किसी को लगता ही नहीं कि दो जुबान वालों के बीच बैठे हुए हैं। कहने-सुनने से अलग हिन्दी-उर्दू कैसे सगी बहनें हैं, जिसे भी जानना-महसूसना हो, यहाँ की गोष्ठियों में आ जाए! यहाँ साहित्यिक अंजुमन में कैसे-कैसे फूल खिलते हैं, संस्कृति संगम में कैसी-कैसी खुशबू उड़ती हैं और प्रेम सागर में कैसे-कैसे रसज्ञ, प्रबुद्ध, गुणीजन गोते लगाते रहते हैं- यह वही बता सकते हैं, जो यहाँ के साहित्यिक आयोजनों सम्मिलित हुए हैं। हिन्दी, उर्दू, बँगला, पंजाबी, अंग्रेजी साहित्य के अनेक नामधारी विद्वान और लेखक यहाँ आते रहे हैं।

खड़ी बोली हिन्दी के प्रवर्तक बाबू अयोध्या प्रसाद खत्री मुजफ्फरपुर के ऐसे गौरवशाली हिन्दीसेवी थे, जिन्होंने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की उस धारणा को नकारते हुए कि 'खड़ी बोली में पद-रचना संभव नहीं', क्रमशः खड़ी बोली हिन्दी पद के दो संग्रहों को संपादित-प्रकाशित किया था। वे श्रेष्ठ और सुंदर साहित्य पढ़ने की प्रेरणा तो देते ही थे, साथ ही भाषा की शुद्धता पर भी पूरा बल देते थे। घूम-घूमकर अपने पैसों से व्यावसायिक प्रतिष्ठानों और दुकानों के अशुद्ध लिखे गए नामपट्ट को शुद्ध रूप प्रदान करते थे। इसी जनपद के देवकीनन्दन खत्री ऐसे लोकप्रिय उपन्यासकार हुए कि जिनकी प्रसिद्ध कृति 'चन्द्रकांता' तथा अन्य उपन्यासों को पढ़ने के लिए अहिन्दी भाषा-भाषियों ने हिन्दी सीखी। कलम के जादूगर श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी ऐसा यशस्वी लेखक-नाम है, जिसने साहित्य, संस्कृति, राजनीति और सामाजिक क्षेत्र में क्रांतिकारी काम किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छात्र जीवन में ही कूद पड़ने वाले बेनीपुरी जी का नौ वर्षों से ज्यादा समय जेल की काल-कोठरी में व्यतीत हुआ, मगर उनका अध्ययन और लेखन कभी बाधित नहीं हुआ। श्रेष्ठ गद्य लेखक के रूप में उन्होंने जो यश अर्जित किया, वह अतुलनीय है। उत्तर-छायावाद के अग्रणी कवि राम इकबाल सिंह राकेश ने अपनी काव्य-साधना से हिन्दी को समृद्ध और इस जनपद को गौरवान्वित किया। ग्राम्य चेतना के बड़े कवि थे वे। यहीं के हास्य रसावतार रामजीवन शर्मा जीवन लोकजीवन के यथार्थवादी एक ऐसे कवि थे, जो बहुत ही सहजता और सादगी से मर्मबेधी गहरी बातें कह देते थे। प्रयोगवादी कवि के रूप में सुख्यात अज्ञेय जी द्वारा संपादित सप्तक श्रृंखला के कवि मदन वात्स्यायन अपनी प्रयोगधर्मिता के लिए पूरे हिन्दी परिदृश्य पर समादृत हुए। शिल्प के अद्भुत प्रयोग से जीवनसंघर्ष को खड़ा करने का कौशल मदन वात्स्यायन की कविताओं का आकर्षण है। संस्कृत और हिन्दी के विद्वान प्राध्यापक डॉ. सुरेन्द्र नाथ दीक्षित सरलता और कर्मठता की प्रतिमूर्ति थे। बौद्ध साहित्य के अध्येता, राम आदर्श के व्याख्याता दीक्षितजी आर्यसमाजी होने के बावजूद सनातन संस्कृति और साहित्य में विश्वास रखते थे और अपने शोध-आलेखों में उसे प्रतिपादित करते रहते थे।

हिन्दी गीत-कविता के शिखर पुरुष आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री संस्कृत की समृद्धि पर विस्तृत हुए एक ऐसे हिन्दी भाषा-साहित्य साधक थे, जिन्होंने लेखकों की कई पीढ़ियों का निर्माण किया। सात सर्गों का महाकाव्य 'राधा' और उपन्यास 'कालिदास' आचार्यश्री की कालजयी कृतियाँ हैं, जिसके आलोक में केवल जीवन तत्व से ही नहीं बल्कि जीवन-यथार्थ, संघर्ष और सत्य से भी हम परिचित होते हैं। आचार्यश्री का आवास 'निराला निकेतन' एक ऐसी साधना स्थली है, जहाँ हर महीने की सात तारीख को आचार्य जी के स्मारक पर 'महावाणी स्मरण' का आयोजन किया जाता है, जिसमें रचनारत कई पीढ़ियों का साहित्य-संवाद होता है। शताधिक कृतियों के सर्जक जानकीवल्लभ शास्त्री की रचनात्मक प्रतिस्पर्धा विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से थी तभी तो साहित्य की सारी विधाओं में इन्होंने लेखन किया। संख्या और गुणवत्ता में शास्त्रीजी से ज्यादा संभवतः हिन्दी में किसी और ने गीतों की रचना नहीं की है। यहीं के सतत प्रयोगधर्मी कवि राजेन्द्र प्रसाद सिंह अपनी मौलिकता के लिए विशेष रूप से पहचाने जाते थे। 'मिटी नहीं मनुष्यता' जैसी प्रसिद्ध कविता के कवि और 'नवगीत' के प्रवर्तक

राजेन्द्रजी की वाग्मिता तथा ज्ञानसंपदा से प्रेरित होनेवाली प्रबुद्ध और चर्चित कवियों की बड़ी जमात है, जो अपनी सृजनशीलता से साहित्य को संपन्न कर रही है। वे चलते-फिरते साहित्य-कोष थे। कई गीत-संग्रह और वैचारिक काव्य-संग्रहों के अलावे उपन्यास और आलोचना की भी कई पुस्तकें इन्होंने दीं। पद्मश्री श्यामनंदन किशोर सम्मोहक स्वर के कवि गीतकार और आंजनेय तथा इड़ा-गायत्री महाकाव्यों के प्रणेता थे। कृष्ण नंदन पीयूष, ब्रजकिशोर प्रसाद सिंह, कृष्ण जीवन भट्ट, सियाराम शरण सिंह सरोज, सुरेन्द्र मोहन प्रसाद, गोपाल प्रसाद सिंह, पद्माशा, रमेश किरण जैसे महत्त्वपूर्ण नाम हैं जो मृत्युपर्यंत साहित्य-सृजन में समर्पित रहे। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, आरसी प्रसाद सिंह जैसे कई लेखकों की कर्मस्थली मुजफ्फरपुर की अनेक प्रतिभाओं ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कलात्मक क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है। पत्रकारिता में कई ऐसे मशहूर चेहरे और कलम हैं, जो अपनी उपलब्धियों की कौंध से विचार-जगत् को प्रभावित कर रहे हैं। संगीत, रंगकर्म, गायन के मंचों पर भी यहाँ की प्रातिभ उपस्थिति राष्ट्रीय स्तर पर रेखांकित और उल्लेखनीय होती रही है।

यहाँ की सांस्कृतिक पहचान बड़े परिदृश्य पर इसके व्यापक सामाजिक सरोकार और रागात्मक संवेदनशीलता के कारण है। ज्ञानसिद्धि पर यहाँ के मनीषियों ने कभी अहंकार और व्यर्थ वितंडावाद नहीं किया। सामाजिक समरसता और भाईचारे में घुला-मिला यह शहर बाबा गरीबनाथ शिवधाम से गरीबनवाज दाता कँबलशाह-मजार तक धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक परिक्रमा और यात्रा 'मनुर्भवः' के सद्भाव के साथ रोज-रोज करता रहता है। माता भुवनेश्वरी और वल्गामुखी जगज्जननी की स्नेहधारा में बहता यह जनपद अपनी विरासत के बल पर अपने महत्त्व को विस्तार देने में प्रकृत रूप से भी सक्षम और समर्थ है। मुजफ्फरपुर का भूगोल अब भले ही छोटा है, मगर कल तक के इसके फैलाव में गणतंत्र की जननी, तीर्थंकर महावीर की जन्मस्थली, करुणावतार बुद्ध की कर्मस्थली, कलासंचेतना आम्रपाली की साधना-भूमि और मर्यादा पुरुषोत्तम राम की प्रशस्ति पुरस्कृत वैभवशालिनी वैशाली भी संग-साथ थी, साथ ही शील-मर्यादा-संस्कृति-शक्ति की साक्षात् देवी सीता की प्राकट्य-स्थली सीतामढ़ी भी इसका अभिन्न अंग थी। पौराणिकता और ऐतिहासिकता से गौरवदीप्त मुजफ्फरपुर वैशाली-सीतामही की मध्यस्थता में आज भी प्रशासनिक केन्द्र और तिरहुत क्षेत्र का मान-सम्मान बनकर अटल राग में प्रसरित हो रहा है।

इसकी गौरवगाथा 'सीता पुनि बोली, विजयिनी, परितप्त लंकेश्वरी, अहल्या गाथा' जैसी कई औपन्यासिक कृतियों की यशस्विनी लेखिका मृदुला सिन्हा की सतत प्रवाहिनी लेखनी से उजागर होती है। गोवा राज्य की निवर्तमान राज्यपाल डॉ. मृदुला सिन्हा मुजफ्फरपुर की बेटी और बहू हैं। यहाँ वे लगातार आती रहती हैं। सबसे जुड़ी, लोकरंग में तरंगित होती यह लेखिका चाहे देश में हो या विदेश में, हर मंच पर अपने आत्मीय संबंध-स्मरण और अंचल-राग को संवाद तथा सुर-स्वर में सांस्कृतिक शिखर पर ले जाती हैं। अपनी लेखनी की शतकीय उपलब्धि के पास तक पहुँचने वाली मृदुला सिन्हा सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक व्यस्तताओं के बीच साहित्य के औदात्य को सदा ओढ़े रहती हैं, यह सृजन और वात्सल्य का अद्भुत संयोजन है। उम्र के नौवें दशक में होकर भी एक तरफ प्रेमगीतों के गंधर्व डॉ. शिवदास पांडेय ने जी

भर प्रणय गीत-सृजन करते हुए द्रोणाचार्य, गौतमगाथा, चाणक्य तुम लौट आओ, जगद्गुरु शंकराचार्य जैसे उपन्यासों का प्रणयन किया है, तो यह आश्चर्यचकित करता है और उनके वैचारिक लेखन की ओर भी उन्मुख करता है। दूसरी तरफ भावप्रवण गीतों के कोमल सर्जक डॉ. महेंद्र मधुकर भी अपनी वस्तु वैविध्य औपन्यासिक कृतियों 'लोपामुद्रा, बरहम बाबा की गाछी, त्र्यंबकम् यजामहे, दमयंती और भी' के माध्यम से अपनी अप्रतिम लेखकीय क्षमता के बल पर सम्मानित हैं। डॉ. शिवदास पांडेय और डॉ. महेंद्र मधुकर चिंतक हैं, आचार्य हैं, सुव्यवस्थित वक्ता हैं।

डॉ. अवधेश्वर अरुण 'बज्जिका रामायण' के प्रणेता महाकवि हैं। मुजफ्फरपुर की मातृभाषा 'बज्जिका' को बड़े फलक पर पहुँचाया है। ललित-निबंध और आलोचना के सहज लेखक हैं। डॉ. प्रमोद कुमार सिंह अपने धाराप्रवाह व्याख्यान और अध्ययन वैविध्य के लिए पूरे देश में जाने जाते हैं। डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव दर्शन के विद्वान हैं, मगर गीत, गजल, कविता के अंतरंग सर्जक हैं। डॉ. नंदकिशोर नंदन गीत, आलोचना, कहानी में अपने जनमूल्यों और तेवर के साथ मगर भावसंपृक्त हैं। शांति सुमन नवगीत की पहली कवयित्री हैं, जो कवि सम्मेलन के मंचों पर भी लोकप्रिय हुईं। लोक, जन, संबंध और आत्मराग जिनके गीतों के संवेदन हैं तथा जिनकी प्रतिबद्धता सामाजिक समरसता के लिए है। आग को राग में सहेजने का कौशल शांति सुमन के पास है, तभी तो सुनने और पढ़ने वाले प्रवाह में सहज ही बहने लगते हैं। डॉ. इन्दु सिन्हा कविता, कहानी, आलोचना की स्नेहमयी सुरसरि हैं, जिनकी रचनाओं में संबंधों की ऊष्मा और नमी के साथ ही आत्मीयता और पारिवारिकता की संवेदना-धारा निश्छलता में लय-तरंगित होती हैं। डॉ. पूनम सिन्हा की कविता और आलोचना में समान गति है। रचना के भीतर तक पहुँचकर आलोचना करती हैं तो वस्तु को भेदकर धरातल पर कविता लिखती हैं। डॉ. पूनम सिंह भी कविता और आलोचना में अधिकार रखती हैं, मगर अपनी कहानियों में वे पांक्तेय हो जाती हैं। यथार्थ के दर्शन कराती इनकी कहानियाँ विमर्श के नए द्वार खोलती हैं। डॉ. रामप्रवेश सिंह लोकचिंतक और आध्यात्मिक महाभाव के लेखक-आलोचक हैं। डॉ. रेवती रमण सुप्रसिद्ध हैं आलोचना के लिए, मगर वे कविरूप में भी मौलिक हैं अपने शिल्प के कारण। अध्येता हैं, वक्ता हैं, विमर्शकर्ता हैं, जो पढ़े हुए का प्रसंगानुसार यथासमय सुंदर उपयोग करते हैं। डॉ. रवीन्द्र उपाध्याय रागसंपन्न, संबंधबद्ध समयसजग, सत्यनिष्ठ लोकप्रिय गीतकार हैं। कम

लिखा, मगर जो लिखा डूबकर लिखा। मानस के ज्ञाता, संस्कृति के व्याख्याता और हृदय के गायक रवीन्द्र उपाध्याय गद्य में भी जो लय भरते हैं, वह कविता के प्रभाव और स्वाद लिए हुए रंग जमाता है। डॉ. शारदाचरण, रामेश्वर द्विवेदी, शेखर शंकर, डॉ. रामेश्वर प्रसाद, कृष्ण मोहन प्रसाद मोहन, डॉ. भावना, कुमार राहुल, डॉ. यशवंत, मीनाक्षी मीनल, आरती, श्यामल, पंकज कर्ण, अभिषेक अंजुम जैसे कई नाम हैं, जो अपने लेखन से साहित्य को श्री संपन्न कर रहे हैं।

बूढ़ीगंडक नदी के आर-पार बसा और फैला उत्तर बिहार के सबसे बड़े शहर मुजफ्फरपुर में विभिन्न प्रांतों, भाषा-भाषियों तथा समुदायों का अभिभूत कर देनेवाला समन्वय है। बुद्धिजीवी बंगालियों को यह सांस्कृतिक नगर सदा प्रभावित करता रहा है। बँगला साहित्य के बड़े कथाकार शरतचंद्र यहाँ वर्षों रहे। यहाँ के परिवेश, वातावरण और समाज से उनका गहरा जुड़ाव था। कई चर्चित कथाकृतियों का सृजन उन्होंने इसी उर्वर भूमि पर किया। कविगुरु रवींद्रनाथ की पुत्री यहाँ ब्याही गई थी। उनका आना-जाना लगा रहता था। नेताजी सुभाषचंद्र बोस का यहाँ विराट् नागरिक अभिनंदन हुआ था। विमल मित्र, सुभाष मुखोपाध्याय जैसे कई दिग्गज बंग-लेखकों को इस शहर ने प्रभावित किया। यहाँ का बंगसमाज 'हरिप्रदायिनी भक्ति सभा' के अंतर्गत अपने संस्कृति-स्वभाव में रमा रहता है। वीणा कंसर्ट उनका सांस्कृतिक मंच है, जिस पर आयोजन होते रहते हैं। शक्तिसाधक बंगाल की दुर्गापूजा इस सभा की बड़ी आस्था है, तभी तो दो दशक पूर्व सौवीं पूजा संपन्न करके आज भी हर वर्ष हर्षोल्लास में श्रद्धा-भक्ति का यहाँ दिग्दर्शन होता है। पूजा के अवसर पर हिन्दी-बँगला-अंग्रेजी भाषाओं से युक्त 'चलंतिका' नाम से भारी-भरकम स्मारिका भी हर वर्ष प्रकाशित होती है। युवा खुदीराम बोस ने अंग्रेजी दासता और बर्बरता के विरुद्ध यहीं जो बम विस्फोट किया था, जिससे उस क्रूर सल्तनत की नींव हिल गई थी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को बल मिला था।

महात्मा गाँधी भूकंप की त्रासदी और चंपारण सत्याग्रह के दरम्यान मुजफ्फरपुर आए और रुके भी थे। यहाँ का ऐतिहासिक लंगट सिंह कॉलेज अपने किलानुमा भव्य भवन और विशाल परिसर के लिए ही विशिष्ट नहीं है केवल, यहाँ देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी, राष्ट्रकवि दिनकर जैसे अनेक शोहरतनाम हैं, जो प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे। परिसर का 'गाँधी कूप' गवाही देता है कि राष्ट्रपिता ने यहाँ स्नान-ध्यान किया था। बड़े-बड़े आंदोलन और परिवर्तन का बार-बार प्रेरक आधार बना है मुजफ्फरपुर। लोकनायक जयप्रकाश ने संपूर्ण क्रांति की मानसिकता यहीं बनाई थी और चक्कर मैदान से अपार जनसमूह के बीच व्यवस्था-बदलाव का आह्वान किया था। कला, संगीत, नृत्य की सारी-सारी रात और कई-कई दिनों तक महफिलें जमती थीं। फिल्मी दुनिया के सितारे पृथ्वीराज कपूर, राजकपूर, शमीकपूर, शशिकपूर, हेमामालिनी, गायक मुकेश जैसे बहुत सारे नाम हैं, जो आए और रंग जमाए। शास्त्रीय संगीत के पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, दांडेकरजी, गोदई महाराज, बिसमिल्ला खाँ जैसे उस्तादों का आना होता रहता था। पद्मभूषण पंडित छन्नूलाल मिश्र आज भले ही बनारस में रहते हैं, मगर वर्षों मुजफ्फरपुर में रहकर उन्होंने सुर-साधना की है। अपने कर्मनिष्ठ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में जाते हुए छन्नूलाल मिश्र जी से जब मीडिया ने पूछा कि प्रधानमंत्री जी के लिए क्या सौगात लाए हैं तो उन्होंने एक गीत- 'रंक को आज दान देने दो' गाते हुए कहा था कि यही सुनाऊँगा। विदित हो कि यह गीत जानकीवल्लभ शास्त्री का है और शास्त्रीजी से छन्नूलालजी का घनिष्ठ स्नेह-संबंध था। शास्त्रीजी का निवास 'निराला निकेतन' साहित्य-संस्कृति का तीर्थ है, जहाँ निराला, हजारीप्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, नलिनविलोचन शर्मा, पृथ्वीराज कपूर (सपरिवार), त्रिलोचन, विष्णुकांत शास्त्री, पं. विद्यानिवास मिश्र, नामवर जैसे धुरीन साहित्यकार आए तो विभिन्न क्षेत्रों के दिग्गज भी आते रहे।

मुजफ्फरपुर का सांस्कृतिक स्वरूप कवियों, कलाकारों, संगीतज्ञों, समाजसेवियों, पत्रकारों, चिंतकों तथा शांतिप्रिय नागरिकों की एकतान जुगलबंदी से बनता है। ये सब वर्गभेद, वर्णभेद, जातिभेद, भाषाभेद, व्यवसायभेद से परे हैं। अपने अपने कर्म को सुव्यवस्थित और सुंदर अंजाम देते, समाज को सुगठित करते सबके सब एक-दूसरे के सहयोगी और बंधु की भूमिका में सदा ही तत्पर रहते हैं। संतुलित विकास की निष्ठा में यहाँ के जनजीवन में प्रेम, चिंतन, सहृदयता, सच्चाई, सादगी, का भाव घुला-मिला है। मानव-मन को आकर्षित करने वाला यहाँ का जीवंत, आदर्श, प्रेरणाप्रद और स्नेहिल स्वभाव सहज ही सबको बाँधता है और मुक्त भी करता है। बंधन में मुक्ति यहाँ की वैदेहिक युक्ति है। माधुर्य और मृदुलता की संस्कृति आत्मा में स्पंदित होती है, रगों में प्रवाहित होती है, वाणी में मुखर होती है, चेतना में ध्वनित होती है, व्यवहार में दृश्यमान होती है। मिठास की यह संस्कृति किसी भी परायेपन को नहीं जानती है। लय के आलोक में आनंदित होती यह संस्कृति मनुष्य के अस्तित्व की निरंतरता है और यह संस्कृति मनुष्य सिर्फ मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनाती संपूर्ण सत्ता को जोड़ती है। एक-दूसरे में अंतर्भुक्त करती समस्त पार्थक्य को पाटकर एकरस कर देती है। जीवन-मरण लय-प्रलय का सातत्य है, जो सार्वभौम, शाश्वत, सत्य और शिवत्व है। संस्कृति सही अर्थ में मनुष्य बनाती है और मनुष्य ही ईश्वर को आत्मसात् करता है। मुजफ्फरपुर आकाशव्यापी स्वर में अपने आर्ष पूर्वजों का स्मरण कर आह्वान करता है :

उठो, जागो और बढ़ो, गहकर निर्भय सत्य।
मनुर्भवः उद्घोष करो, समझो जीवन-लक्ष्य।।

संपर्क : 6200367503

बिहार के विकास में स्वैच्छिक संगठनों का उल्लेखनीय योगदान

आद्री, प्रथम, सुलभ इंटरनेशनल, किलकारी, हरित वसुंधरा सहित सैकड़ों कार्यरत

डॉ. ध्रुव कुमार
वरिष्ठ पत्रकार

प्रजातंत्र में हर संस्था महत्त्वपूर्ण है और उनके अपने कर्तव्य हैं। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका, तीनों संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें से एक में जनता का प्रतिनिधित्व है, दूसरा कार्यपालिका है और तीसरा न्यायपालिका। इन तीन प्रमुख स्तंभों के बाद चौथा है प्रेस, इसे चौथा स्तंभ भी कहा जाता है। लेकिन इसके बाद स्वैच्छिक संस्थाओं का प्रतिनिधि 'पाँचवाँ स्तंभ' है।

अमेरिका की प्रतिष्ठित पत्रिका 'टाइम' की दक्षिण एशिया ब्यूरो प्रमुख ज्योति थाटम ने नीतीश कुमार के बारे में लिखा : ''एक समय में बिहार दशकों तक गरीबी हिंसा और भ्रष्टाचार के लिए एक कहावत बन गया था, लेकिन यह स्थिति वर्ष 2005 में नीतीश कुमार के मुख्यमंत्री बनने से पहले की थी।'' पत्रिका ने अपने विशेष रिपोर्ट 'किस तरह से नीतीश कुमार ने बिहार को भारतीय सुधारों के मॉडल के रूप में बदला' में बताया कि किताबों में डूबे रहने वाले और आदर्शवादी सोच के इंजीनियर के छात्र रहे नीतीश कुमार ने अपने 40 साल के राजनीतिक कैरियर में आडंबर रहित जीवन और सशक्त नेतृत्व वाली छवि बनाई।

2005 में एनडीए सरकार की अगुआई करते हुए नीतीश कुमार ने त्वरित अदालतों का गठन किया, जिससे हजारों अपराधियों को सजा दी। सड़कों के निर्माण पर काफी मेहनत की और 5 साल के अंदर करीब 33000 किलोमीटर सड़कों का निर्माण कराया। पत्रिका का यह भी कहना है कि सड़कों के इस जाल के साथ बेहतर सुरक्षा की वजह से बिहार की अर्थव्यवस्था वर्ष 2006 से 11 प्रतिशत की वार्षिक दर से कुलाँचें भर रही है।

बिहार की राजनीति के कभी चाणक्य कहे जाने वाले नीतीश कुमार ने मुख्यमंत्री बनते ही प्रत्येक क्षेत्र में 'गुड गवर्नेंस' को एजेंडे पर लिया। आर्थिक हालात भी सुधरते चले गए। जिस योजना का आकार वित्तीय वर्ष 2005-6 में 4379 करोड़ रुपए का था, वह नई सरकार के बनते 2006-7 में लगभग दोगुना 8250 करोड़ रुपए का हो गया। धीरे-धीरे 13 सालों में 20 गुना बढ़कर 2019 में एक लाख करोड़ रुपये से अधिक का निर्धारित हुआ है।

तत्कालीन योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया ने राज्य सरकार के प्रयासों की तारीफ करते हुए कहा था कि प्रशासनिक सुधारों, शक्तियों के हस्तांतरण और निवेश को आकर्षित करने के लिए की गई कोशिशों का फायदा बिहार को मिलेगा। योजना कार्यों पर खर्च बढ़ा तो विकास की यात्रा शुरू हुई।

माना जाता है कि योजना आकार और राज्य के विकास पर अधिक व्यय करने का आइडिया नीतीश कुमार को राज्य में कई वर्षों से सक्रिय स्वयंसेवी संगठन 'आद्री' द्वारा कराए गए आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट के आधार पर मिला था।

प्रजातंत्र में हर संस्था महत्त्वपूर्ण है और उनके अपने कर्तव्य हैं। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका, तीनों संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें से एक में जनता का प्रतिनिधित्व है, दूसरा कार्यपालिका है और तीसरा न्यायपालिका। इन तीन प्रमुख स्तंभों के बाद चौथा है प्रेस, इसे चौथा स्तंभ भी कहा जाता है। लेकिन इसके बाद संस्थाओं का प्रतिनिधि है। ये संस्थाएँ विकास में तेजी से अपना योगदान का प्रतिशत बढ़ा रही हैं।

बिहार के विकास में भी स्वयंसेवी संगठनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। सरकार भी योजनाओं को फलीभूत

करने के लिए बड़ी संख्या में स्वयंसेवी संगठनों की मदद ले रही है। सड़क और पुल बनाने के कार्य को छोड़कर ज्यादातर कार्य स्वैच्छिक संगठनों के माध्यम से ही संपन्न हो रहे हैं, विशेषकर शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और समाज कल्याण के अधिकतर कार्य स्वैच्छिक संगठनों के कंधों पर ही हैं।

बिहार सरकार योजनाओं के निर्माण में, विशेषकर आर्थिक सर्वेक्षण और आँकड़े इकट्ठा करने के लिए आद्री नामक स्वयंसेवी संस्था की मदद ले रही है। वरिष्ठ पत्रकार प्रमोद दत्त मानते हैं कि स्वयंसेवी संगठनों के माध्यम से कार्य करना सरकारों के लिए ज्यादा आसान है, क्योंकि सरकारी सिस्टम की अपनी सीमाएँ हैं और यही कारण है कि ज्यादातर योजनाएँ समय पर पूरी नहीं हो पाती, जबकि स्वैच्छिक संगठनों को जब यह दायित्व सौंपा जाता है तो परिणाम ज्यादा बेहतर होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में 'प्रथम' नामक स्वैच्छिक संगठन ने उल्लेखनीय कार्य किया। सरकार इन संगठनों के माध्यम से शुरुआती आँकड़े जुटाती है और विभिन्न सर्वेक्षण के जरिए प्राप्त रिपोर्ट पर अपनी योजनाएँ तैयार कराती है। सरकार कई बार इन स्वयंसेवी संगठनों को कार्यों के निष्पादन की मॉनिटरिंग का जिम्मा भी सौंपती है।

बिहार की 'सुलभ इंटरनेशनल' इस बात का जीता-जागता उदाहरण है। स्वच्छता और साफ-सफाई के मामले में इस संस्था ने पूरी दुनिया में नागरिक सेवा की एक नई मिसाल प्रदर्शित की है।

आप दुनिया के किसी हिस्से में जाएँ, सभी जगहों, रेलवे स्टेशन, बस अड्डे यहाँ तक कि एयरपोर्ट के इर्द-गिर्द भी आपको सुलभ इंटरनेशनल पटना द्वारा सार्वजनिक शौचालय दिख जाएँगे। हालाँकि इन दिनों यह संस्था अपने गृह प्रदेश बिहार में ही पूरी क्षमता से कार्यरत नहीं है। हालाँकि किसी जमाने में राजधानी पटना के महत्त्वपूर्ण सड़कों में एक बेली रोड सुलभ ऊर्जा से रोशन हुआ करता था। इस कार्य के लिए भारत सरकार ने सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक डॉ. बिन्देश्वर पाठक को पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्म विभूषण जैसे नागरिक अलंकरण से विभूषित कर चुकी हैं।

बिहार के गरीब बच्चों में क्षमता और सृजनशीलता को विकसित करने के लिए 'किलकारी' नाम की संस्था कार्यरत है। इस संस्था के अपने कुछ अलग कायदे कानून हैं। यहाँ पढ़ाई नहीं होती लेकिन यहाँ वही सिखाया जाता है, जो बच्चे सीखना चाहते हैं। आज इस संस्था ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। यहाँ के प्रशिक्षित बच्चों ने नाटक, फिल्म, फोटोग्राफी, साहित्य सृजन आदि अनेक विधाओं में काफी नाम कमाया है। इससे जुड़े बच्चे अपनी बचत से एक बच्चा बैंक भी चलाते हैं। यहाँ के दर्जनों बच्चे राष्ट्रीय स्तर पर 'बाल श्री' पुरस्कार भी जीत चुके हैं और राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पा रहे हैं।

पर्यावरण के क्षेत्र में भी बिहार सरकार ने स्वयंसेवी संगठनों का काफी सहयोग लिया है। हालाँकि कुछ ऐसे भी संगठन राज्य में कार्यरत हैं, जो बिना किसी सरकारी अनुदान के वर्षों से इस तरह से कार्य कर रहे हैं और प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से राज्य की प्रगति में अपना योगदान रहे हैं। ऐसी संस्थाओं में 'हरित वसुंधरा' का नाम प्रमुख है, जिसने पर्यावरण के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। हरित वसुंधरा के निदेशक डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह बताते हैं कि वह सेवानिवृत्ति के बाद से 'हरित वसुंधरा' नामक संस्था के निर्माण के बाद लगातार पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शोध, जन-जागरूकता और प्रकाशन के जरिए सेवारत हैं। इसके सकारात्मक परिणाम हैं कि लोग अब वृक्ष और हरियाली के प्रति अपना नजरिया बदलने लगे हैं। डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह इस बात से बहुत खुश हैं कि बिहार सरकार ने उनके अभियान को 'जल जीवन हरियाली' नाम से अपना ड्रीम प्रोजेक्ट तैयार किया है, जिस पर 24 हजार करोड़ खर्च करने की व्यवस्था की जा रही है और अगले कुछ महीनों में पूरे राज्य में ढाई करोड़ से अधिक वृक्ष लगाने की योजना है। यह एक ऐसा ड्रीम प्रोजेक्ट है, जिससे राज्य में चौतरफा हरियाली होगी और इसका लाभ वर्तमान पीढ़ी को ही नहीं बल्कि अगली पीढ़ी को भी होगा। यह तेजी से सूख रही धरती के लिए एक वरदान साबित होगा।

राज्य की सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और इसके उन्नयन में स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका अत्यंत प्रभावकारी है। राज्य के कोने-कोने में गाँव से लेकर शहरों तक ऐसी सैकड़ों-हजारों संस्थाएँ कार्यरत हैं, जो लोक संस्कृति और लोक साहित्य के साथ-साथ अन्य साहित्यिक-सांस्कृतिक विधाओं को अपनी क्रियाकलापों से संरक्षित और पोषित कर रही है।

हाल ही में बिहार सरकार ने स्वच्छता अभियान के तहत राजधानी पटना समेत सभी बड़े शहरों की सफाई की व्यवस्था स्वयंसेवी संगठनों को सौंप दी है। कूड़ा-कचरा हटाने से लेखक गंगा घाटों की सफाई तक का जिम्मा इन संगठनों के कंधों पर है। लोगों का मानना है कि इसका सुखद परिणाम भी सामने आ रहा है। इन संगठनों से जुड़े लोग मुस्तैदी से अपनी ड्यूटी निभाते हैं और जिसका सीधा-सीधा लाभ लोगों को दिखता है। पटना के गंगा घाटों की सुंदरता इस व्यवस्था से काफी बढ़ गई है। ©पाँ.स्तं.

बिहार सरकार योजनाओं के निर्माण में, विशेषकर आर्थिक सर्वेक्षण और आँकड़े इकट्ठा करने के लिए आद्री नामक स्वयंसेवी संस्था की मदद ले रही है। वरिष्ठ पत्रकार प्रमोद दत्त मानते हैं कि स्वयंसेवी संगठनों के माध्यम से कार्य करना सरकारों के लिए ज्यादा आसान है, क्योंकि सरकारी सिस्टम की अपनी सीमाएँ हैं और यही कारण है कि ज्यादातर योजनाएँ समय पर पूरी नहीं हो पाती, जबकि स्वैच्छिक संगठनों को जब यह दायित्व सौंपा जाता है तो परिणाम ज्यादा बेहतर होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में 'प्रथम' नामक स्वैच्छिक संगठन ने उल्लेखनीय कार्य किया। सरकार इन संगठनों के माध्यम से शुरुआती आँकड़े जुटाती है और विभिन्न सर्वेक्षण के जरिए प्राप्त रिपोर्ट पर अपनी योजनाएँ तैयार कराती है। सरकार कई बार इन स्वयंसेवी संगठनों को कार्यों के निष्पादन की मॉनिटरिंग का जिम्मा भी सौंपती है।

बागमती-कछार के तीन रचनाकार

पूनम सिन्हा

सामान्यतया देखा जाता है कि भौगोलिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से दुरूह क्षेत्रों के निवासी अधिक संघर्षशील एवं जुझारू होते हैं। प्रकृति के प्रकोप को झेलते हुए वे जीने की जुगत में लगे रहते हैं।

बिहार के मुजफ्फरपुर शहर को बिहार की 'सांस्कृतिक राजधानी' कहा जाता है। यहाँ के संस्कृतिकर्मी एवं साहित्यकर्मी देश से लेकर विदेश तक अपनी मेधा से बिहार के इस शहर को गौरवान्वित करते रहे हैं। इसी मुजफ्फरपुर से लगभग तीस किलोमीटर दूर उत्तर की दिशा में बागमती नदी के किनारे बेनीपुर, भदई एवं मटिहानी गाँव हैं।

सामान्यतया देखा जाता है कि भौगोलिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से दुरूह क्षेत्रों के निवासी अधिक संघर्षशील एवं जुझारू होते हैं। प्रकृति के प्रकोप को झेलते हुए वे जीने की जुगत में लगे रहते हैं। बागमती नदी के किनारे बसे होने के कारण बेनीपुर बाढ़-पीड़ित क्षेत्र है। यहाँ के किसानों की सारी मेहनत जब जल-समाधि ले लेती है, वे नये सिरे से फसल उगाने की कोशिश करते हैं। एक खेप धान की फसल जब बाढ़ की भेंट चढ़ जाती है, वे क्रमशः दूसरी, तीसरी एवं चौथी खेप धान की रोपनी करते हैं।

अब तो बेनीपुर गाँव बाँध के अंतर्गत आ गया है। पहले वहाँ का जीवन आसान नहीं था। लेकिन वहाँ बच्चों से लेकर बूढ़ों तक में उत्साह, चुहल एवं जिंदादिली पाई थी। गरीब-गुरबों के घरों में वर्षा के दिनों में जब पानी घुस जाता था, तो अपेक्षाकृत ऊँचाई पर बने बबुआनों के घरों में वे अपने माल-मवेशियों के साथ सपरिवार आश्रय लेते थे। जिन घरों में वे आश्रय लेते थे, वहाँ पानी उतरने तक उनके साथ घर के सदस्यों जैसा व्यवहार होता था एवं उनके खाने-पीने की व्यवस्था की जाती थी। वर्षा के दिनों में बेनीपुर का प्रत्येक घर एक टापू की तरह हो जाता था। एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक जाने में छाती भर पानी झेलना पड़ता था या नाव का सहारा लेना पड़ता था। अगर गाँव से कहीं बाहर जाना आवश्यक होता तो बस या अन्य सवारी पकड़ने के लिए घर से मुख्य मार्ग तक आने के लिए नाव से कम-से-कम तीन-चार किलोमीटर की दूरी तय करनी होती थी अथवा शरीर के सारे वस्त्र उतारकर उन्हें सिर में मुरेठा की तरह बाँधकर पानी हेलते हुए जाना होता था। सिर्फ सिर ही पानी के ऊपर होता था। बरसात के पूर्व ही गृहिणियाँ गोढल्ले में गोइठा (उपले), लकड़ियों तथा रसोईघर में बड़ी-कुम्हड़ौरी (दाल से बनी एवं सब्जी के रूप में संरक्षित) की व्यवस्था कर लेती थीं। श्रीरामवृक्ष बेनीपुर इसी बेनीपुर गाँव के निवासी थे एवं उन्हें अपने गाँव से अगाध प्रेम था। उन्होंने बाढ़ की विभीषिका झेली थी। बाढ़ के दिनों में गरीब-गुरबों को अपने घर में आश्रय पाते देखा था, जो भी खाना बनता था, उसे सबको मिल-बाँटकर खाते देखा था। साहित्यकार, पत्रकार एवं राजनीतिज्ञ बेनीपुरी का संस्कार इसी संघर्ष एवं सहभागिता से निर्मित हुआ था।

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी के जीवन के तीन महत्त्वपूर्ण अंग हैं- राजनीति, पत्रकारिता एवं साहित्य। उन्होंने तीनों क्षेत्र में ऊँचाई के झंडे गाड़े। बेनीपुरी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उत्कर्ष एवं उनकी अंतिम वर्षों की मानसिक एवं शारीरिक त्रासदी पर समाजशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक अध्ययन एवं शोध की अपेक्षा है। क्या यह अकारण है कि श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन, नजरूल इस्लाम, राहुल सांस्कृत्यायन, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि अपने जीवन के अंतिम वर्षों में विस्मृति के शिकार हो गए।

सन् 1964 में 'आइना' का विशेषांक बेनीपुरी जी पर निकाला गया, जिसके संपादकीय में यह शेर उनकी शान में उद्धृत हुआ- ''मैं जिंदा हूँ, मुझे ऐ नाखुदा तूफान में ले चल/ मेरे जौके अमल की मौत है, साहिल के साये में।''

साहित्य में उनका आगमन पत्रकारिता के माध्यम से हुआ। उनकी पत्रकारिता अधिकांश में राजनीतिक पत्रकारिता थी। उनका साहित्यिक अवदान प्रचुर है; महत्त्वपूर्ण है। बाल-साहित्य, रेखाचित्र, संस्मरण साहित्य, यात्रावृत्तांत साहित्य, निबंध साहित्य, नाटक एवं एकांकी, उपन्यास साहित्य, कहानी साहित्य, जीवनी साहित्य, टीका साहित्य, इन सारी विधाओं में उन्होंने महत्त्वपूर्ण लेखन किया। उनके कवि-रूप का मूल्यांकन भी अभी शेष है। बेनीपुरी जी के विषय में रामधारी सिंह दिनकर का कहना है, ''नाम से दिनकर मैं था, किंतु काम से असली सूर्य बेनीपुरी जी थे... अपना उपनाम बेनीपुरी रखकर उन्होंने अपने गाँव

को अमर बना दिया।'' (नई धारा, अप्रैल-अगस्त, 1969, पृ. 191)

बागमती नदी के कछार के भदई गाँव के साहित्यिक विभूति कवि रामइकबाल सिंह 'राकेश' का मूल्यांकन उनकी काव्य-साधना के अनुरूप नहीं किया गया। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक योजना के तहत प्रसिद्ध आलोचक नंदकिशोर नवल के संपादकत्व में 'राकेश समग्र' का प्रकाशन 2001 में हुआ। इस पुस्तक के मुखपृष्ठ के एक कोने में अंकित है 'अलक्षित'। रामेशजी जैसे महत्त्वपूर्ण कवि अपने जीवनकाल में ही अलक्षित हो गए। यह दुखद है। 'राकेश समग्र' का संपादन करके नंदकिशोर नाल ने अत्यंत श्लाघनीय कार्य किया है। राकेशजी के कविता-संग्रह 'चट्टान', 'गांडीव', 'मेघदुंदुभि', 'गंधज्वार' एवं 'पद्मरागा' को एक साथ देखना अपने आप में एक सुखद अनुभव है। एक बार नंदकिशोर नवल जी का साक्षात्कार लेते हुए मैंने उनसे प्रश्न किया कि 'राकेश समग्र' का आपके द्वारा प्रकाशन अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य है, किंतु अभी भी बहुत कम पाठक उन्हें जानते हैं। क्या कारण है? उन्होंने कहा, ''पूनमजी! एक समय था कि रामइकबाल सिंह 'राकेश' 'हंस' और 'विशाल भारत' के नियमित लेखक थे। कभी उन पर स्वर्गीय प्रो. चंद्रबली सिंह ने लेख लिखकर उनकी तरफ हिंदी पाठकों का ध्यान दिलाया था। लेकिन 'गांडीव' निकलने के बाद उन्होंने अपने को गाँव तक सीमित कर लिया और इस तरह हिंदी संसार में भुला दिए गए। मैं उनकी काव्यात्मक ऊर्जा से परिचित था।''

'गांडीव' मैंने कलकत्ते में खरीदा था और मेरे गाँव के सभी साहित्यिक उनकी कविताओं से परिचित थे। कभी मैंने सुना था कि उनका अगला कविता-संग्रह 'मेघ-दुंदुभि' भी शीघ्र ही निकलने वाला है। आठवें दशक में जब मुझे पहला कविता-संग्रह 'चट्टान' पढ़कर ग्राम-कवि के रूप में उन पर विचार करने की इच्छा हुई, तो मैंने उन्हें 'मेघ-दुंदुभि' की एक प्रति भेज देने के लिए लिखा। उन्होंने बहुत करुण स्वर में मुझे उत्तर दिया कि 'मेघ-दुंदुभि' आज तक नहीं निकली। अब जब आपने उसकी याद दिलाई है तो मैं उसकी पांडुलिपि लेकर इलाहाबाद जा रहा हूँ और उसकी मुद्रित प्रति लेकर ही आपसे मिलूँगा। कुछ दिनों बाद वे पटना मेरे आवास पर मुद्रित प्रति लेकर आए और फूट-फूटकर रोने लगे। कुछ वर्षों के बाद अशोक वाजपेयी ने अपने 'स्तंभ' में राकेशजी की चर्चा की। राकेशजी के कवि-रूप के निर्माण में प्रगतिशील आंदोलन की मुख्य पत्रिका 'हंस' की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। रामइकबाल सिंह 'राकेश' उत्तर छायावाद के महत्त्वपूर्ण कवि थे। उत्तर छायावादी कविता का दौर समाप्त होते-होते प्रगतिवादी कविता का दौर शुरू हो गया। स्वच्छंद आलोचक आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का ध्यान आकृष्ट किया, वैसे ही प्रगतिशील कवि के रूप में महत्त्वपूर्ण प्रगतिशील आलोचक प्रो. चंद्रबली सिंह का। ज्ञातव्य है कि राकेशजी का प्रथम कविता-संग्रह 'चट्टान' 1946 में द्विवेदी जी के विस्तृत अभिमत के साथ प्रकाशित हुआ।

बागमती नदी क्षेत्र के ही मटिहानी गाँव की हैं प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार एवं राजनीति मृदुला सिन्हाजी, मात्र सत्रह साल की उम्र में मृदुला जी की शादी डॉ. रामकृपाल सिन्हा जी से हुई और वे वधू-रूप में मटिहानी गाँव में आ गईं। डॉ. रामकृपाल सिन्हाजी ने साहित्य, समाज एवं राजनीति तीनों क्षेत्रों में उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया। वर्ष 1977 के बाद मृदुलाजी डॉ. रामकृपाल सिन्हा राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री और केन्द्र सरकार में राज्यमंत्री के उत्तरदायित्व का निर्वहन कर रहे थे, तो मृदुलाजी अपने घर-परिवार को सँभालते हुए साहित्य, समाज एवं राजनीति के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय थीं। उन्हें कभी आलस नहीं होता। उनमें काम करने की असीमित ऊर्जा है। उनकी संगठनात्मक क्षमता उदाहरणीय है। अथक परिश्रम से उन्होंने अपना साहित्यिक, सामाजिक एवं राजनीतिक व्यक्तित्व अर्जित किया है। इन्होंने साहित्य की विविध विधाओं में लेखन किया है। उपन्यास, कहानी, नाटक, रिपोर्ताज, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, निबंध, बाल-साहित्य को इन्होंने अपने लेखन से समृद्ध किया है। आज जब पत्र-लेखन बंद ही हो गया है, इनका पत्र-लेखन साहित्य हमारे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

ये निरंतर यात्रा करती रहती हैं। विदेश यात्रा से लेकर गाँव-प्रवास तक में इनकी गति है। गाँव में तो उनकी नाल गड़ी है। बागमती का कछार इन्हें निरंतर बुलाता रहता है। इनके भीतर का ग्रामीण मन इन्हें बहुत दिनों तक महानगर में रहने नहीं देता है। इनका रचना-सजग मन गाँव से लेखन-सूत्र बटोरता रहता है। मृदुलाजी का मन कथा-लेखन में अधिक रमता है। 'सीता', 'सावित्री' एवं 'मंदोदरी' को अपने उपन्यास के केन्द्र में रखकर इन्होंने भारतीय साहित्य की आर्ष-परंपरा को गति दी है। 'सीता पुनि बोली' उपन्यास में इन्होंने उपजीव्य सामग्री के रूप में शास्त्र एवं लोक दोनों का सहारा लिया है।

मृदुला जी का जातीय मानस लोक को कभी विस्मृत नहीं कर पाता। सावित्री पर केंद्रित 'विजयिनी' उपन्यास में भी प्रचलित स्रोतों का सहारा लेते हुए भी सावित्री को अपनी लेखकीय दृष्टि से स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान किया है। 'परितप्त लंकेश्वरी' मंदोदरी के जीवन पर आधारित है। रामकथा के इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण पात्र पर रचनाकारों की दृष्टि कम ही गई है। इस उपन्यास में मृदुलाजी ने स्त्री सुलभ कोमल दृष्टि से मंदोदरी के व्यक्तित्व को नवीन आयाम दिया है। पुराकथाओं में अपने देशी की तत्कालीन सामूहिक जातीय एवं सांस्कृतिक चेतना सुरक्षित होती है। मृदुला सिन्हा ने पौराणिक स्त्री पात्रों के कथा नायिका बनाकर अतीत के संदर्भों को समकालीनता प्रदान की है।

इनका 'घरवास' उपन्यास बागमती नदी क्षेत्र के गाँवों का जीवंत दस्तावेज है। कुछ ऐसी समस्याएँ, जो बाद के दिनों में गाँवों में उग्र हुईं, उन पर मृदुलाजी ने बहुत पहले 'घरवास' में बृहत् चर्चा की है। गाँव एवं नागर जीवन पर केंद्रित इनकी कहानियाँ अत्यंत रोचक एवं लोकप्रिय हैं। ये लगातार पत्र-पत्रिकाओं के लिए भी लिखती रहती हैं।

'पाँचवाँ स्तंभ' को इन्होंने इतने वर्षों तक लगातार निकाला है, यह भी उदारहणीय है। वैसे अपनी राजनीतिक व्यस्तताओं के चलते अपनी बहू संगीता सिन्हा को इन्होंने संपादन का कार्य-भार दे दिया है। इस दायित्व के निर्वहन के लिए संगीताजी आत्मविश्वास का स्रोत तो उन्हीं में पाती हैं।

मृदुलाजी अच्छे मनुष्य के रूप में जानी जाती हैं। प्रभुता का मद उनपर कभी नहीं चढ़ा। गोवा की राज्यपाल के रूप में उन्होंने अत्यंत ख्याति अर्जित की। वे गोवा में अत्यंत लोकप्रिय राज्यपाल थीं। इन पंक्तियों की लेखिका को इसका अनुभव गोवा जाने पर हुआ। अभी उनकी लेखनी थकी नहीं है। राजनीतिक ऊर्जा पर भी उम्र ने प्रभाव नहीं डाला है। उन्हें भविष्य के लिए हमारी शुभकामनाएँ हैं। बागमती नदी के पानी की तासीर ही कुछ ऐसी है, जिसकी निकटता से ऊर्जा प्राप्त होती है।

संपर्क : 9470444376

भारतीय पुनर्जागरण और बिहार

रामकुमार निराला
स्वतंत्र पत्रकार

1858 के बाद ब्रिटिश प्रशासन द्वारा रेलवे, डाक और टेलीग्राफ सेवाओं के प्रारंभ होने के कारण अच्छी संस्था में बंगाली भद्रलोक बिहार में बसने लगे, जो पेशे से कुशल शिक्षक, दक्ष चिकित्सक, सुप्रसिद्ध वकील आदि थे।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी का भारतीय पुनर्जागरण इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यह भारत का सामाजिक-सांस्कृतिक एवं बौद्धिक क्षेत्रों में एक नवीन युग का सूत्रपात करने में अग्रणी रहा। साथ ही भारत के मध्ययुगीन मानसिकता को आधुनिकतम में रूपांतरित करने में इससे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वस्तुतः जीवन में सत्य, ज्ञान एवं सुंदरता की खोज करना भारतीय पुनर्जागरण का शाश्वत लक्ष्य रहा है। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर बिहार में व्यक्ति और समाज की प्रगति हेतु आधुनिक शिक्षा का प्रसार, नारियों का उत्थान, दबे-कुचले कमजोर वर्गों एवं उपेक्षित वर्गों को सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मानजनक स्थान दिलाने में ब्रह्म समाज तथा आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल व कबीर पंथ आंदोलन ने अपनी शानदार भूमिका निभाई। बिहार में व्याप्त रूढ़िवादिता, परंपरा व जातीय आधारित सामाजिक संरचना के विरुद्ध सुधारवादी आंदोलनकारियों को अनवरत संघर्ष करना पड़ा। वे सुधार और पुर्निनिर्माण के पवित्र कार्य को पूर्ण निष्ठा और दृढ़ निश्चय के साथ करते रहे।

ब्रह्म समाज आंदोलन भारतीय पुनर्जागरण का प्रवेशद्वार है। उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल के धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन पर ब्रह्म समाज आंदोलन तथा हेनरी डेरोजियो के यंग बंगाल आंदोलन का जो प्रभाव पड़ा, उसका असर बिहार पर भी पड़ना अवश्यंभावी था। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी कालजयी रचना 'संस्कृति के चार अध्याय' में इसे 'नवोत्थान' का नाम दिया है। यह बिहार में धीमी पर निरंतर गति से आया। 'नवोत्थान' के प्रति बिहारियों को औत्सुक्य देखकर ही ब्रह्म समाज का पहला केंद्र भागलपुर में 1863 ई. में स्थापित हुआ और कुछ वर्षों के अंदर ही इसके अन्य केंद्र पटना, गया, मुजफ्फरपुर, हजारीबाग, गिरिडीह व अन्य स्थानों में स्थापित किए गए।

1858 के बाद ब्रिटिश प्रशासन द्वारा रेलवे, डाक और टेलीग्राफ सेवाओं के प्रारंभ होने के कारण अच्छी संस्था में बंगाली भद्रलोक बिहार में बसने लगे, जो पेशे से कुशल शिक्षक, दक्ष चिकित्सक, सुप्रसिद्ध वकील आदि थे। इन्होंने ब्रह्म समाज के प्रचारक के रूप में भी कार्य किया। ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राममोहन राय का बिहार (पटना) से अंतरंग जुड़ाव था, क्योंकि यहाँ उन्होंने अरबी-फारसी सीखी और कुराण का आद्योपांत अध्ययन किया, जिससे उन्हें एकेश्वरवाद में गहरी आस्था उत्पन्न हुई। एक-दूसरे ब्रह्म समाजी नेता केशवचंद्र सेन ने पटना में ऐतिहासिक विशेष विवाह अधिनियम का प्रारूप 1871 में तैयार किया, जो अगले वर्ष अधिनियम बन गया। इससे अंतरजातीय विवाह को कानूनी मान्यता मिली।

ब्रह्म समाज पहली देशज संस्था थी, जिसने बिहार में आधुनिक शिक्षा की शुरुआत की, यानी ऐसी शिक्षा, जो उदार, धर्म निरपेक्ष, बौद्धिक, विज्ञान आधारित पश्चिम से प्रभावित और सत्य की खोज का विश्वजनीय माध्यम हो। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थानों की स्थापना हुई, जैसे पटना में राजा राममोहन राय सेमिनरी (1897), गिरिडीह हाई स्कूल (1887), यदुनाथ मुखर्जी हाई स्कूल, हजारी बाग (1920) आदि। विभिन्न शहरों में मिडिल स्कूल की स्थापना हुई, जो प्रगतिशील शिक्षा के केंद्र बने।

नारी शिक्षा के क्षेत्र में भी इसकी अग्रणी भूमिका रही थी। पश्चिम बंगाल के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. विधान चंद्र राय की माता श्रीमती अघोर कामिनी देवी के अथक प्रयास, त्याग एवं सेवा-समर्पण से बाँकीपुर बालिका उच्च, विद्यालय की स्थापना 1891 में मात्र छः छात्राओं से हुई। ब्रह्म समाज सुधारकों ने अन्य कन्या विद्यालयों की भी स्थापना की, जैसे पटना में रवीन्द्र बालिका विद्यालय (1931) तथा अघोर प्रकाश कन्या उच्च विद्यालय (1941), छोटानागपुर उच्च बालिका विद्यालय, गिरिडीह (1911), बालिका शिक्षा भवन, राँची (1939), मोक्ष बालिका विद्यालय (1881) तथा सुंदरवती कन्या कॉलेज, भागलपुर (1949)। रवीन्द्रनाथ टैगोर की बेटी माधुरीलता देवी ने मुजफ्फरपुर में चैपमैन कन्या विद्यालय की स्थापना 1903 में की। ये सभी विद्यालय अपनी गरिमा के साथ आज भी कायम हैं। माधुरीलता देवी और अनुरूपा देवी ने 1903 में ही मुजफ्फरपुर में पर्दाविरोधी आंदोलन प्रारंभ किया। लेकिन सुषमा सेन ने 1928 में सम्मेलन और मेलाओं के माध्यम से इस आंदोलन को सशक्त बनाया।

सरोजनी नायडु ने सुषमा सेन के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। जब महात्मा गांधी को इसकी सूचना मिली, तब उन्होंने राष्ट्र-निर्माण के लिए सुषमा सेन को आमंत्रित किया तथा 'यंग इंडिया' के एक आलेख में बिहार की महिलाओं को सुषमा सेन के नेतृत्व का अनुसरण का परामर्श किया।

सन्1910 से 1945 के बीच पटना, मुंगेर, जमालपुर और गया में दलित और वंचित वर्गों के लिए निःशुल्क रात्रि पाठशालाओं की स्थापना कर लोगों के बीच साक्षरता के प्रसार हेतु ब्रह्म समाज ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर पुस्तकालय संस्कृति की आधारशिला ब्रह्म समाज ने ही रखी, यथादेवघर में राजनारायण बोस पुस्तकालय, हजारीबाग में यूनियन पुस्तकालय और पटना में राममोहन पुस्तकालय।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में आर्य समाज आंदोलन ने पारंपरिक हिंदू धर्म को कट्टरता के चंगुल, अतर्क रीति-रिवाजों, अंध आस्था तथा जातिप्रथा की कट्टरता से मुक्त कराने का प्रयास किया। आर्य समाज का उद्देश्य 'वेदों की ओर लौटो', 'सभी सत्य वेदों में निहित है' आदि नारी में सन्निहित था। अक्तूबर, 1872 में स्वामी दयानंद सरस्वती का पटना में आगमन और उनका प्रवास बिहार में आर्य समाज आंदोलन का प्रारंभ था। यहाँ उनके प्रसिद्ध अनुयायी पटना सिटी के मुंशी मनोहर लाल ने स्वामीजी के निर्देशन में पवित्र आर्यग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' का तेरहवाँ खंड तैयार किया।

सन् 885 में आर्य समाज का पहला मंदिर दानापुर में स्थापित हुआ। तत्पश्चात् छपरा, सिवान, पटना आदि में आर्य समाज की शाखाएँ खोली गईं। आर्य समाज के द्वारा शास्त्रार्थ और शुद्धि कार्यक्रम आयोजित किए गए। पिछड़ी और छोटी जातियों के सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए समाज द्वारा निरंतर प्रयास होते रहे। सभी जातियों के लोग इसके सदस्य बने। समाज द्वारा दलित परिवार के बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से बिहार के अधिकांश शहरों में दलितोद्धार पाठशालाओं और विद्यालयों की स्थापना की गई। साथ ही शिक्षा का सुअवसर प्रदान कर महिलाओं में चेतना एवं जागृति पैदा करना भी समाज की महत्त्वपूर्ण देन थी।

शिक्षा के क्षेत्र में एक अन्य उल्लेखनीय बिंदु यह है कि लाला हंसराज के डी.ए.वी. प्रणाली और स्वामी श्रद्धानंद की गुरुकुल पद्धति को व्यवहार में लाया गया। डी.ए.वी. प्रणाली विज्ञान और अंग्रेजी शिक्षा पर बल देती थी, वहीं गुरुकुल पद्धति वैदिक शिक्षा पर। समाज द्वारा स्थापित एकमात्र महाविद्यालय डी.ए.वी. कॉलेज, सिवान प्रदेश के अग्रणी महाविद्यालयों में एक है। आर्य समाज मंदिरों ने अंतरजातीय विवाहों के द्वारा जात-पाँत की कट्टरता को समाप्त करने का प्रयास किया।

बिहार के समाज और संस्कृति पर अपनी अमिट छाप छोड़ने में रामकृष्ण मिशन, थियोसोफिकल सोसायटी और कबीरपंथ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बिहार के उमशेदपुर नगर में 1922 में स्थापित रामकृष्ण मठ और मिशन के साथ रामकृष्ण आंदोलन बिहार में आया। मिशन के अनुयायियों का बिहार के प्रति विशेष आकर्षण था; क्योंकि रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद और सिस्टर निवेदिता ने अनेक बार बोध गया और देवघर की यात्रा आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति हेतु की थी। 1912 में पटना और देवघर में अपनी शाखाएँ खोलीं। उन्होंने शिक्षा और मानवीय कार्यों में रचनात्मक कार्य किया। जमशेदपुर के आर.के. मिशन विद्यापीठ और रामकृष्ण-विवेकानंद सोसायटी तथा राँची के निकट संस्थापित 'दिव्ययान' शिक्षा के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त संस्थान हैं। 'दिव्ययान' संस्थान नवयुवकों को कृषि, पशुपालन, कुक्कुट पालन, उद्यान विज्ञान तथा सामुदायिक सेवा में प्रशिक्षित कर एक प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

बिहार में थियोसोफिकल समाज के आंदोलन का प्रारंभ 1882 में भागलपुर, गया, आरा और पटना में आवासों और निवासगृहों की स्थापना के साथ हुआ। इस आंदोलन ने धार्मिक सहिष्णुता, बुद्धिमत्ता, सहजीवन आदि पर विशेष बल दिया, जिसे बिहार के शिक्षित वर्ग ने आत्मसात् किया। इस प्रांत का यह सौभाग्य रहा कि इसे कर्नल आलकॉट, एनी बेसेंट, जी.एस. अरुंडले तथा रुक्मिणी अरुण्डले जैसे सुप्रसिद्ध थियोसोफिस्टों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त हुई। बिहार में भागलपुर के तेजनारायण सिंह पटना के पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा तथा रामजीवन सिन्हा और दरभंगा के महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह इस आंदोलन के प्रबल संरक्षक बने। तेजनारायण सिंह ने भागलपुर में स्कूल और कॉलेज की स्थापना की तथा पूर्णेन्दु नारायण सिन्हा ने पी.एन. ऐंग्लो संस्कृत स्कूल की स्थापना की।

कबीरपंथ आंदोलन एक ऐसा सुधार आंदोलन था, जिसका प्रभाव जमीनी स्तर पर हुआ। वाराणसी मुख्यालय से प्राप्त प्रेरणा और मार्गदर्शन के द्वारा कबीर सत्संग मध्यवर्गीय और निम्न जातियों को विशेष रूप से आकर्षित किया। प्रेम, भाईचारा, भेद-भाव विहीन और सहिष्णुता पर आधारित कबीर के सरल उपदेशों ने समाज के निम्नवर्गों को जीवन-दर्शन प्रदान किया। ऐसे सत्संग समाज के गरीब और वंचित श्रेणियों के बीच एक नए जागरण के प्रतीक हो गए।

मुख्तसर भारतीय पुनर्जागरण का लक्ष्य समाज में व्याप्त भेदभाव, पिछड़ापन, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता आदि विकृतियों को दूर कर प्रगति की ओर अग्रसर करना था। लेकिन बिहार में यह जातीय संकीर्णता के कारण समृद्ध नहीं हो सका। यह सत्य है कि पुनर्जागरण के द्वारा बिहार में शिक्षा के प्रसार और महिलाओं तथा वंचितों के जीवन में सुधार की दिशा में एक नवीन चिंतन का आविर्भाव हुआ।

अचरज की बात है कि जब बिहार में नवजागरण (1875-1912) चरमसीमा पर था, उसी समय बिहार के समाज में जाति प्रथा की पकड़ अधिक मजबूत हो चली थी। यहाँ के विभिन्न जाति समूहों ने अपने स्वार्थों और अधिकारों की रक्षा हेतु महासभा का गठन कर लिया था। जातीय सम्मेलनों का प्रारंभ 1875 में कायस्थ सभा की स्थापना से हुआ। तत्पश्चात् भूमिहार ब्राह्मण, मैथिल ब्राह्मण, राजपूत, कुर्मी, चंद्रवंशी, केवट, दुसाध आदि सभाओं की भी स्थापना हुई। अतः न केवल उच्च जाति के नेताओं ने ही वरन् मध्य एवं दलित जातियों ने भी अपने स्वार्थों और अधिकारों की रक्षा हेतु अपनी जातीय सभाएँ स्थापित कीं। दिलचस्प बात यह है कि इन जातियों के नेता भ्रमवश अपने ही जातीय समाज के उत्थान को 'नवोत्थान' मानते थे, जो किसी भी दृष्टिकोण से समाजहित में नहीं था। इन्हीं विखंडित अस्मिताओं के प्रबल होने के कारण बिहार में बंगाल एवं महाराष्ट्र जैसा कोई 'बिहारी उपराष्ट्रवाद' की भावना जोर नहीं पकड़ सकी। बाद के राजनीतिज्ञों ने भी खंडित अस्मिताओं को ही राजनीति की पतवार बनाना उचित समझा और एक समृद्ध एवं सुसंगठित 'बिहारी उपराष्ट्रवाद' विकसित नहीं हो सका। इसका दंश बिहार आज तक जाति, उपजाति, क्षेत्र जैसे विखंडित अस्मिताओं के रूप में झेल रहा है। दुष्परिणाम-स्वरूप नवजागरण की मुख्यधारा से जुड़कर एक उदारवादी, प्रगतिशील एवं आधुनिक समाज बनने की प्रक्रिया में बिहार क्रमशः पिछड़ता गया। संप्रति विकास के सारे प्रतिमानों के पैमाने पर बिहार आज आखिरी पायदान पर खड़ा दिखाई देता है। यह किसी भी सजग बिहारी के लिए चिंतनीय विषय है।

संपर्क : C/o श्री भरत शर्मा, पूर्वी इंदिरा नगर, नालंदा कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना–20 (बिहार), मो.: 9472443975

राजकुमार शुक्ल : जिसकी जिद ने गांधी और भारत का परिचय एक-दूसरे से कराया

■ चंदन शर्मा

चंपारण किसान आंदोलन आजादी की लड़ाई में मील का पत्थर साबित हुआ था, लेकिन इसकी वजह बने राजकुमार शुक्ल को इतिहास में वाजिब स्थान न मिल सका

चंपारण का किसान आंदोलन अप्रैल 1917 में हुआ था। गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह और अहिंसा के अपने आजमाए हुए अस्त्र का भारत में पहला प्रयोग चंपारण की धरती पर ही किया। यहीं उन्होंने यह भी तय किया कि वे आगे से केवल एक कपड़े पर ही गुजर-बसर करेंगे। इसी आंदोलन के बाद उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया गया।

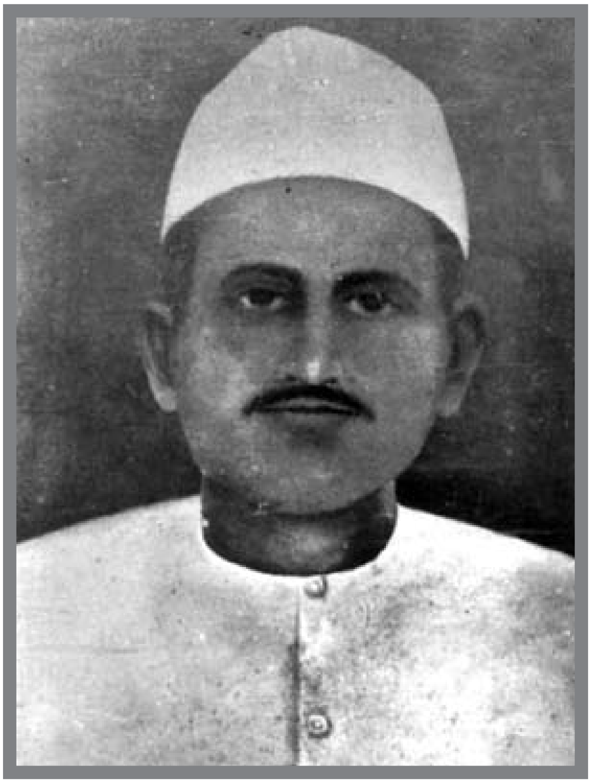

महात्मा गांधी भारत की आजादी के लिए चली लड़ाई के सबसे बड़े नायक हैं, यह कहने वाली बात नहीं। लेकिन यही गांधी जब 21 सालों तक दक्षिण अफ्रीका रहकर 1915 में देश लौटे तो भारत के बारे में ज्यादा कुछ न जानते थे। जितना जानते थे, वह सतही और किताबी था। ऐसे में उनके राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले ने सलाह दी कि वे कम से कम एक बार पूरे देश का भ्रमण करें। उन्होंने ऐसा ही किया। इसके बाद भी वे तय न कर सके कि उनकी आगे की राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियाँ कैसे आगे बढ़ेंगी।

ऐसी ही मनोस्थिति में उन्होंने दिसंबर 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में भाग लिया। इसी आयोजन में उनकी मुलाकात एक ऐसे शख्स से हुई, जिसने उनकी राजनीति की दिशा बदलकर रख दी। इस सीधे-सादे लेकिन जिद्दी शख्स ने उन्हें अपने इलाके के किसानों की पीड़ा और अंग्रेजों द्वारा उनके शोषण की दास्तान बताई और उनसे इसे दूर करने का आग्रह किया।

गांधी पहली मुलाकात में इस शख्स से प्रभावित नहीं हुए थे और यही वजह थी कि उन्होंने उसे टाल दिया। लेकिन इस कम-पढ़े लिखे और जिद्दी किसान ने उनसे बार-बार मिलकर उन्हें अपना आग्रह मानने को बाध्य कर दिया। परिणाम यह हुआ कि चार महीने बाद ही चंपारण के किसानों को जबरदस्ती नील की खेती करने से हमेशा के लिए मुक्ति मिल गई। गांधी को इतनी जल्दी सफलता का भरोसा न था। इस तरह गांधी का बिहार और चंपारण से नाता हमेशा-हमेशा के लिए जुड़ गया। उन्हें चंपारण लाने वाले इस शख्स का नाम था- राजकुमार शुक्ल।

चंपारण का किसान आंदोलन अप्रैल 1917 में हुआ था। गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह और अहिंसा के अपने आजमाए हुए अस्त्र का भारत में पहला प्रयोग चंपारण की धरती पर ही किया। यहीं उन्होंने यह भी तय किया कि वे आगे से केवल एक कपड़े पर ही गुजर-बसर करेंगे। इसी आंदोलन के बाद उन्हें 'महात्मा' की उपाधि से विभूषित किया गया। देश को राजेंद्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी, मजहरूल हक, ब्रजकिशोर प्रसाद जैसी महान विभूतियाँ भी इसी आंदोलन से मिलीं। इन तथ्यों से समझा जा सकता है कि चंपारण आंदोलन देश के राजनीतिक इतिहास में कितना महत्त्वपूर्ण है। इस आंदोलन से ही देश को नया नेता और नई तरह की राजनीति मिलने का भरोसा पैदा हुआ।

लेकिन राजकुमार शुक्ल और उनकी जिद न होती तो चंपारण आंदोलन से गांधी का जुड़ाव शायद ही संभव हो पाता। अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' के पाँचवें भाग के बारहवें अध्याय 'नील का दाग' में गांधी लिखते हैं, ''लखनऊ कांग्रेस में जाने से पहले तक मैं चंपारण का नाम तक न जानता था। नील की खेती

होती है, इसका तो खयाल भी न के बराबर था। इसके कारण हजारों किसानों को कष्ट भोगना पड़ता है, इसकी भी मुझे कोई जानकारी न थी।'' उन्होंने आगे लिखा है, ''राजकुमार शुक्ल नाम के चंपारण के एक किसान ने वहाँ मेरा पीछा पकड़ा। वकील बाबू (ब्रजकिशोर प्रसाद, बिहार के उस समय के नामी वकील और जयप्रकाश नारायण के ससुर) आपको सब हाल बताएँगे, कहकर वे मेरा पीछा करते जाते और मुझे अपने यहाँ आने का निमंत्रण देते जाते।''

लेकिन महात्मा गांधी ने राजकुमार शुक्ल से कहा कि फिलहाल वे उनका पीछा करना छोड़ दें। इस अधिवेशन में ब्रजकिशोर प्रसाद ने चंपारण की दुर्दशा पर अपनी बात रखी, जिसके बाद कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर दिया। इसके बाद भी राजकुमार शुक्ल संतुष्ट न हुए। वे गांधीजी को चंपारण लिवा ले जाने की जिद ठाने रहे। इस पर गांधी ने अनमने भाव से कह दिया, 'अपने भ्रमण में चंपारण को भी शामिल कर लूँगा और एक-दो दिन वहाँ ठहरकर अपनी नजरों से वहाँ का हाल देख भी लूँगा। बिना देखे इस विषय पर मैं कोई राय नहीं दे सकता।'

इसके बाद गांधी जी कानपुर चले गए, लेकिन शुक्ल जी ने वहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। वहाँ उन्होंने कहा, 'यहाँ से चंपारण बहुत नजदीक है। एक दिन दे दीजिए।' इस पर गांधी ने कहा, 'अभी मुझे माफ कीजिए, लेकिन मैं वहाँ आने का वचन देता हूँ।' गांधी जी लिखते हैं कि ऐसा कहकर उन्होंने बँधा हुआ महसूस किया।

इसके बाद भी इस जिद्दी किसान ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। वे अहमदाबाद में उनके आश्रम तक पहुँच गए और जाने की तारीख तय करने की जिद की। ऐसे में गांधी से रहा न गया। उन्होंने कहा कि वे सात अप्रैल को कलकत्ता जा रहे हैं। उन्होंने राजकुमार शुक्ल से कहा कि वहाँ आकर उन्हें लिवा जाएँ। राजकुमार शुक्ल ने सात अप्रैल, 1917 को गांधीजी के कलकत्ता पहुँचने से पहले ही वहाँ डेरा डाल दिया था। इस पर गांधी जी ने लिखा, 'इस अपढ़, अनगढ़ लेकिन निश्चयी किसान ने मुझे जीत लिया।'

गांधीजी की पहली पटना यात्रा और चंपारण आंदोलन

चंपारण बिहार के पश्चिमोत्तर इलाके में आता है। इसकी सीमाएँ नेपाल से सटती हैं। यहाँ पर उस समय अंग्रेजों ने व्यवस्था कर रखी थी कि हर बीघे में तीन कट्ठे जमीन पर नील की खेती किसानों को करनी ही होगी। पूरे देश में बंगाल के अलावा यहीं पर नील की खेती होती थी। इसके किसानों को इस बेवजह की मेहनत के बदले में कुछ भी नहीं मिलता था। उस पर उन पर 42 तरह के अजीब से कर डाले गए थे। राजकुमार शुक्ल इलाके के एक समृद्ध किसान थे। उन्होंने शोषण की इस व्यवस्था का पुरजोर विरोध किया, जिसके एवज में उन्हें कई बार अंग्रेजों के कोड़े खाने और प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा। जब उनके काफी प्रयास करने के बाद भी कुछ न हुआ तो उन्होंने बाल गंगाधर तिलक को बुलाने के लिए कांग्रेस के लखनऊ कांग्रेस में जाने का फैसला लिया। लेकिन वहाँ जाने पर उन्हें गांधी जी को जोड़ने का सुझाव मिला और वे उनके पीछे लग गए।

अंततः गांधी जी माने और 10 अप्रैल को दोनों जन कलकत्ता से पटना पहुँचे। वे लिखते हैं, 'रास्ते में ही मुझे समझ में आ गया था कि ये जनाब बड़े सरल इंसान हैं और आगे का रास्ता मुझे अपने तरीके से तय करना होगा।' पटना के बाद अगले दिन वे दोनों मुजफ्फरपुर पहुँचे। वहाँ पर अहले सुबह उनका स्वागत मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और बाद में कांग्रेस के अध्यक्ष बने जेबी कृपलानी और उनके छात्रों ने किया। शुक्लजी ने यहाँ गांधी जी को छोड़कर चंपारण का रुख किया, ताकि उनके वहाँ जाने से पहले सारी तैयारियाँ पूरी की जा सकें। मुजफ्फरपुर में ही गांधी से राजेंद्र प्रसाद की पहली मुलाकात हुई। यहीं पर उन्होंने राज्य के कई बड़े वकीलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से आगे की रणनीति तय की।

इसके बाद कमिश्नर की अनुमति न मिलने पर भी महात्मा गांधी ने 15 अप्रैल को चंपारण की धरती पर अपना पहला कदम रखा। यहाँ उन्हें राजकुमार शुक्ल जैसे कई किसानों का भरपूर सहयोग मिला। पीड़ित किसानों के बयानों को कलमबद्ध किया गया। बिना कांग्रेस का प्रत्यक्ष साथ लिए हुए यह लड़ाई अहिंसक तरीके से लड़ी गई। इसकी वहाँ के अखबारों में भरपूर चर्चा हुई, जिससे आंदोलन को जनता का खूब साथ मिला। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजी सरकार को झुकना पड़ा। इस तरह यहाँ पिछले 135 सालों से चली आ रही नील की खेती धीरे-धीरे बंद हो गई। साथ ही नीलहे किसानों का शोषण भी हमेशा के लिए खत्म हो गया।

चंपारण किसान आंदोलन देश की आजादी के संघर्ष का मजबूत प्रतीक बन गया था। और इस पूरे आंदोलन के पीछे एक पतला-दुबला किसान था, जिसकी जिद ने गांधीजी को चंपारण आने के लिए मजबूर कर दिया था। हालाँकि राजकुमार शुक्ल को भारत के राजनीतिक इतिहास में वह जगह नहीं मिल सकी, जो मिलनी चाहिए थी।

(साभार, सत्याग्रह डॉट.कॉम)

अंततः गांधी जी माने और 10 अप्रैल को दोनों जन कलकत्ता से पटना पहुँचे। वे लिखते हैं, 'रास्ते में ही मुझे समझ में आ गया था कि ये जनाब बड़े सरल इंसान हैं और आगे का रास्ता मुझे अपने तरीके से तय करना होगा।' पटना के बाद अगले दिन वे दोनों मुजफ्फरपुर पहुँचे। वहाँ पर अहले सुबह उनका स्वागत मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और बाद में कांग्रेस के अध्यक्ष बने जेबी कृपलानी और उनके छात्रों ने किया। शुक्लजी ने यहाँ गांधी जी को छोड़कर चंपारण का रुख किया, ताकि उनके वहाँ जाने से पहले सारी तैयारियाँ पूरी की जा सकें। मुजफ्फरपुर में ही गांधी से राजेंद्र प्रसाद की पहली मुलाकात हुई। यहीं पर उन्होंने राज्य के कई बड़े वकीलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से आगे की रणनीति तय की।

बिहार में पर्यटन की असीम संभावनाएँ

डॉ. रामशरण गौड़
वरिष्ठ लेखक एवं चिंतक

महाकवि विद्यापति संस्कृत, अपभ्रंश, मैथिली आदि अनेक भाषाओं के प्रकांड पंडित थे। इन्हें भारतीय साहित्य की प्रमुख भाषा परंपरा का एक स्तंभ के रूप में स्थान प्राप्त है। इन्हें मैथिली भाषा का सबसे श्रेष्ठ कवि माना जाता है।

वैसे तो संपूर्ण भारतवर्ष ही पर्यटन की दृष्टि से एक समृद्ध देश है। प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का राष्ट्र होने के कारण प्रत्येक राज्य में तीर्थस्थल, पुरातात्त्विक दृष्टि से भारत के प्रसिद्ध राजाओं के गढ़ और राजधानियाँ पर्यटन के लिए विदेशियों को और देश के विभिन्न भागों से बिहार आने वाले लोगों के आकर्षण के केन्द्र रहे हैं। परंतु उत्तर प्रदेश एवं बिहार विशेष रूप से ऐसे प्रदेश हैं जहाँ उत्तर प्रदेश में राम और कृष्ण की जन्मभूमि हेने के कारण बिहार महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी की जन्मभूमि होने के कारण भी धार्मिक दृष्टि से दर्शनीय हैं तो बिहार चंद्रगुप्त (द्वितीय) चंद्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक और पुष्यमित्र जैसे उन अनेक गौरवशाली राजाओं की शासन भूमि होने के कारण एक महत्त्वपूर्ण राज्य है, जिन्होंने सुदूर पश्चिम में जाकर सिकंदर और सैल्यूकश, मिलेण्डर जैसे यूनानियों को भारत से भगाकर भारत के स्वाभिमान और स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखा और भारत की संस्कृति और इतिहास के उन संकेतों को पीछे छोड़ा जो युगों तक भारत की प्रबुद्ध जनता को मोहित करते रहेंगे। जिनके संबंध में मैगस्थनीज, ह्वेनसांग और फाह्यान जैसे विदेशी पर्यटकों ने गौरवगाथा गायी है।

बिहार में स्थित ऐसे स्थलों का वर्णन करना मेरा इस समय अभिप्रेत है जो पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । इनमें भारत के वे विद्वान जिनके विषय में लोग नहीं जानते उनतक भारत के लोगों को पहुँचाने का भरपूर प्रयास करना चाहिए-

विद्यापति आश्रम : महाकवि विद्यापति संस्कृत, अपभ्रंश, मैथिली आदि अनेक भाषाओं के प्रकांड पंडित थे। इन्हें भारतीय साहित्य की प्रमुख भाषा परंपरा का एक स्तंभ के रूप में स्थान प्राप्त है। इन्हें मैथिली भाषा का सबसे श्रेष्ठ कवि माना जाता है। इनका आश्रम मधुबनी के विस्पी गाँव में स्थित है। इसे एक पयर्टन स्थल का स्वरूप दिया जा सकता है। यहाँ लोग बहुत कम जाते हैं तथा एक उपेक्षा का स्थलमात्र ही कहा जा सकता है।

मंडन मिश्र आश्रम : मंडन मिश्र बिहार के कोशी के किनारे बसे महिषी गाँव के रहने वाले थे। उनका विवाह मधुबनी जिला के भट्टपुरा विवासी कुमारिल भट्ट की बहन संस्कृत एवं प्राचीन भारतीय शास्त्रों की निष्णात विदुषी भारती के साथ हुआ था। मंडन मिश्र का शकराचार्य से शास्त्रार्थ इसी गाँव में हुआ था। कहा जाता है कि मंडन मिश्र से शंकराचार्य के साथ हुए शास्त्रार्थ में मंडन मिश्र की पत्नी भारती मध्यस्थ थीं। इस शास्त्रार्थ में मंडन मिश्र हार गये तब भारती ने उनसे कामशास्त्र विषयक प्रश्न पूछे। उस समय शंकराचार्य ने भारती के प्रश्नों से निरुत्तर होकर एक महीने का समय माँगा। तदनंतर उन्होंने गौड़ देश के राजा के शरीर में प्रवेश कर उसकी रानी से कामशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की और पुनः अपने शरीर में प्रवेश कर भारती से शास्त्रार्थ किया। उनके उत्तरों से भारती संतुष्ट हुई और शंकराचार्य को विजित घोषित किया। तब मंडन मिश्र ने हारकर सुरेश्वराचार्य बनकर दूसरे शंकराचार्य का स्थान प्राप्त किया। मंडन मिश्र का यह आश्रम प्रत्येक भारतवासी के लिए दर्शनीय है।

वाचस्पति मिश्र आश्रम : वाचस्पति मिश्र बिहार की मधुबनी के पास अंधराढाढी गाँव के निवासी थे। इन्होंने वैशेषिक दर्शन के साथ अन्य दर्शनों पर टीकाएँ लिखीं। इनके द्वारा ब्रह्मसूत्र पर लिखी गयी भामती टीका सर्वाधिक प्रसिद्ध है। जिसके लेखन में इनकी पत्नी भामती का अत्यंत सहयोग रहा। इसलिए वाचस्पति मिश्र ने इस टीका का नाम 'भामती टीका' रखा। इन्होंने तत्त्वबिन्दु नामक एक मूल ग्रंथ की भी रचना की।

बिहार के महान शिक्षा केन्द्रों से भी अभी तक अधिकांश लोग अनभिज्ञ हैं जबकि ये भी विदेशी पयर्टकों को अपनी और आकर्षित करते रहे हैं-

नालंदा विश्वविद्यालय : प्राचीन भारत के शिक्षा केन्द्रों में बिहार के नालंदा विद्यालय का नाम गौरव के साथ लिया जाता है। यह पटना के दक्षिण में बड़गाँव में स्थित है। इसे बिहार के गुप्त सम्राट शकादित्य जिसे कुमारगुप्त के नाम से जाना जाता है ने बौद्धधर्म के प्रति गहरी आस्था प्रकट करने के लिए बनवाया था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसकी अत्यंत प्रशंसा की है। यह विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा

संस्थान के रूप में विख्यात रहा, यहाँ भारत के धर्म और दर्शन की शिक्षा दी जाती थी। यहाँ का पुस्तकालय अत्यंत समृद्ध था। जिसमें सभी धर्म और दर्शन की पुस्तकें रखी गयी थीं। इस विश्वविद्यालय को बारहवीं सदी के अंत में मुस्लिम आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी ने नष्ट कर दिया। पुस्तकालय को जला दिया और यहाँ के आचार्यों और भिक्षुओं की हत्या कर दी। अब इसे भारत सरकार नया स्वरूप देकर इसके पुराने गौरव को लौटाने का प्रयास कर रही है।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय : बिहार के भागलपुर जिले में स्थित विक्रमशिला विश्वविद्यालय भी प्राचीन भारत का एक अंतरराष्ट्रीय ख्याति का शिक्षा केन्द्र रहा है। सन् 775 ई. से लेकर 800 ई. के मध्य पालवंश के शासक धर्मपाल ने इसे बनवाया था। इसमें देश-देशांतर से आने वाले शिक्षार्थियों को व्याकरण, तर्कशास्त्र, मीमांसा, तंत्र विधिवाद आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

ओदंतपुरी विश्वविद्यालय : वर्तमान बिहार का नाम ओदंतपुरी था। इस नगर में पालवंश के संस्थापक शासक गोपाल नें आठवीं शताब्दी (730-749 ई.) में एक महाविहार के रूप में स्थापित किया गया, जो बाद में एक ख्याति प्राप्त शिक्षा का केन्द्र बन गया। यहाँ लगभग 1000 भिक्षु रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे।

गया : पूरे भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, जहाँ भारतवर्ष भर के हिन्दू अपने पित्रों के मोक्ष के लिये पिंडदान करने के लिए आते हैं। यहाँ का पितृपक्ष का मेला तो विश्वभर में प्रसिद्ध है। महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति का स्थल होने के कारण यहाँ विश्वभर के बौद्ध महात्मा बुद्ध के दर्शन करने के लिए आते हैं। साथ ही विश्व के अनेक देशों के बौद्ध विहार यहाँ स्थित हैं। यहाँ का विष्णुपद मंदिर तो यूनेस्को की प्रचीन धरोहरों में सम्मिलित हैं।

राजगीर : नालंदा में स्थित राजगीर को तो पर्यटन की स्थली कहा जा सकता है। सात पहाड़ियों से घिरे हुए सुंदर राजगीर में बौद्ध, जैन, हिंदुओं के मंदिर, घोडाकटोरा झील, ब्रहमकुंड, मखदुम कुंड, मगध राजा जरासंध का अखाड़ा, सोन भंडार, विश्वशांति स्तूप पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र हैं।

वैशाली : वैशाली जैन धर्म के अनुयायियों का प्रमुख धार्मिक स्थल है। यहाँ जैनधर्म के संस्थापक महावीर स्वामी का जन्म हुआ था, यहीं पर भगवान महावीर का अंतिम संस्कार हुआ था। यहाँ का जलमंदिर, जो एक तालाब के बीचोबीच बना हुआ है तथा इसमें भगवान महावीर की चरण पादुका रखी हैं, जैनियों के लिए पूजनीय है। इसे पावापुरी कहा जाता है। वैशाली को प्रसिद्ध नर्तकी आम्रपाली, जो बाद में महात्मा बुद्ध की शिष्या बन गयी थी, इसी नगर में रहती थी।

पटना : बिहार राज्य की राजधानी पटना ही स्वयं अपने में ही पर्यटन नगर हैं। यहाँ पर स्थित गुरुगोबिंद सिहं जन्मस्थली पटना साहिब गुरुद्वारा, बिहार संग्रहालय, राजीव गांधी जैविक उद्यान, कुम्हरार, अँगरेजों द्वारा बनाया गोलघर, कालीघाट, पटन देवी, बुद्ध स्मृति पार्क आदि दर्शनीय पर्यटन स्थल हैं।

भागलपुर : भागलपुर बिहार का दूसरा नगर है। जहाँ के विक्रमशिला विश्वविद्यालय के बाद गंगाघाट पर स्थित कुप्पाघाट, भागलपुर के समीप मंदार पर्वत पर्यटकों के लिए दर्शनीय स्थल हैं।

चंपारण : पर्यटन की दृष्टि से पूर्वी और पश्चिमी चंपारण दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। पूर्वी चंपारण स्थित केसरिया स्तूप, जिसे भारत का सबसे बड़ा स्तूप माना जाता है, शिवालिक पर्वत श्रेणी की बाहरी सीमा पर स्थित बाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान प्रमुख पयर्टन स्थल हैं। बाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान में तो दुर्लभ जीव-जंतुओं को देखा जा सकता है।

सीतामढ़ी : बिहार के मधुबनी जिले के सीतामढ़ी में जानकी स्थान एवं उर्बीजा कुंड देखने योग्य है तो सीतागढ़ी से 5 किलोमीटर दूर पुनौरा में जो ऋषि पुंडरीक के आश्रम के रूप में विख्यात था सीताजी का जन्म हुआ था। यह भारत के हिंदू धर्म के अनुयायियों के लिए अति पवित्र स्थल माना जाता है। सीतामढ़ी के राजनगर में महाराजा रामेश्वर सिहं ने बनवाया गया नौलखा महल भारत की समृद्ध स्थापत्य का उदाहरण है। इसके अतिरिक्त सीतामढ़ी के आस-पास अनेक तीर्थस्थल हैं। सीतामढ़ी से तीन किलोमीटर दूर हलेश्वर का शिव मंदिर स्थित है। कहा जाता है यहाँ राजा जनक ने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया था। सीतामढ़ी के 3 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में पुराना एक पाकड़ का पेड़ है। देवी सीता को जनकपुर से अयोध्या ले जाते हुए विश्राम कराया गया था, ऐसी मान्यता भारतीय लोक में प्रचलित है। सीतामढ़ी के समीपस्थ बगही मढ़ पूजा तथा यज्ञ के लिए प्रसिद्ध है। इसमें 108 कमरे है। सीतामढ़ी देवकुली (ढेकुली) का अत्यंत प्राचीन शिवमंदिर है। सीतामढ़ी से 35 किलोमीटर दूर नेपाल के जनकपुर स्थित है, जहाँ के राजा जनक थे। बिहार जाने वाले पर्यटक इस स्थल को आसानी से देख सकते हैं।

मुंगेर : मुंगेर बिहार का एक प्राचीन और प्रमुख शहर होने के कारण विशेष महत्त्व रखता है। इसके गंगातट पर स्थित बिहार योग विद्यालय तो विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। जहाँ विश्व के अनेक योग जिज्ञासु योग का प्रशिक्षण लेने आते हैं।

दरभंगा : उत्तरी बिहार में बागमती नदी के किनारे बसा दरभंगा भारत के प्राचीन नगरों में गिना जाता है। यह भारत के संस्कृत के विद्वानों का शास्त्रार्थ स्थल रहा है, जहाँ संस्कृत के अनेक विद्वानों ने प्रसिद्धि प्राप्त की यहाँ का संस्कृत विश्वविद्यालय आज भी प्रसिद्ध है।

देव सूर्य मंदिर : बिहार के औरंगाबाद जिले में स्थित देव सूर्य मंदिर जिसे देवार्क सूर्य मंदिर, देवार्क मंदिर भी कहा जाता है शिल्प कला की दृष्टि से अत्यंत प्रसिद्ध है, जहाँ सैकड़ों हिन्दू दर्शन करने के लिए जाते हैं।

शेरशाह सूरी मकबरा : शेरशाह सूरी बिहार के पठान और अपने समय का प्रसिद्ध सम्राट था। इन्होने मुगलों को पराजित कर सूरी साम्राज्य की नींव डाली तथा बिहार के सहसराम में मकबरा बनवाया, जो हिन्दू और इस्लामी कला का नमूना है। कहा जाता है कि इन्होंने कलकत्ता से लेकर पेशावर तक राजमार्ग बनवाया, जो शेरशाह सूरी नामक सड़क के नाम से प्रसिद्ध है।

वस्तुतः बिहार में पयर्टन के विकास की अनेक संभावनाएँ हैं, परंतु बिहार की कानून एवं नियम अनुपालन की समस्या, भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, नक्सलवाद आदि की अनेक समस्याँ रही हैं, जिससे बाहर के लोग बिहार में जाने से भयभीत होते हैं। अतः बहुत कम लोग बिहार में पयर्टन के लिए जाते हैं। बिहार के नागरिकों, नौकरशाहों और नेताओं को इन समस्याओं का समाधान करने के लिए गंभीरता से सोचना होगा। क्योंकि बिहार के पयर्टन विकास से आम नागरिकों, व्यापारियों, यातायात-कर्मियों और सरकार सभी को लाभ ही लाभ है।

संपर्क: 9811227528

सखि, वे मुझसे कहकर जाते

■ मैथिलीशरण गुप्त

सखि, वे मुझसे कहकर जाते,
कह तो, क्या मुझको वे अपनी
पथ-बाधा ही पाते?

मुझको बहुत उन्होंने माना
फिर भी क्या पूरा पहचाना?
मैंने मुख्य उसी को जाना
जो वे मन में लाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में,
प्रियतम को प्राणों के पण में,
हमीं भेज देती हैं रण में-
क्षात्र-धर्म के नाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

हुआ न यह भी भाग्य अभागा,
किसपर विफल गर्व अब जागा?
जिसने अपनाया था, त्यागा,
रहे स्मरण ही आते
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,
पर इनसे जो आँसू बहते,
सदय हृदय वे कैसे सहते ?
गए तरस ही खाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

जाएँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालंभ दूँ मैं किस मुख से?
आज अधिक वे भाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

गए, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व-अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हें पावेंगे,
पर क्या गाते-गाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

जागो मन के सजन पथिक ओ!

■ फणीश्वरनाथ रेणु

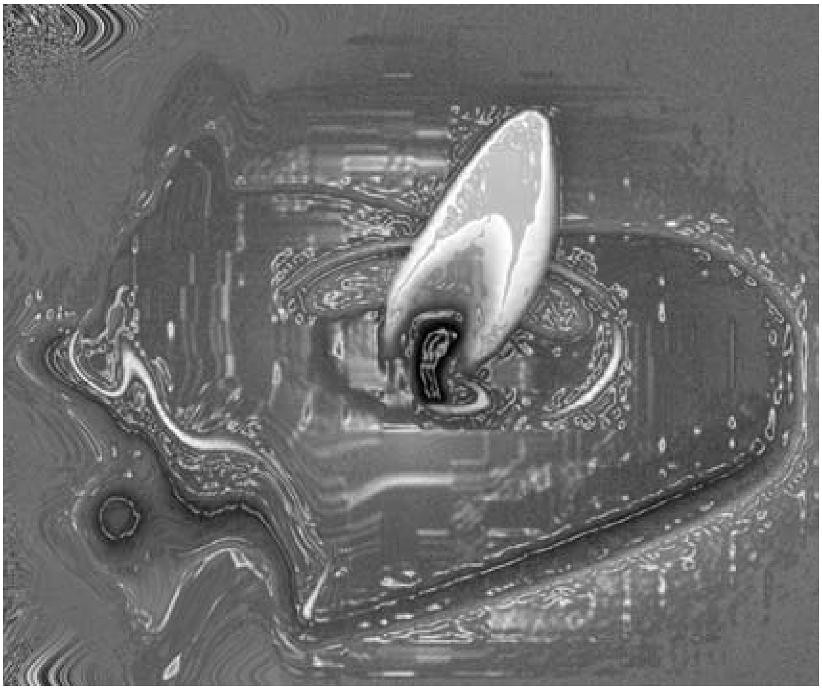

मेरे मन के आसमान में पंख पसारे
उड़ते रहते अथक पखेरू प्यारे-प्यारे!
मन की मरु मैदान तान से गूँज उठा
थकी पड़ी सोई-सूनी नदियाँ जागीं
तृण-तरु फिर लह-लह पल्लव दल झूम रहा
गुन-गुन स्वर में गाता आया अलि अनुरागी
यह कौन मीत अगनित अनुनय से
निस दिन किसका नाम उतारे!
हौले-हौले दखिन-पवन-नित
डोले-डोले द्वारे-द्वारे!
बकुल-शिरिष-कचनार आज हैं आकुल
माधुरी-मंजरी मंद-मधुर मुसकाई
क्रिश्नझड़ा की फुनगी पर अब रही सुलग
सेमन वन की ललकी-लहकी प्यासी आगी
जागो मन के सजग पथिक ओ!
अलस-थकन के हारे-मारे
कब से तुम्हें पुकार रहे हैं
गीत तुम्हारे इतने सारे!

लड़कियाँ

■ अशोक सिंह

लड़कियाँ बनाती हैं
मकान को घर
और घर को
मकान में तब्दील होने से बचाती हैं

बच्चों के हाथ पकड़
'ह' से हाथ लिखना सिखाने से लेकर
घर के बीमार बूढ़े-बुजुर्गों को
दवा-दारू करने तक
लड़कियाँ ही रखती हैं खयाल
अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद

लड़कियों की ही खासियत है
कि एक काम पूरा करने के बाद ही
लगाती हैं दूसरे को हाथ
और तो और
नहीं भूलती इस्तेमाल के बाद
वापस निश्चित जगह पर रखना घर के सामान

इतना ही नहीं
हर चीज को देख-परख
मोल-भाव कर खरीदने की उनकी कला
और दाम से ज्यादा काम को
महत्त्व देने की उसकी आदत ही
बचाती है घर की फिजूलखर्ची

जगह कोई भी हो
कहीं भी हो, कैसी भी हो
लड़कियाँ ही हैं
जो खुद को ढाल लेती हैं
सहजता से उसके अनुरूप
कोई टीका-टिप्पणी किए बगैर

न जाने किस मिट्टी की बनी होती हैं वे
नहीं पड़ता जल्दी संगत का उन पर कोई असर
बल्कि वे ही छोड़ जाती हैं अपनी छाप
जहाँ, जिस जमात में होती हैं

लड़कियाँ अपनी कामयाबी का जश्न नहीं मनातीं
न ही करती हैं कभी बढ़-चढ़कर उसका प्रचार
नाम-फाम की चाहत से दूर

कभी कुछ करती भी हैं तो एक हाथ से
दूसरे हाथ तक को भी पता नहीं चलता

वे झूठ भी बोलती हैं तो सलीके से
और सच को सच की तरह
बोलने में बरतती हैं विनम्रता

उसकी सरलता
और भोलेपन का भी क्या कहना
गलती तो गलती
कभी-कभी बिन किए अपराधों के लिए भी
वे सहजता से
माँग लेती हैं क्षमा
बिना कोई तर्क-वितर्क किए

धैर्य और साहस में भी उनका जवाब नहीं
मुसीबतों में बन जाती हैं ढाल
और मुश्किलों में औजार बन,
कर देती हैं
मुश्किल से मुश्किल काम को भी आसान

और तो और
हाल-ए-दिल बयां करने के मामले में भी
जल्दबाजी नहीं करतीं वे
एक शब्द कहने से पहले
एक हजार बार सोचती हैं
और सौ बार देखती-परखती हैं
सामने वाले को
उसके हाथ में हाथ देने से पहले

वे होती हैं
रिश्तों के व्याकरण में निपुण
और घर के घरेलू-गणित में पारंगत

इतना ही नहीं परंपरा का आग्रह हो
या आधुनिकता का आकर्षण
वे गढ़ लेती हैं समय के अनुकूल
अपने समय का समाजशास्त्र

उसकी पकड़ और समझ के भी क्या कहने
वे किताबों से ज्यादा आदमी के चेहरे पढ़ती हैं
और बिना कागज-कलम के लिखती हैं
घर की परिधि में दिन भर दौड़ती-भागती
सबसे छुपाकर अपनी अनकही आत्मकथा!

संपर्क : जनमत शोध संस्थान, पुराना दुमका केवटपाड़ा, दुमका–814101, झारखंड, मो.: 9431339804

किसान और कृषि : 2020-21 बजट की प्राथमिकता

प्रो. लल्लन प्रसाद
अर्थशास्त्री

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लक्ष्य है : 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने का। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वित्तमंत्री सीतारमण ने 2020-21 के बजट में 16 सूत्रीय योजना की घोषणा की है। कृषि पदार्थों के बाजार का उदारीकरण किया जाएगा, प्रतिस्पर्धा बढ़ाई जाएगी।

भारत अभी भी कृषिप्रधान देश है। आबादी का 65 प्रतिशत भाग गाँवों में रहता है। खेती जीविका का मुख्य आधार है। किंतु आजादी के सात दशकों के बाद भी भारतीय किसान उतना खुशहाल नहीं है, जितना अपेक्षित था। अधिकांश छोटे किसान, जिनके पास दो एकड़ या इससे कम जमीन है, गरीबी रेखा के नीचे हैं, उनको अपनी फसल की पूरी कीमत नहीं मिली। कर्ज से दबे होने और आर्थिक तंगी के कारण हजारों किसान प्रतिवर्ष आत्महत्या तक कर लेते हैं। एक अनुमान के अनुसार 1991 से 2015 के बीच 3 लाख से अधिक किसानों ने आत्महत्या की कृषिप्रधान देश में किसानों की यह दशा देखकर कबीरदास का दोहा याद आ जाता है- 'पानी बिच मीन प्यासी रे, मोहे सुन-सुन आवे हाँसी रे।' यह स्थिति तब है, जब देश के संसद में अधिकांश प्रतिनिधि गाँवों से चुनकर आते हैं। कृषि उत्पादन में देश में वृद्धि हुई है, विशेषकर 1960 के हरित क्रान्ति के बाद, जिसके फलस्वरूप देश खाद्यानों के मामले में आत्मनिर्भर है। केंद्र की सरकारों ने कृषि विकास और किसानों की भलाई के लिए काम किए हैं, किंतु जितना धन बजट में इसके लिए रखा जाता रहा है, उतना किसानों तक कभी पहुँचता ही नहीं। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने तो यहाँ तक कह दिया था कि सरकार एक रुपए का आवंटन करती है, तो लोगों तक 15 पैसे ही पहुँचता है, बाकी भ्रष्टाचार एवं प्रशासनिक कमजोरियों की भेंट चढ़ जाता है। स्थिति में बदलाव आया है, जब से मोदी सरकार ने डायरेक्ट बेनिफिट सीधे खातों में सब्सिडी देने का निर्णय लिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का लक्ष्य है : 2022 तक किसानों की आय दुगुनी करने का। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वित्तमंत्री सीतारमण ने 2020-21 के बजट में 16 सूत्रीय योजना की घोषणा की है। कृषि पदार्थों के बाजार का उदारीकरण किया जाएगा, प्रतिस्पर्धा बढ़ाई जाएगी। खेती से संबद्ध व्यवसायों को विकसित किया जाएगा, संपोषणीय (सस्टेनबुल) फसलों और तकनीक पर जोर दिया जाएगा। केंद्र सरकार ने जो मॉडल एक्ट्स बनाए हैं : एग्रिकल्चरल लैंड लीजिंग एक्ट 2016, एग्रिकल्चरल प्रोड्यूस एण्ड लाइमस्टाक मार्केटिंग एक्ट 2017, एग्रिकल्चरल कांट्रैक्ट फॉर्मिंग, सर्विसेस प्रमोशन एवं फेसिलिटेशन एक्ट 2018 को कार्यान्वित करने की राज्यों को सलाह दी जाएगी। पानी की किल्लत से जूझते 100 जिलों को विशेष धन आवंटित किया जाएगा, ताकि वे इस संकट से उबर सकें। प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महा अभियान के अंतर्गत 20 लाख किसानों को सोलर पंप के लिए अनुदान दिए जाएँगे। बंजर जमीन में सोलर पावर के लिए किसानों को सहायता दी जाएगी। किसान सोलर ऊर्जा सरकारी ग्रिड में दे सकेंगे। सोलर पंप के इस्तेमाल से खेती की लागत में कमी आएगी और सोलर ऊर्जा बेचकर किसान अच्छी रकम कमा पाएँगे।

रासायनिक खाद पर दी जाने वाली सब्सिडी में कमी की जाएगी। जिसका उद्देश्य है देशी खाद के इस्तेमाल को बढ़ावा देना। गाय के गोबर का महत्त्व वैज्ञानिकों ने भी सिद्ध कर दिया है। रासायनिक खाद पर्यावरण

प्रदूषण एवं विनाश के मुख्य कारणों में है, जमीन की उर्वरता को भी कुछ ही वर्षों में कम करने लगते हैं। देशी बीज, खाद एवं खेती के तरीके फिर से अपनाने की आवश्यकता है।

गाँवों में खाद्यानों के भंडारण की व्यवस्था न होने के कारण अधिकांश छोटे किसान फसल तैयार होते ही बेचने को मजबूर हो जाते हैं। ऐसे किसानों के उबारने के लिए सरकार ने ग्रुप फंडिंग के माध्यम से गाँवों में वेयरहाउस बनाने की योजना बनाई है। बड़ी संख्या में कोल्डस्टोरेज भी बनाए जाएँगे।

शीघ्र नष्ट होने वाले खाद्य पदार्थों के लिए रेल एवं हवाईजहाज यातायात की व्यवस्था की जाएगी। किसान रेल और कृषि उड़ान समय से खाद्य पदार्थों को बाजार तक पहुँचाने में मददगार होंगे। सिविल एविएशन मंत्रालय कृषि उड़ान की व्यवस्था उत्तर-पूर्व राज्यों के लिए विशेष रूप से करेगी। आदिवासी इलाकों को भी इसका लाभ होगा। कृषि पदार्थों के निर्यात को प्रोत्साहन दिया जाएगा। हर जिले में कृषि उत्पाद पर विशेष फोकस होगा, जिसके निर्यात को बढ़ावा दिया जाएगा।

किसानों को कम ब्याज पर ऋण के लिए बजट में 15 लाख करोड़ रुपए के आवंटन का प्रस्ताव है। नाबार्ड की रीफंडिंग योजना का भी विस्तार किया जाएगा। दुग्ध पदार्थों की उत्पादन क्षमता 53.5 मिलियन टन से बढ़ाकर 108 मिलियन टन करने का प्रस्ताव बजट में है। मछली उत्पादन को दो गुना करने का प्रस्ताव है, जिसका लक्ष्य 200 लाख टन रखा गया है। 100 लाख टन मछली निर्यात का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अगले पाँच वर्षों में इससे 1 लाख करोड़ रुपए के निर्यात की संभावना है। 3,477 सागर मित्र एवं 500 किसान उत्पादन संगठनों में नवयुवकों को शामिल करने की बृहत् योजना है।

किसान क्रेडिट कार्ड की योजना, जो 1998 में प्रारंभ की गई थी, 7 करोड़ किसान उसका लाभ उठा रहे हैं, अब 14 करोड़ किसानों को इसके दायरे में लाया जाएगा। प्रधानमंत्री किसान योजना को इससे संबद्ध किया जाएगा। किसान छोटी अवधि के लिए बीज, खाद, कीटनाशक दवाइयाँ एवं उत्पादनों के लिए अन्य वस्तुओं की खरीद के लिए बैंकों से कम दर पर आसानी से ऋण ले सकेंगे।

किसानों को उनके उत्पाद की उचित कीमत मिल सके, इसके लिए एग्रीकल्चरल प्राइसेस कमीशन की राय से सरकार समय-समय पर मिनिमम सपोर्ट प्राइस का ऐलान करती है। विभिन्न अनाजों तिलहन, कपास आदि कृषि पदार्थों के कीमत निर्धारण में किसान की लागत एवं अंतरराष्ट्रीय कीमतों का ध्यान रखा जाता है। किसानों से गल्ले की खरीद सरकार इसी कीमत पर करती है। सरकार पूरा उत्पाद खरीद नहीं पाती। छोटे किसानों को भंडारण की सुविधा के अभाव एवं आर्थिक तंगी के कारण फसल तैयार होते ही बेचनी पड़ जाती है, जब उन्हें न्यूनतम मूल्य भी कई बार नहीं मिल पाता। ओ.इ.सी.डी. एवं यूक्रियर की 2018 में प्रकाशित रिपोर्ट में कहा गया है कि 2001 से 2016 के बीच किसानों को सही कीमत न मिलने से 45 लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। सरकार ने इस स्थिति से निपटने के लिए कृषि मंडियों के व्यापक सुधार की योजना बनाई है। ई-कॉमर्स को बढ़ावा दिया जा रहा है, देश की सभी गल्ला मंडियों को नेट से जोड़ा जा रहा है। पूरा देश एक बाजार के रूप में हो जाए, ताकि किसान जहाँ से

गाँवों में खाद्यानों के भंडारण की व्यवस्था न होने के कारण अधिकांश छोटे किसान फसल तैयार होते ही बेचने को मजबूर हो जाते हैं। ऐसे किसानों के उबारने के लिए सरकार ने ग्रुप फंडिंग के माध्यम से गाँवों में वेयरहाउस बनाने की योजना बनाई है।

अच्छी कीमत मिले, वहाँ अपना उत्पाद बेच सकें। इस व्यवस्था का लाभ अभी अधिकतर बड़े किसानों को हो रहा है। इसके लिए इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास करने की आवश्यकता है और मंडियों के प्रबंध में व्यापक सुधार की आवश्यकता है, ताकि छोटे किसान भी इसका लाभ उठा सकें। सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। बजट में भी इसके लिए प्रावधान है। कृषि पदार्थों की कीमतों में गिरावट न हो, स्थिरिता रहे, इसके लिए भी बजट में धनराशि आवंटित है।

किसानों की आमदनी बढ़ाने (इनकम सपोर्ट) की योजना के लिए पिछले वर्ष के बजट में 1,51,518 करोड़ रुपए का आवंटन हुआ था, जो 2018-19 के मुकाबले में लगभग दूना था। खेती और उससे संबंध योजनाओं के लिए इस वर्ष बजट में 2.83 लाख करोड़ रुपए का प्रावधान है, जिसमें 75,000 करोड़ रुपए प्रधानमंत्री किसान योजना के लिए है। 15,695 करोड़ रुपए, फसल बीमा योजना के लिए, 2000 करोड़ रुपए कृषि पदार्थों की कीमतों को स्थिर रखने के लिए, 600 करोड़ रुपए, मशीनीकरण के लिए, 500 करोड़ रुपए प्रधानमंत्री आशा योजना के लिए, जिसमें 10,000 फार्म प्रोड्यूसर कंपनियाँ खोलने का प्रावधान है; 220 करोड़ किसान सम्मान निधि के लिए आवंटित किए गए हैं। प्रधानमंत्री किसान पेंशन योजना के लिए इस वर्ष के बजट में 500 करोड़ रुपए का प्रावधान है। इस योजना के अंतर्गत 19 से 40 वर्ष की आयु में जो लोग योजना में सम्मिलित होते हैं, उन्हें 60 वर्ष की उम्र होने पर आजीवन 3000 रुपए मासिक पेंशन की व्यवस्था है। प्रीमियम सामान्य है, ताकि अधिक-से-अधिक किसान योजना का लाभ उठा सकें।

जैविक खेती (ऑर्गेनिक फार्मिंग) को प्रोत्साहित करने के लिए एक पोर्टल बनाया गया है, जिसका उद्देश्य है ऑनलाइन राष्ट्रीय जैविक पदार्थों का बाजार विकसित करना। वर्ष में कई फसलें उगाने, मधुमक्खी पालने, सोलर ऊर्जा और सोलर पंप की सुविधा, खेती के देशी तौर-तरीकों को बढ़ावा देने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। गाँवों में स्टोरेज की सुविधा, जो बहुत दिनों से उपेक्षित थी, इस वर्ष के बजट की प्राथमिकताओं में है।

बजट में जिन 16 सूत्रीय कार्यक्रमों की योजना है, उनके कार्यालय के लिए प्रशासनिक कुशलता और चुस्ती की आवश्यकता है, अन्यथा उनका लाभ किसानों को उतना नहीं मिल पाएगा, जो अपेक्षित है। अर्थव्यवस्था में इस समय जो मंदी है। उसका बड़ा कारण है, किसानों की क्रयशक्ति में कमी। किसानों की आय बढ़ाए बिना अर्थव्यवस्था मंदी से उबर नहीं सकती। 2024-25 तक भारतीय अर्थव्यवस्था को डालर 5 ट्रिलियन तक ले जाने का लक्ष्य भी तभी पूरा होगा, जब किसानों की आय में तेजी से वृद्धि होगी।

संपर्क : 9810990008

जल–जीवन–हरियाली अभियान

मौसम अनुकूल कृषि – कम पानी में अधिक फसल

ड्रिप/ स्प्रिंकलर सिंचाई

वृक्षारोपण

चेकडैम

कंटूर बंडिंग

ऊपर बिजली, नीचे मछली

जैविक कृषि

बिहार सरकार

सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग द्वारा जनहित में जारी।

अल्पसंख्यक कल्याण

अल्पसंख्यक वर्गों का विकास

पुस्तकालय

अंजुमन इस्लामिया हॉल
का भावी स्वरुप

पुलिस सेवा की लिखित परीक्षा में पास
अभ्यर्थियों का प्रशिक्षण

- सभी जिलों में अल्पसंख्यक आवासीय विद्यालयों का निर्माण एवं संचालन।
- मदरसा शिक्षा सुदृढ़ीकरण योजना लागू।
- बिहार राज्य वक्फ विकास योजना के माध्यम से वक्फ सम्पत्ति का विकास।
- रोजगार हेतु मुख्यमंत्री अल्पसंख्यक रोजगार ऋण योजना लागू।
- तकनीकी एवं उच्चतर शिक्षा हेतु मुख्यमंत्री अल्पसंख्यक शिक्षा ऋण योजना संचालित।
- मुस्लिम परित्यक्ता सहायता योजना के अंतर्गत सहायता राशि 10 हजार से बढ़ाकर 25 हजार।

बिहार सरकार

सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग

बिहार सरकार

शिकायत का निवारण अब हो गया आसान

बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम

- 480 से अधिक योजना, कार्यक्रम एवं सेवाओं का लाभ पाने के लिए या उसके कार्यान्वयन के संबंध में शिकायत दर्ज की जा सकती है।
- 60 कार्य दिवसों की अधिकतम समय–सीमा के अंतर्गत सुनवाई एवं निवारण की निःशुल्क व्यवस्था है।
- निर्णय से असंतुष्ट रहने पर अपील के प्रावधान हैं। निवारण में रूचि नहीं लेने वाले कर्मियों पर दण्ड एवं अनुशासनिक कार्रवाई की जाती है।
- परिवादी तथा शिकायत का निराकरण करने वाले पदाधिकारी को आमने सामने बैठाकर सुनवाई की जाती है।
- 6.37 लाख शिकायतें दर्ज, 6.08 लाख का निष्पादन, शेष प्रक्रियाधीन। 89 प्रतिशत संतुष्ट परिवादकर्त्ता।

आप भी बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम के अंतर्गत अपनी शिकायत दर्ज कराएँ और निश्चित समाधान पाएँ।

शिकायत दर्ज कराने के लिए अपने नजदीक के **लोक शिकायत प्राप्ति केन्द्र** पर जाएँ या

निःशुल्क हेल्पलाईन नं.– 18003456284 पर कॉल करें

लोक शिकायत पोर्टल (http://lokshikayat.bihar.gov.in) पर लॉग ऑन कर भी परिवाद दर्ज किए जा सकते हैं।

हमसे जुड़िये

- https://m.youtube.com/channel/UCo1M0mez2mCF4gYPSU5jgsw
- https://www.facebook.com/BRPGRA/
- https://twitter.com/brpgra/Handle:@brpgra
- http://bpsm.bih.nic.in

क्यूआर कोड:

–: शिकायतें कैसे दर्ज करायी जा सकती हैं :–

- अनुमंडल, जिला एवं राज्य मुख्यालय में अवस्थित लोक शिकायत प्राप्ति काउंटर पर जाकर
- ऑनलाइन वेब पोर्टल: http://lokshikayat.bihar.gov.in
- टॉल फ्री नं: 1800 345 6284
- मोबाइल ऐप: 'जन समाधान'
- ईमेल: info-lokshikayat-bih@gov.in
- डाक द्वारा (संबंधित लोक शिकायत निवारण पदाधिकारी को)

बिहार प्रशासनिक सुधार मिशन सोसाईटी एवं सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग, बिहार द्वारा जनहित में प्रचारित।

शिकायत का निवारण हो गया आसान

बिहार सरकार

समाज कल्याण विभाग

बिहार सरकार की अनोखी पहल

मुख्यमंत्री वृद्धजन पेंशन योजना

"राज्य के सभी वृद्धजनों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से बिहार सरकार ने अभूतपूर्व निर्णय लेते हुए वृद्धजनों के लिए "मुख्यमंत्री वृद्धजन पेंशन योजना" लागू की है।"

कौन होंगे लाभुक :

राज्य के सभी वर्गों एवं सभी आय वर्ग के वृद्धजन जिन्हें केन्द्र/राज्य सरकार से कोई वेतन, पेंशन, पारिवारिक पेंशन या सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्राप्त नहीं हो रही हो, वैसे सभी वृद्धजन होगें लाभान्वित।

पेंशन राशि :

इस योजना के अन्तर्गत राज्य के 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वृद्धजनों को 400 रूपये प्रतिमाह तथा 80 वर्ष या उससे अधिक आयु होने पर 500 रूपये प्रतिमाह पेंशन दी जायेगी।

आवेदन की प्रक्रिया :

योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए प्रखण्ड कार्यालय के आर.टी.पी.एस. काउन्टर पर विहित प्रपत्र में आवेदन भरकर जमा करायें और पावती/रसीद अवश्य लें।

वृद्धजन पेंशन योजना की स्वीकृति अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा दी जाएगी।

लाभ प्राप्त करने के लिए आवश्यक दस्तावेज :

- विहित प्रपत्र में आवेदन(दो प्रतियों में रंगीन फोटो सहित)
- आधार कार्ड की स्वअभिप्रमाणित छाया प्रति
- बैंक खाता पासबुक की छाया प्रति (आई.एफ.एस.कोड सहित)
- आधार के उपयोग एवं बैंक सीडिंग से संबंधित सहमति पत्र

"वृद्धजनों को मिला सम्मान जिन्दगी उनकी हुई आसान"

पेंशन की राशि डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर (डी.बी.टी.)के माध्यम से आपके बैंक खाते में सीधे चली जायेगी।

अधिक जानकारी के लिए सहायक निदेशक, जिला सामाजिक सुरक्षा कोषांग / प्रखण्ड के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी / बुनियाद केन्द्र के जिला प्रबंधक से संपर्क कर सकते हैं।

स्त्री-अधिकार और सोशल मीडिया

सुभाष सेतिया
वरिष्ठ पत्रकार

अन्य क्षेत्रों की तरह सोशल मीडिया पर भी महिलाएँ बढ़-चढ़कर अपनी सक्रियता दिखा रही हैं। जाहिर है कि भाषा की आवश्यकता के कारण इसमें मुख्यतया शिक्षित महिलाएँ ही सक्रिय हैं। महिलाएँ न केवल अन्य महिलाओं के साथ बल्कि पूरे समाज के साथ संवाद स्थापित करते हुए अपनी भावनाओं, विचारों व दृष्टिकोण को दूसरों के साथ शेयर कर रही हैं।

हमारे देखते-देखते सूचना टेक्नोलॉजी के विकास और विस्तार ने हमारे जीवन में आमूल परिवर्तन ला दिया है। इंटरनेट ने समूचे सूचना तंत्र और मीडिया का कायापलट कर दिया है। पत्रकारिता अब सर्वतोन्मुखी हो गई है। पहले विचारों का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर अर्थात् वर्टिकल होता था, जबकि अब यह प्रवाह समानांतर रूप से यानी होरीजेंटल होने लगा है। इसका श्रेय तेजी से उभरते सोशल मीडिया को जाता है, जिसने हर व्यक्ति को पत्रकार व फोटोग्राफर बना दिया है। अखबारों व टी.वी. चैनलों से पहले ही आम जन की स्थानीय खबरें सोशल मीडिया पर उपलब्ध हो जाती हैं। इस सूचनाक्रांति ने समाज, राजनीति, अर्थशास्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे सभी बुनियादी पहलुओं को प्रभावित किया है। उल्लेखनीय बात यह है कि जनता से जनता तक पहुँचने की प्रक्रिया से गुजरने के कारण इस संचार की विश्वसनीयता मुख्यधारा के मीडिया से अधिक है। साथ ही मुख्यधारा के मीडिया और सोशल मीडिया का आपसी समन्वय तथा आदान-प्रदान भी बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। उदाहरण के लिए मुख्य धारा का मीडिया अपनी सूचनाएँ व खबरें सोशल मीडिया पर भी उपलब्ध कराता है और सोशल मीडिया में मुख्यधारा के मीडिया में प्रकाशित/प्रसारित सूचनाओं पर खुलकर चर्चा होती है और उनका सम्यक् विश्लेषण व मूल्यांकन भी होता है।

अन्य क्षेत्रों की तरह सोशल मीडिया पर भी महिलाएँ बढ़-चढ़कर अपनी सक्रियता दिखा रही हैं। जाहिर है कि भाषा की आवश्यकता के कारण इसमें मुख्यतया शिक्षित महिलाएँ ही सक्रिय हैं। महिलाएँ न केवल अन्य महिलाओं के साथ बल्कि पूरे समाज के साथ संवाद स्थापित करते हुए अपनी भावनाओं, विचारों व दृष्टिकोण को दूसरों के साथ शेयर कर रही हैं। सोशल मीडिया के सभी प्रमुख अंगों ब्लॉग, वेबसाइट, वाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि पर प्रकट होकर महिलाएँ निजी, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी प्रतिक्रिया व सुझाव प्रस्तुत करती हैं। इस सूचना प्रवाह की सहायता से महिलाओं के अधिकारों तथा उनके उत्पीड़न से जुड़े मुद्दों को प्रभावी ढंग से उठाया जाता है। ब्लॉग पर सक्रिय महिलाएँ लंबी टिप्पणियों, लेखों तथा फीचर के रूप में भारत और विश्व में महिलाओं की समस्याओं व कठिनाइयों पर समाज का ध्यान खींचती हैं। इसी तरह वाट्सएप में व्यक्तिगत तथा ग्रुप बनाकर बड़ी समस्याओं पर ही नहीं, रोजमर्रा के सामान्य कार्यों पर भी अनुभवों और विचारों का आदान-प्रदान होता है। मसलन, बहुत सी औरतें अपने वाट्सएप ग्रुप में बच्चों की समस्याओं, व्यंजनों की विधि, घर के रखरखाव और पारिवारिक शांति बनाए रखने के अपने अनुभव दूसरी महिलाओं से साझा करती हैं। महिला अधिकारों के लिए काम करने वाली अनेक स्वयंसेवी संस्थाएँ भी महिलाओं को वाट्सएप ग्रुपों की सदस्य बनाकर उनमें जागृति पैदा करके प्रेरित करती है। इसी तरह फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे मंचों पर भी महिलाएँ अपने अधिकारों

के समर्थन में तथा शोषण, उत्पीड़न तथा अन्याय के विरोध में तर्कपूर्ण एवं सचित्र संदेश और वीडियो अपलोड करके नारी सशक्तीकरण के अभियान को आगे बढ़ाने में सहयोग करती हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से महिलाएँ तो सोशल मीडिया का भरपूर इस्तेमाल कर ही रही हैं, महिला विकास को समर्पित सरकारी विभाग भी अपनी योजनाओं, कार्यक्रमों तथा नई अवधारणाओं की जानकारी पहुँचाने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। ये विभाग अपनी वेबसाइट के अलावा फेसबुक जैसे मंचों के माध्यम से भी अपनी बात संबंधित महिलाओं तक पहुँचाते हैं। इसी तरह लाभान्वित होने वाली महिलाओं की प्रतिक्रिया इन विभागों तक फीडबैक के रूप में प्राप्त होती हैं ,जिससे उन्हें महिला विकास तथा उत्थान की भावी योजनाएँ तैयार करने में मदद मिलती है।

सोशल मीडिया पर केवल महिला सशक्तीकरण या समाज में उन्हें सम्मानजनक स्थान दिलाने से जुड़े मुद्दों की ही चर्चा नहीं होती। सोशल मीडिया पर सक्रिय अनेक महिलाएँ अपनी कला, प्रतिभा तथा शिल्प की अभिव्यक्ति भी करती हैं। बड़ी संख्या में स्त्रियाँ अपनी कविताएँ, गजलें और कहानियाँ अपलोड करके अपनी आत्माभिव्यक्ति को स्वर देने के साथ-साथ लोगों का मनोरंजन करती हैं। अपने-अपने ब्लॉग तथा फेसबुक के माध्यम से वे अपनी रचनाएँ पाठकों को उपलब्ध कराती हैं। कवि या साहित्यकार महिलाएँ अब अभिव्यक्ति के लिए केवल पत्रिकाओं पर निर्भर नहीं हैं। कुछ महिला कथाकार अपने उपन्यास भी शृंखलाबद्ध रूप से प्रस्तुत कर रही हैं। महिलाएँ अपने नृत्य तथा गायन के वीडियो या उनकी सार्वजनिक प्रस्तुति के चित्र तथा वीडियो अपलोड करके अपनी कला का प्रदर्शन कर सकती हैं। महिलाएँ अपने सामूहिक कार्यक्रमों, पुस्तक विमोचन, पुरस्कार प्राप्ति या अन्य उपलब्धियों के समाचार व वीडियो भी सोशल मीडिया पर शेयर करती हैं। इससे उन्हें आत्मसंतोष प्राप्त होता है, सामाजिक मान्यता मिलती है और उनमें अपनी कला व प्रतिभा में निखार लाने की दिशा में और प्रयास करने का विश्वास पनपता है।

इस वास्तविकता से कोई इनकार नहीं कर सकता कि समाज में महिलाएँ कई तरह के भेदभाव, अन्याय तथा शोषण की शिकार हैं। उन्हें पुरुषों जैसी स्वतंत्रता और सत्ता प्राप्त नहीं है। सामाजिक कुरीतियों तथा यौन संबंधी दबावों के चलते उनमें असुरक्षा की भावना मौजूद रहती है, जो उनमें उदासी, अकेलापन व बेबसी जैसी भावनाओं को जन्म देती है। इससे बड़ी संख्या में महिलाओं, विशेषकर गृहणियों को अवसाद या डिप्रेशन से पीड़ित होने का खतरा बना रहता है। ऐसी महिलाओं के लिए सोशल मीडिया वरदान है। सोशल मीडिया पर वाट्सएप तथा मैसेंजर जैसे एप हमारी बातचीत व संदेशों को गोपनीय रखते हैं। इन पर अपलोड किए गए संदेश या पोस्ट केवल वही लोग देख-पढ़ सकते हैं, जिन्हें ये प्रेषित या फारवर्ड किए जाते हैं। महिलाएँ अपने मन की पीड़ा या व्यथा अपनी सहेलियों, बहनों या अन्य संबंधियों से शेयर करके अपने मन का बोझ हल्का कर सकती हैं। दुःख बाँटने से निश्चित रूप से कम होता है। सोशल मीडिया महिलाओं के लिए अपना दुःख बाँटने का अत्यंत प्रभावपूर्ण मंच है। इस माध्यम का उपयोग करके वे अवसाद या डिप्रेशन से बचने में सफल हो सकती हैं। जन्म-दिन, विवाह वर्षगाँठ, बच्चों की उपलब्धियाँ, किसी अपने की मृत्यु, बीमारी, जैसी दुःख-सुख की खबरें भी दूसरों से बाँट लेने से मन को शांति व सुकून प्राप्त होता है। जिन विषयों या घटनाओं की प्रत्यक्ष चर्चा करने में महिलाओं को संकोच होता है, सोशल मीडिया पर वे उनकी खुलकर चर्चा कर लेती हैं। मासिक धर्म, प्रसव, गर्भधारण, पति की नपुंसकता जैसे मुद्दों पर चर्चा करना औरतों के लिए निषिद्ध था, किंतु सोशल मीडिया ने 'टैबू' माने जाने वाले ऐसे सभी विषयों को चर्चा एवं संवाद के घेरे में ला दिया है। यही कारण है कि सोशल मीडिया पर सक्रिय होने वाली स्त्रियों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

सोशल मीडिया यदि महिला अधिकारों व स्वतंत्रता में सकारात्मक भूमिका निभा रहा है तो इसके अपने खतरे भी कम नहीं हैं। जिस गति से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ रही है, उसी गति से सोशल मीडिया के जरिए शोषण व ब्लैकमेल की शिकार होने वाली औरतों की सूची लंबी होती जा रही है। इसमें सबसे अधिक योगदान फेसबुक और वाट्सएप का है। प्रतिकूल सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश के कारण लड़कियाँ दूसरों की सहानुभूति व स्नेह से सहज ही पिघल जाती हैं और विश्वास करने लगती हैं। कई पुरुष लड़कियों की सरल प्रवृत्ति या पारिवारिक कलह व भेदभाव से मुक्ति पाने के लोभ का लाभ उठाकर उन्हें अपने जाल में फँसा लेते हैं। कई बार तो ऐसे बदमाश किसी लड़की के नाम व चित्र से जाली अकाउंट खोलकर लड़कियों के मित्र बन जाते हैं और फिर उनका शारीरिक व आर्थिक शोषण करते हैं। ऐसे बहुत से मामले सामने आए हैं, जिनमें विवाह की उम्र पार कर चुकी लड़कियों, विधवा या तलाकशुदा औरतों से मित्रता करके और उनसे शादी का झूठा वादा करके बदमाश लोग उनका शारीरिक व आर्थिक शोषण करते हैं या शादी करके उनकी धन-संपत्ति हड़प कर छूमंतर हो जाते हैं। कुछ पुरुष फेसबुक पर मित्रता से आगे बढ़कर लड़कियों को मिलने के लिए किसी स्थान पर बुलाते हैं और बलात्कार करके वीडियो बना लेते हैं, जिसे सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी देकर उनका शोषण करते रहते हैं। शहरों में ही नहीं, कस्बों में भी ऐसे अपराधों की संख्या बड़ी तेज़ी से बढ़ रही है। इसके अलावा सोशल मीडिया पर सक्रिय रहने की लत लग जाती है और लड़कियाँ पढ़ाई-लिखाई का समय सोशल मीडिया पर बरबाद करती हैं।

सच तो यह है कि किसी भी अन्य तथ्य की भाँति सोशल मीडिया के भी सकारात्मक व नकारात्मक दोनों पहलू हैं। इसके उपयोग में विवेक व सावधानी से काम लेना आवश्यक है। जहाँ ये महिलाओं को जागरूक बनाते व अपने अधिकारों व कर्तव्य की समझ पैदा करने में सहायक हैं, वहीं उनके शोषण व उत्पीड़न का शिकार होने का भी कारक सिद्ध हो सकता है। अतः सोशल मीडिया पर अति सक्रियता से बचने के साथ-साथ महिलाओं को इसका उपयोग करते हुए चौकसी व सावधानी बरतने की आवश्यकता है, ताकि पुरुष वर्चस्व वाले इस समाज में उनका शोषण न हो सके।

संपर्क : सी–302, हिंद अपार्टमेंट्स, प्लाट नं.–12, सेक्टर–5,
द्वारका, नई दिल्ली–75, मो.: 9910907662

होली के साथ बदले हैं लोकगीत भी

शारदा सिन्हा
प्रसिद्ध गायिका

शादी के बाद होली का अलग रूप मैंने पाया। सामाजिक व पारिवारिक रिश्तों को निभाते हुए होली किस तरह खेली जाती है, वह विवाह के बाद ही मैंने जाना। आज भले ही उस रूप में मैं होली नहीं खेल पाती, मगर मस्ती आज भी कर ही लेती हूँ। अपने कलाकार साथियों को बुलाकर या उनके घर जाकर गीत-संगीत का कार्यक्रम आज भी होता है।

होली सुनते ही सबसे पहले मस्ती की भावना जेहन में आती है। होली यानी मस्ती, हुड़दंग, हँसी-मजाक, रंग, पूआ, गुलाल सबकुछ। बचपन से यही सब देखते आए हैं। इस त्योहार में खान-पान पर खास जोर रहता है। गरीब-से-गरीब आदमी भी यदि तल कर पूआ न खा पाए, तो तवे पर सेंककर जरूर खाता है।

बचपन में होली का मुझे खासा इंतजार रहता था। गाँवों में होली एक अलग मिजाज के साथ खेली जाती थी। अगजा (होलिका-दहन) के बाद हम लोग सबसे पहले मिट्टी की होली खेलते थे। यानी थाल-कादों वाली होली। चिकनी मिट्टी को बरतन में घोलकर उसे एक-दूसरे पर उड़ेलते थे। कई बार इसमें हम रंग भी मिला देते थे। यह मान्यता थी कि मिट्टी से होली जरूर खेलनी चाहिए। घर के बड़े-बुजुर्ग साफ हिदायत दिया करते थे कि साल में कम से कम एक बार शरीर में मिट्टी जरूर लगनी चाहिए। मिट्टी की यह होली सुबह करीब नौ बजे तक होती थी, फिर हम रंग और पिचकारी लेकर निकल पड़ते थे। पूरी की पूरी पुड़िया हल्के पानी के साथ दूसरे को लगाते थे। ऐसा करने से रंग देर तक जमा रहता था। मुझे पोटीन (एल्युमिनियम पेंट के रंग) से डर लगता था, इसलिए जहाँ कहीं भी वह होली होती, मैं भाग जाती। पिचकारी भी हम खूब चलाते थे। आज तो कई नामों की और कई तरह की पिचकारियाँ बाजार में दिखती हैं। मगर उन दिनों लंबी वाली पिचकारी ही हुआ करती थी। पीतल वाली पिचकारी तो दो-तीन साल आराम से काम करती थी। तीसरी होली अबीर की होती थी, जो शाम को खेली जाती। बड़े-बुजुर्ग के पाँवों पर अबीर डाला जाता, तो हमउम्र लोगों को सिर से लेकर पाँव तक अबीर से नहा देते थे। उस वक्त 'जोगीरा' गाने वाले भी आते थे। दरवाजे पर वे गाते और खूब रंग-गुलाल उड़ता। बाकायदा जोगीरा गाने की प्रतियोगिता होती। माहौल बना रहता था। गायकों को इनाम दिया जाता था। अब तो ये सारी बातें बस यादों में रह गई हैं। वैसी मस्ती अब कहाँ होती? आज तो अपार्टमेंट्स में तीन तरह की उस होली की कल्पना ही मूर्खता है। अब तो सभी लोग एक जगह इकट्ठा होते हैं, और रंग या अबीर एक-दूसरे को लगाकर थोड़ी-बहुत मस्ती कर लेते हैं।

शादी के बाद होली का अलग रूप मैंने पाया। सामाजिक व पारिवारिक रिश्तों को निभाते हुए होली किस तरह खेली जाती है, वह विवाह के बाद ही मैंने जाना। आज भले ही उस रूप में मैं होली नहीं खेल पाती, मगर मस्ती आज भी कर ही लेती हूँ। अपने कलाकार साथियों को बुलाकर या उनके घर जाकर गीत-संगीत का कार्यक्रम आज भी होता है।

होली के साथ लोक-संगीत भी बदला है। पहले की तरह के गीत कम सुनाई देते हैं। अब ऐसे द्विअर्थी गीत

आने लगे हैं, जिनको सुना नहीं जा सकता। अब भाभी का ही उदाहरण लें। होली और भाभी का एक अलग संबंध है। मगर इस संबंध को भी नए गीतों में अश्लीलता के साथ परोसा जा रहा है। हमारी सभ्यता में भाभी को माँ का दर्जा मिला है। मैं यह नहीं कहती कि उनके साथ हँसी-मजाक न हो। मजाक हो, और होता भी है, पर इसकी एक सीमा भी है। लेकिन आज लगता है कि होली में मानो भाभी शब्द की गरिमा खत्म करने का लाइसेंस मिल गया है। अगर गीतों के बोल द्विअर्थी न भी हों, तो उसकी वीडियोग्राफी ऐसी होती है कि उसे परिवार के साथ नहीं देखा जा सकता। यह लोक-संगीत पर प्रहार ही है। हालाँकि सभी ऐसे हों, यह बात नहीं है। कुछ लोग हैं, जो पुरानी यादों को समेट रहे हैं। वैदिक काल से चला आ रहा ध्रुपद-धमाड़ गायन आज भी कायम है। जोगीरा भी नए रूपों में दिखने लगा है। हमें यह समझना होगा कि होली का मतलब है, रंग-गुलाल, खान-पान, मौज-मस्ती, स्वस्थ संबंध। अगर इन भावों के साथ गीत बनेंगे, तो वे काफी पसंद किए जाएँगे। मौजूदा दौर में सबकुछ खराब नहीं है। जरूरत है तो बस पारंपरिक गीतों के साथ आधुनिक प्रसंग की अच्छी बातों को समेटने की। **'रंग संग में, राम खेलत होरी, रंग संग में या फगुआ में गोपाल, होली खेले राधा संग'** में जैसे गीत आज नहीं सुनाई देते। क्या इस रीति को आगे ले जाने की जरूरत नहीं है?

बेशक बदलते वक्त के साथ होली का रूप बदला है। अब तो रंग भी नहीं, बस अबीर-गुलाल से ही काम निकल जाता है। कहीं-कहीं तो पानी ही काफी है। मगर पारंपरिक रूप में होली हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनी रहेगी। इसे दुनिया भर में अपने-अपने तरीके से मनाया जाता है और मनाया जाता रहेगा। भले ही यह सीमित हो जाए, पर उमंग और मस्ती की जो भावना इसमें है, वह हमेशा कायम रहनी चाहिए। उम्मीद यही है कि होली की जो खूबसूरती है, वह आगे और निखरेगी। मिथिला और ब्रज जैसी होली पूरे देश में खेली जाएगी। स्वस्थ प्रकृति और सुंदरता के साथ इस त्योहार को हम मनाएँ, यही कामना है।

(साभार)

होली के साथ लोक-संगीत भी बदला है। पहले की तरह के गीत कम सुनाई देते हैं। अब ऐसे द्विअर्थी गीत आने लगे हैं, जिनको सुना नहीं जा सकता। अब भाभी का ही उदाहरण लें। होली और भाभी का एक अलग संबंध है।

कविता

होली आ गई

■ भारती पांडे

फरफराई पौन, झूमी दिशाएँ
पुलकित हुआ रोम-रोम, चहक उठी फिजाएँ
स्नेहिल मेघों ने होले से कहा-
वृक्ष पादपों पर बौर आ गई...होली आ गई।
चेतना जाग्रत् हुई, मुसकराया सकल वन प्रांत
गदराया मधुमास कुसुम तरु फूले निशांत
आभा नंदन वन की तन-मन में छा गई... होली आ गई।
व्योम में पसर गया इंद्रधनुष ओर-छोर
जागो-जागो मौन भी हुआ मुखर
बादल और मादल में अहा! युगलबंदी हो गई... होली आ गई।
रंगों की मंजूषा लिए रंगराज आ गए
पंछियों के वृंदगान पंचम सुर छिड़े
भ्रमर-गुंजार कुंजन में भर गई... होली आ गई।
अबकी फाग मन मन अनुराग, गीत प्रतीत चहक उठे
देहनेह शब्द गीत गंध रस वर्ण सब झमक उठे
मरुभूमि में अहा! खुशहाली आ गई... होली आ गई।

संपर्क : 10 अरावली एन्क्लेव, जी.एम.एस. रोड, कांवली देहरादून (उत्तराखंड)

होली तेरे रंग अनेक...

शास्त्री कोसलेन्द्रदास

वैदिक संस्कृति ने होली को सर्वप्रथम देवता 'अग्नि' से मिलाया। धरती पर उपजे नए धान्य को ऐसे थोड़े खाया जाता है? जौ-गेहूँ की चमचमाती बालियों को 'अग्नि देवता' को समर्पित किया जाता है। यजुर्वेद ने नव सस्य से पैदा नए धान्य को 'वाज' कहा है। होली पर अग्नि-ज्वाला में 'वाज' की आहुति देकर फिर उन पकी हुई बालियों को प्रसाद रूप में ग्रहण करना है।

वासंती बयार की उमंग के साथ परंपरा को अपने भीतर समेटे होली आ रही है। होली सनातन पर्वों और त्योहारों में आनंद का सर्वश्रेष्ठ रसमय उत्सव है। क्या निर्गुण और क्या सगुण, होली के रंगों की छाप सब पर लगी है। वासंती माधुर्य दृष्टि का दूसरा नाम है- होली। रम्य और मधुर, दृश्य और श्रव्य। जीवन में ठहराव के बदले निरंतरता के रंग भरती है होली। होली सुंदरतम है, जिसमें सारा अमंगल मंगल बन जाता है एवं चितारूपी भस्म अलौकिक विभूति हो जाती है। वास्तव में होली संपूर्णता का उत्सव है, जो सामाजिक सामूहिकता का कारण है। इस नाते होली सहज और आत्मीय त्योहार है, जो आपसी खींचातानी को पाटकर आनंद के रंग बाँटती है। होली की आहट शुरू हो जाती है, फाल्गुन मास के शुरू में ही या यों कहिए कि मकर संक्रमण से ही, पर यह पूरी तरह व्यक्त होती है 'उत्तरा फाल्गुनी' नाम-संकेत को वहन करने वाली पूर्णिमा तिथि, यानी फाल्गुनी को। फाल्गुनी पर ही वसंत या मधु ऋतु, जो भी कहें पूर्ण अभिव्यक्ति पाती है। यह प्रकट होती है पके हुए अनाज के मीठे दानों में, आम की गदराई मंजरियों में, खिल उठी हरी घास में, रात-बिरात कूकती कोयल में और सबसे बढ़कर मधु बरसाती सुरम्य चाँदनी रातों में।

ऋषि और कृषि से जुड़ी होली

वैदिक काल से लेकर आज तक होली ऋषियों और कृषकों द्वारा मनाई जाती रही है। गुरुकुलों में वटुक फाल्गुनी पूर्णिमा को 'साम-गाम', यानी सामवेद के मंत्रों का राग और ताल में गान करते थे। सामवेद से जुड़े 'ताण्ड्य महाब्राह्मण' के इन मंत्रों का सीधा संबंध होली से है- **'गावो हाऽऽरे सुरभय इदम्मधु। गावो घृतस्य मातर इदम्मधु।।'** एक ओर गुरुकुलों में होली पर 'हुताशनी' अनुष्ठान होता है, वहीं नई फसल के तैयार हो जाने पर किसान और नागरिक चटकीली रंग-बिरंगी होली खेलते हैं।

वैदिक संस्कृति ने होली को सर्वप्रथम देवता 'अग्नि' से मिलाया। धरती पर उपजे नए धान्य को ऐसे थोड़े खाया जाता है? जौ-गेहूँ की चमचमाती बालियों को 'अग्नि देवता' को समर्पित किया जाता है। यजुर्वेद में नव सस्य से पैदा नए धान्य को 'वाज' कहा है। होली पर अग्नि-ज्वाला में 'वाज' की आहुति देकर फिर उन पकी हुई बालियों को प्रसाद रूप में ग्रहण करना है। यह 'नवधान्य-इष्टि' नाम का वैदिक यज्ञ है। फसल से जुड़ा होने के नाते होली जीवन को चलाने वाला उत्सव है। वेदों में वर्णित चार उत्सवों में होली भी है। यह जरूर है कि वैदिक काल में जो 'होलाका' थी, वह अब 'होली' है। 'काठक गृह्यसूत्र' ने होली को स्त्रियों के सौभाग्य वृद्धि के लिए संपन्न किया जाने वाला एक अनुष्ठान माना है, जिसके देवता चंद्रमा हैं। 'तंत्र शास्त्र' में फागुनी पूनम की रात 'दारुण रात्रि' है। यह साधना से सिद्धियों को प्राप्त करने की रात्रि है।

काम पुरुषार्थ से जुड़ी होली

होली मानव के तन-मन के भीतर छिपे 'रति-काम' को प्रदर्शित करने का समय है। काम मानव का मूल है। वह प्रेम में अपने को व्यक्त करता है। पंकिलता में छिपी

एक दिव्य 'चेतना' है, जो 'स्मर' शक्ति के रूप में प्रकट होती है। यह चेतना ही सिसृक्षा, सर्जना और सुखबोध या आनंद को प्रवाहित करती है। मात्र कामुकता, यौन आकर्षण आदि से यह बहुत बड़ी सत्ता है, कोई व्यक्तिगत काम-संवेदना, यानी अवदमित 'यौन वासना' नहीं। काम देवता के मंदिर हमारे हर प्राचीन नगर में होते थे। स्त्री-पुरुष इकट्ठे होकर होली पर काम देवता का पूजन करते थे। कदाचित् हमारे समाज का अधःपतन तब से शुरू हुआ, जब यहाँ 'कामाराधन' बंद हो गया और लोग काम को दबाने तथा छिपाने लगे। परंपरा से होली काम पूजन और दीपावली अर्थ-पूजन का दिन रहा है।

उल्लास और आनंद बाँटती होली

भारतरत्न से सम्मानित डॉ. पांडुरंग वामन काणे ने 'धर्मशास्त्र के इतिहास' में होली को भारत में सबसे बड़े उल्लास और आनंद का उत्सव माना है। होली को मनाने में पूरे देश में भिन्न-भिन्न मान्यताएँ और भावनाएँ हैं। बंगाल को छोड़कर होलिका-दहन प्रायः सर्वत्र होता है। बंगाल में फाल्गुन पूर्णिमा पर श्रीकृष्ण का झूला प्रसिद्ध है। यह भी कम आश्चर्य की बात नहीं है कि होली पर रंग खेलने की अवधि भी पूरे देश में अलग-अलग है। कहीं रंगीली बौछारें होली के अगले दिन बरसती हैं। कहीं पाँचवें दिन तो कहीं आठवें दिन और कहीं पूरे पखवाड़े तक ही। मस्ती से सराबोर लोग एक-दूसरे के रंग लगाते हैं, तो साथ में रंग घुले जल की बौछारें भी एक-दूसरे पर छोड़ते हैं; पर इन सबके पीछे जो पारंपरिक गूढ़ धार्मिक तत्त्व छिपा है, वह है पुरोहितों द्वारा होलिका पूजा और श्रीकृष्ण का गोपियों के साथ होली खेलना।

संस्कृत और प्राकृत में होली

होली का एक पुराना साहित्यिक वर्णन सातवीं सदी के संस्कृत नाटककार और कन्नौज के महाराज हर्षवर्धन ने अपने 'रत्नावली' संस्कृत नाटक में किया है। वहाँ हो रही होली 'वसंतोत्सव' है। स्थान है कौशांबी, आज से ढाई हजार साल पुराना एक सुंदर शहर। कौशांबी के राजा उदयन अपने किले पर खड़े होकर सारी प्रजा को विभिन्न रंगों से होली खेलते देख प्रमुदित हो रहे हैं। स्त्रियाँ होली खेलने में व्यस्त हैं। कुंकुम से भरी मुट्ठियाँ आकाश में उड़कर लाल बादल बना रही हैं। कहीं-कहीं पीले गुलाल से बने बादल यों लग रहे हैं, मानो वे स्वर्ण के ही बादल हों। इधर राजमहल के भीतर होली यों जमी है कि मदमस्त लोग पिचकारियों से एक-दूसरे पर सुगंधित जल डाल रहे हैं, जिससे महल में भारी कीचड़ मच गई है। मतवाली कामिनियों के मस्तक का सिंदूर पानी के साथ बहकर नीचे तक फैल गया है। हर्षवर्धन ने पिचकारी का संस्कृत नाम दिया है- श्रंगक। कौशांबी में दिन भर नाच-गान चलता है और फिर साँझ में लोग जुटते हैं, कामदेव के पूजन के लिए। राजा उदयन अपने 'मकरंद-उद्यान' में लगे लाल अशोक के वृक्ष में कामदेव या प्रद्युम्न के विग्रह का पूजन करते हैं। नागरिक कामदेव के मंदिर में जाकर उन्हें पूजते हैं तथा दांपत्य में 'अंतरंगता' बढ़ाने की याचना करते हैं।

प्राकृत में पहली शताब्दी के लगभग लिखी 'गाहा सतसई' ने होली को 'वसंतोत्सव' न कहकर 'फाल्गुनोत्सव' कहा है। यहाँ के 'फाल्गुनोत्सव' में नदी किनारे इकट्ठे युवक-युवतियाँ एक-दूसरे पर बिना किसी भेदभाव के नदी का कीचड़ उछाल रहे हैं। 'गाहा सतसई' की होली गाँव की है। अतः गाँवों के सारे संसाधन होली खेलने के काम आते हैं।

देशज भाषाओं में रंग-बिरंगी होली

लोक साहित्य में होली का मनोहारी व सजीव वर्णन हुआ है। पिछली शताब्दी के रससिद्ध संस्कृत कवि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने 'जयपुरवैभव' में एक ही श्लोक में उर्दू, ब्रज, ढूंढाडी व संस्कृत, चार भाषाओं का अनूठा प्रयोग होली के लिए किया है, जो दुर्लभ है-

मौसिमे बहार देख खोला मुँह बुलबुलों ने
आतिशये हिज्र का निकाला इश्क ने शोला
दूधिया छनाओ यार! नीठ नरचोला मिल्यो
बोलाभर पीके फिर बोलो बस बम भोला।
आओला कदेक, कद गाओला रंगीली फाग
ढोला! कद गोराजी ने हिवडै लगाओला
मानिनामनङ्गेनाऽद्य दोलामधिनीतं मनो
नो लास्यं दधाति रसिकानां किमसौ होला?।।

होली में वसंत की महक और फागुन की मस्ती का रसीला वातावरण ऐसा रूप धरता है कि डफ, ढोल, चंग, नगाड़े, सभी साज-सजीले होकर जनमानस की उमंगों के संग स्वतः ही बजने लगते हैं। जरा इधर देखिए, ब्रज की रंगीली गलियों में रस भरी होली हो रही है। रंग-बिरंगे परिधानों में सजी गोपियों का समूह छैल-छबीले कन्हैया का अनुराग-रस पीने निकल पड़ा। होली की धमा-चौकड़ी से सारा ब्रज पुलकित हो उठा। होली पर गोकुल गाँव में बेचारी बाहर की कोई नई वधू आई। भला वो क्या जाने कन्हैया की होली के रीति-रिवाजों को! जिधर भी जाए, उधर ही होली का ऊधम। कन्हैया तो जगह-जगह ठिठोली करते फिर रहे हैं। संत नागरीदास ने इसका बड़ा सुंदर चित्रण किया है-

जाऊँ कहाँ जितही निकसौं तितही लखिए अति ऊधम भारी
गावत गारी ठठोल ठगी सुतनंद को छंद भरो है धुतारी।
रंगनि सौं भरि देत है अंगनि नागरिया बस नांह हमारौ

और हूँ गाँव सखी बहुतैं पर गोकुल गांम कौ पैड़ो ई न्यारौ।।

श्रीकृष्ण पिचकारी लेकर हम सभी जीवों को अपने आनंदरस के रंग में रँगने हेतु मोर्चा सँभाले बैठे हैं। जब उनकी आनंद की पिचकारी सतरंगी धार छोड़ेगी तो भला क्या मजाल कि कोई बचकर निकल जाए! ऐसी धार पड़े कि एक ही पिचकारी में जन्म-जन्मांतर तक रंगीले हो जाएँ।

निर्गुणियों की निराकार होली

निर्गुणियों की होली में आदिम रंग का गहरा चमत्कार है। उनकी होरी नाच-गान और धूम-धड़ाके से दूर है। नाम जप को महत्त्व देने वाले निर्गुणी संप्रदायों के लिए यह पर्व भागवत महापुराण के प्रह्लाद उपाख्यान से जुड़ा है। वे मानते हैं कि संसार में प्रह्लाद ने भगवान के नाम जप पर विश्वास कर अनूठी निष्ठा प्रकट की। उपनिषदों के निरंजन ब्रह्म का मौलिक वर्णन है उज्ज्वल श्वेत, यानी सीधा सपाट। कोई चटकीला, भड़कीला नहीं। शंकराचार्य जैसे अद्वैती आचार्य उसे सब गुणों से रहित भले माने हैं, पर वह बड़ा निराला। रामानुजाचार्य और वल्लभाचार्य का रसिया भक्तों से रागात्मक संवाद करता है। महात्मा कबीर, दादू, गुरु जंभेश्वर, रामचरण और ब्रह्मानंद जैसे निर्गुणियों के साथ सगुण भक्तिधारा की मीरां ने होरी की लाली को भीतर तक उतारा।

ब्रह्मानंद के कन्हाई ऐसी अजीब होली मचा देते हैं, जिसका अचरज भारी है- एक समय श्रीकृष्ण प्रभु को होली खेलने की मन में आई। पर अकेले होली नहीं खेली जा सकती, इससे उन्होंने 'बहुताई' प्रकट कर दी। पाँच महाभूतों से एक पिचकारी बनाई, जिसमें चौदह भुवनों के रंग भरकर उनकी सृष्टि कर दी। पाँच ज्ञानेंद्रियों के विषय यानी रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श की गुलाल बनाकर बीच ब्रह्मांड में उड़ाई। जिन-जिन की आँखों में यह गुलाल पड़ा, उनकी सुध-बुध जाती रही। उन्हें कुछ सूझ ही नहीं पा रहा है।

विश्नोई संप्रदाय जो एक प्रकार से प्रह्लादपंथी है, होली की रात को शोक मनाता है। गुरु जांभोजी ने कहा, 'प्रह्लाद से वाचा कीन्हीं, आयो बारां काजै', अर्थात् प्रह्लाद भक्त को दिए वचनानुसार लोगों के कल्याण के लिए वे धरती पर प्रकट हुए हैं। भक्त प्रह्लाद विश्नोइयों के आदिगुरु हैं। विश्नोइयों में होलिका दहन नहीं किया जाता। उनकी

निर्गुणियों की होली में आदिम रंग का गहरा चमत्कार है। उनकी होरी नाच-गान और धूम-धड़ाके से दूर है। नाम जप को महत्त्व देने वाले निर्गुणी संप्रदायों के लिए यह पर्व भागवत महापुराण के प्रह्लाद उपाख्यान से जुड़ा है। वे मानते हैं कि संसार में प्रह्लाद ने भगवान के नाम जप पर विश्वास कर अनूठी निष्ठा प्रकट की। उपनिषदों के निरंजन ब्रह्म का मौलिक वर्णन है उज्ज्वल श्वेत, यानी सीधा सपाट। कोई चटकीला, भड़कीला नहीं।

मान्यता है कि होलिका भक्त प्रह्लाद को मारना चाहती है, इस कारण सबमें शोक छाया हुआ है। शोक से निवृत्ति के लिए विश्नोई-जन होली की रात जागरण और प्रह्लाद चरित का पाठ करते हैं। सिर्फ खिचड़ी खाते हैं। लालासर, बीकानेर के स्वामी सच्चिदानंद बताते हैं कि होली के दूसरे दिन शोक निवारण करने के लिए यज्ञ होता है, जिसमें 'पाहल' तैयार किया जाता है। 'पाहल', यानी यज्ञ वेदी के ईशान कोण में रखा जलकुंभ। इस जलकुंभ का इस्तेमाल शोक निवृत्ति के साथ ही साल में एक बार ही होने वाले सामाजिक सद्भाव के लिए किया जाता है। आपसी मनमुटाव को दूर करने के लिए पाहल हाथ में देकर नाराज लोगों का समझौता करवाया जाता है।

रामस्नेही संप्रदाय में होली पर 'फूलडोल' होता है। दादू के शिष्य जनगोपाल के लिखे प्रह्लाद चरित का रात्रि में पाठ होता है। फूलडोल से तात्पर्य 'देवन आए पुष्प बरसाए, ताते फूलडोल कहाए' है, जिसका मतलब है कि भक्त प्रह्लाद के अग्नि में न जलने पर उनके भक्ति के चमत्कार से अभिभूत होकर देवताओं ने उन पर पुष्प बरसाए, यही फूलडोल है। संत साहित्य के विद्वान ब्रजेंद्रकुमार सिंहल बताते हैं, रामस्नेही संप्रदाय के संस्थापक आचार्य रामचरण ने नाम महिमा के सर्वोत्तम आचार्य के रूप में भक्त प्रह्लाद के प्रति श्रद्धा प्रकट की है। भीलवाड़ा में ढाई शताब्दी पहले उन्होंने होरी की धमार लिखी, 'राम राम प्रह्लाद पुकारै, असुरन कूं नहीं भावै हो। हिरणाकुस की हाक न मानै प्रेम मगन गुण गावै हो'। दूसरी अद्भुत धमार देखिए, 'राम राम प्रहलाद उचारे, होरी जरि भइ छारा हो। जै जै कार भयो हरिजन के, रामबिमुख मुख कारा हो।' यह है निर्गुण धारा का चमत्कार, जिसमें होली की आध्यात्मिक ऊँचाई अनूठी है।

मीरां की होली शील और संतोष की केसर घोलकर प्रेम की पिचकारी से भिगोती है। गुलाल के उड़ने से सारा गगन लाल हो गया है, जिस पर विधाता का रंग उड़ रहा है। मीरां होली के चार दिनों को असाधारण रूप से प्रकट कर रही है- 'फागुन के दिन चार रे होली खेल मना रे!' श्याम रंग में रंगी मीरां की चुनरिया को श्याम पिया खुद रँगने आता है। अब भले बदलते परिवेश की काली परछाईं आत्मा से जुड़ी परंपरा के इन अनूठे रंगों को बदरंग करने पर तुली है, परंतु यह रंग तो ऐसा है, जिसे बिना आँखों वाले सूरदास भी पहचानते हैं- सूरदास की काली कमरिया चढ़त न दूजो रंग!

(सहायक आचार्य राजस्थान संस्कृत विवि जयपुर)
संपर्क : मो.: 9214316999

बिहार फाउंडेशन : परिचय एवं उद्देश्य

मनोज सिंह राजपूत
सं. प्रवक्ता बिहार फाउंडेशन मुंबई

बिहार फाउंडेशन, बिहार सरकार के उद्योग विभाग, बिहार के एक संकल्प (संख्या 4433, दिनांक 24 नवंबर, 2006) द्वारा स्थापित किया गया था। बाद में, ग्लोबल मीट फॉर ए रिसर्जेंट बिहार (19-21 जनवरी, 2007) में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सुझावों के बाद, इसे 27 जुलाई, 2007 को उद्योग विभाग, बिहार सरकार के तहत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत किया गया था।

बिहार का समृद्ध एवं गौरवशाली इतिहास है। इतिहास की बात करें तो बिहार के इतिहास के बिना भारत का इतिहास अधूरा है। धर्म की बात हो तो बुद्ध और जैन धर्म की स्थली के रूप में पूरी दुनिया में जाना जाता है। यहीं नहीं सिक्खों के दशवें गुरु गोविन्द सिंह जी की जन्मस्थल है बिहार। दुनिया को पहला लोकतंत्र देनेवाला राज्य है अपना बिहार। जब शिक्षा की बात आती है तो नालंदा विश्वविद्यालय को कौन नहीं जनता।

बिहार फाउंडेशन का गठन

बिहार फाउंडेशन, बिहार सरकार के उद्योग विभाग, बिहार के एक संकल्प (संख्या 4433, दिनांक 24 नवंबर, 2006) द्वारा स्थापित किया गया था। बाद में, ग्लोबल मीट फॉर ए रिसर्जेंट बिहार (19-21 जनवरी, 2007) में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सुझावों के बाद इसे 27 जुलाई, 2007 को उद्योग विभाग, बिहार सरकार के तहत एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत किया गया था।

बिहार फाउंडेशन की शाखाएँ

बिहार फाउंडेशन ने देश एवं विदेशों में प्रवासी बिहारियों को जोड़ती और उन्हें बिहार सरकार बिहार फाउंडेशन के चैप्टर के रूप में मान्यता देती है। अबतक 21 चैप्टर खोले जा चुके हैं।

इन 21 अध्यायों में से 12 देश के बाहर फैले हुए हैं, जो सऊदी अरब, यूएई, कतर, बहरीन, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, हांगकांग, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा और जापान हैं, जबकि 9 अध्याय देश के भीतर चल रहे हैं। ये हैं मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, पुणे, वाराणसी, नागपुर, सूरत।

हमारे 21वें चैप्टर गोवा को 28 जनवरी, 2020 को लॉच्च किया गया और इसका उद्घाटन माननीय मंत्री, उद्योग विभाग, सरकार एवं गोवा की पूर्व गवर्नर मृदुला सिन्हा द्वारा किया गया। देश के उत्तर-पूर्व के गुवाहाटी एवं सिक्किम में आगामी मार्च 2020 में बिहार फाउंडेशन के चैप्टर खोलने की तैयारी चल रही है।

मुख्य उद्देश्य

बिहार फाउंडेशन के तीन मुख्य उद्देश्यों को निम्नानुसार सूचीबद्ध किया गया है :

बॉण्डिंग – बिहार के डायस्पोरा के साथ नेटवर्क बनाना और आपसी संबंध को और अधिक मजबूत करना।

ब्रांडिंग – विशेष रूप से आम जनता और एनआरबी के बीच बिहार की एक सकारात्मक और उज्ज्वल छवि को सामने लाना।

व्यवसाय – निवेश के लिए बिहार को पसंदीदा स्थान बनाने के लिए बिहार के यूएसपी को लक्षित करके उन्हें निश्चित करना।

- **सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से बिहार की ब्रांडिंग**– बिहार फाउंडेशन अपने उद्देश्य के अनुरूप,

सोशल मीडिया टूल्स के माध्यम से ब्रांड 'बिहार' को बढ़ावा देने और प्रचारित करने की दिशा में काम कर रहा है।

- वर्तमान में इसका लक्ष्य बिहार के खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त करने और पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया को तेज करना है।
- **पत्रिका** – बिहार फाउंडेशन बिहार की कला, संस्कृति और विरासत को बढ़ावा देने के साथ-साथ राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले नवीनतम विकास को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए एक मासिक पत्रिका 'मन में बिहार' प्रकाशित कर रहा है। इन जर्नलों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में बनाया और वितरित किया जाता है, ताकि प्रवासी बिहारियों तक विशेष रूप से पहुँच बनाई जा सके, जो विश्व स्तर पर फैले हुए हैं।
- **वीडियो का विकास** – बिहार फाउंडेशन ने विभिन्न विषयों पर 5 वीडियो विकसित किए हैं। कॉर्पोरेट वीडियो, धार्मिक सद्भाव, व्यंजन, महिला सशक्तीकरण, बिहार की कला।
- **बिहार में 2 खंडों में पुस्तक का विकास** – बिहार फाउंडेशन ने बिहार में 2 खंडों में पुस्तक का विकास नाम के साथ किया है।

बिहार फाउंडेशन के अध्यायों द्वारा किया गया महत्वपूर्ण पहल

- अमित कुमार (सचिव, ऑस्ट्रेलिया चैप्टर) द्वारा 2014 में फोर्ब्सगंज में मोती बाबू इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के नाम से विश्व स्तरीय इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना।
- मुंबई चैप्टर के प्रयास से पाटलिपुत्र में 2014 में श्रेनुज एंड कंपनी डायमंड कटिंग फैक्टरी की स्थापना।
- मुंबई चैप्टर बिहार के उन कैंसर रोगियों को भी मदद और सुविधा देता है, जो टाटा मेमोरियल अस्पताल में इलाज के लिए मुंबई आते हैं। बिहार मित्र मंडल के साथ मिलकर नेरुल (नवी मुंबई) में 40 रोगियों के लिए आवास के साथ कैंसर के रोगी के लिए एक भवन का निर्माण किया।
- मुम्बई अध्याय परियोजना का संचालन कर रहा है- अपर्णा, फतुआ में प्रस्तावित चमड़े का हब, जिसमें रुपए का निवेश आकार है। 43.6 करोड़ तथा 2000 श्रमिकों को रोजगार सृजन।
- Kainat International School, 2009 में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पैतृक गाँव में है, जो सीबीएससी से संबद्ध है।
- श्री ओबैदुर रहमान, अध्यक्ष सऊदी अरब चैप्टर ने लगभग 500 बिहारियों को अगस्त, 2016 के बाद उनके घर वापस पहुँचने में मदद की।
- बिहार फाउंडेशन यूएसए ने 2018 में श्री साईं लायंस नेत्रालय में ऑपरेशन सहित अपने गृह राज्य में निःशुल्क नेत्र देखभाल उपचार प्रदान करने के उद्देश्य से एक स्वास्थ्य परियोजना के लिए 15,000 अमरीकी डॉलर जुटाए हैं।

बिहार फाउंडेशन कार्यकारी समिति

श्री सुशील कुमार मोदी उपमुख्यमंत्री, बिहार अध्यक्ष।
श्री श्याम रजक मंत्री, उद्योग विभाग कार्यकारी अध्यक्ष।
श्री अरुण कुमार विकास आयुक्त, बिहार सचिव, सदस्य।
श्री नर्मदेश्वर लाल औद्योगिक विकास आयुक्त, बिहार, सदस्य।
डॉ. सिद्धार्थ वित्त आयुक्त, बिहार, सदस्य।

बिहार फाउंडेशन बिहार की कला, संस्कृति और विरासत को बढ़ावा देने के साथ-साथ राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले नवीनतम विकास को बढ़ावा देने में मदद करने के लिए एक मासिक पत्रिका 'मन में बिहार' प्रकाशित कर रहा है। इन जर्नलों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में बनाया और वितरित किया जाता है, ताकि प्रवासी बिहारियों तक विशेष रूप से पहुँच बनाई जा सके, जो विश्व स्तर पर फैले हुए हैं।

श्री मनीष कुमार वर्मा सचिव, योजना और विकास विभाग, सदस्य।
श्री उदय सिंह कुमावत प्रमुख सचिव, विभाग पर्यटन, सदस्य।
श्री रवि मनुभाई परमार प्रमुख सचिव, कला, संस्कृति और युवा विभाग, सदस्य।
श्री आर.एस. श्रीवास्तव मुख्य कार्यकारी अधिकारी, बिहार फाउंडेशन, सदस्य, सी.ई.ओ।

बिहार फाउंडेशन गवर्निंग बॉडी

श्री नीतीश कुमार मुख्यमंत्री, बिहार - संरक्षक।
श्री सुशील कुमार मोदी, उपमुख्यमंत्री, बिहार - अध्यक्ष।
श्री श्याम रजक मंत्री, उद्योग विभाग, कार्यकारी अध्यक्ष।
श्री के. एन. प्रसाद वर्मा, मानव संसाधन विकास मंत्री, बिहार - सदस्य।
श्री मंगल पांडे स्वास्थ्य मंत्री, बिहार - सदस्य।
उपाध्यक्ष, योजना बोर्ड बिहार - सदस्य।
श्री दीपक कुमार मुख्य सचिव, बिहार - सदस्य।
श्री अरुण कुमार विकास आयुक्त, बिहार-सदस्य सचिव।
श्री नर्मदेश्वर लाल औद्योगिक विकास आयुक्त - सदस्य।
डॉ. सिद्धार्थ वित्त आयुक्त, बिहार - सदस्य।
श्री उदय सिंह कुमावत, प्रमुख सचिव, पर्यटन विभाग - सदस्य।
श्री रवि मनुभाई परमार प्रधान सचिव, कला, संस्कृति और युवा विभाग- सदस्य।
श्री आर.एस. श्रीवास्तव मुख्य कार्यकारी अधिकारी, बिहार फाउंडेशन- सदस्य।

सभी प्रवासी बंधुओं के सहयोग एवं मार्गदर्शन से बिहार फाउंडेशन अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। विशेष जानकारी के लिए बिहार फाउंडेशन के वेबसाइट www.biharfoundation.bihar.gov. पर देख सकते हैं।

संपर्क : 9867311511

पटना : गंगा के घाटों का कायाकल्प

■ उत्कृष्ट गौरव

पटना के घाटों के सौंदर्यीकरण की बात तब पहली बार सामने आई जब आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व यहां बनारस के घाटों की तर्ज पर गंगा आरती की शुरुआत हुई। गंगा आरती सर्वप्रथम रविवार की संध्या शुरू हुई और अब यह प्रत्येक शनिवार और रविवार को गाँधी घाट पर हुआ करती है। कुछ अन्य घाटों पर भी इसे शुरू किया गया लेकिन वह बहुत दिन तक कायम नहीं रह पाया।

अगर आपको पटना में गंगा के घाटों की सैर बहुत किए दिन हो गए तो एक बार यहाँ आने का कष्ट करिए, यकीन जानिए आप चौक जाएंगे, हतप्रभ रह जाएगें, सहसा आपको यकीन नहीं होगा कि आप पटना के उसी गंगा के तट पर हैं, जो किसी जमाने में झाड़-झंखाड़, गंदगी, सीलन और बदबू के लिए जाना जाता था। छठ पर्व के मौके पर कुछ दिनों को छोड़कर साल भर पटना के घाटों का यही आलम था। सुबह के समय स्नान-ध्यान के वक्त को छोड़कर दिन चढ़ते ही पटना के घाट जुआरियों, शराबियों और अपराधियों से आक्रांत रहता था। और शाम ढलते ही यहाँ पूरी तरह से अंधेरे का साम्राज्य हो जाता था।

लेकिन यह बीते जमाने की बात है। हाल के वर्षों में बिहार में बहुत कुछ बदला है और इसी बदलाव की कड़ी में पटना के घाटों का भी कायाकल्प हो चुका है। सफाई, सौंदर्य व सुरक्षा के मामले में पटना के किसी भी मोहल्ले से पटना के गंगा घाट मुकाबला करते हैं बल्कि उससे आगे निकल चुके हैं। अब यहाँ सुबह हो या शाम, दोपहर हो या रात, हर वक्त शांति है, सुरक्षा है, हरियाली है। अब यह एक ऐसा स्पॉट है, जहाँ हर वक्त लोग आना चाहते हैं। अब हर वक्त यहाँ लोगों की चहल-पहल बनी रहती है। विशेषकर सुबह और शाम तो अब यह पटना के लोगों की पसंदीदा मॉर्निंग वाक और ईवनिंग वाक स्पाट है। क्या महिलाएं, क्या बच्चे, क्या बूढ़े और क्या युवा सब मौका मिलते ही पटना के घाटों की ओर चल पड़ते हैं। यहाँ बैठने की सुविधा है, पढ़ने की सुविधा है, टहलने की सुविधा है।

पटना के घाटों के सौंदर्यीकरण की बात तब पहली बार सामने आई जब आज से लगभग 15 वर्ष पूर्व यहाँ बनारस के घाटों की तर्ज पर गंगा आरती की शुरुआत हुई। गंगा आरती सर्वप्रथम रविवार की संध्या शुरू हुई और अब यह प्रत्येक शनिवार और रविवार को गाँधी घाट पर हुआ करती है। कुछ अन्य घाटों पर भी इसे शुरू किया गया, लेकिन वह बहुत दिन तक कायम नहीं रह पाया। इसी क्रम में आरती वाले घाटों की साफ-सफाई स्वयं सेवी संगठनों की मदद से शुरू हुई। जिसमें नगर निगम ने मदद की। कुछ सांसदों ने और विधान पार्षदों ने पटना के घाटों के समीकरण के लिए अपने कोष से निधि उपलब्ध कराई। लेकिन पटना के घाटों की सफाई की प्रगति तब हुई, जब इसे 'नमामि गंगे' परियोजना से जोड़ा गया। सरकारी फंड से एक के बाद एक पटना के सभी घाटों की सूरत बदलने लगी। सीढ़ियां बनी, लोगों के बैठने के लिए चबूतरे भी बने और आज लगभग 10 किलोमीटर तक ऐसी खूबसूरत सड़क बन गई, है जिस पर लोग सुबह शाम टहलते हैं। घाटों पर शौचालय बनाए गए, फूलों की क्यारियाँ लगाई गयी, वृक्ष लगाए गए, सुंदर पेंटिंग्स बने और इन सब की व्यवस्था नगर निगम ने अपने जिम्मे ले लिया। विशेषकर सुरक्षा और सफाई का जिम्मा उसने बखूबी निभाया है।

पटना नगर निगम के वार्ड 48 के पार्षद और सशक्त समिति के सदस्य इंद्रदीप चंद्रवंशी कहते हैं कि

पटना के उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी और पटना नगर निगम की मेयर सीता साहू ने पटना के घाटों को दुरुस्त करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इसका लाभ अब शहरवासियों को मिलने लगा है। घाटों की सफाई को लेकर लोगों का नजरिया भी बदला है।

अब पटनावासी अपनी पूजा सामग्री गंगा नदी में नहीं डालते। अगर वह ऐसा करते हैं, नगर निगम के तैनात सुरक्षाकर्मी उन्हें रोकते हैं।

धीरे-धीरे पटना के घाट पर्यटक स्थल के रूप में विकसित हो गया है। गांधी मैदान के पास नवनिर्मित ज्ञान भवन और बाबू बापू सभागार के समीप गंगातट पर निर्मित सभ्यता द्वार इसका एक बेमिसाल नमूना है।

सभ्यता द्वार हमें अतीत के उस गौरवशाली दौर में ले जाता है जब पाटलिपुत्र अंतरराष्ट्रीय व्यापार का केंद्र था। द्वार के उत्तरी और दक्षिणी हिस्से में भगवान बुद्ध, महावीर, सम्राट अशोक और मेगास्थनीज के विचार उत्कीर्ण हैं, जो प्राचीन बिहार के ज्ञान को इंगित करते हैं। सभ्यता द्वार के सामने स्थापित सम्राट अशोक की प्रतिमा यहाँ आने वालों को जीवन में हिंसा पर अहिंसा की विजय, शक्ति में संयम, शौर्य में शील और शासन में संतुष्टि के प्रति प्रेरित करती है। यह अशोक के हृदय परिवर्तन का अनुपम उदाहरण है। यहाँ स्थापित वैशाली का अशोक स्तंभ, स्वतंत्र देश की राष्ट्रीय पहचान है। इसकी अनुकृति उसकी याद दिलाती है, जो सदियों तक बिहार का इतिहास भारत का इतिहास रहा है।

गंगा नदी के किनारे दीघा से दीदारगंज तक इक्कीस किलोमीटर के बीच चार लेन वाला मैरिन ड्राईव का कार्य भी प्रगति पर है। इसके बन जाने से राजधानी में गाड़ियों का दबाव आधे से भी कम रह जाएगा। इस पथ के काम की शुरुआत वर्ष 2013 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की जयंती के अवसर पर 11 अक्टूबर को हुई थी। यह गंगा पथ एक तरह से पटना के रिंग रोड का काम करेगा। जिससे 5 नेशनल हाईवे जुड़ जाएंगे साथ ही पटना को ट्रैफिक जाम की समस्या से निजात दिलाएगा।

माना जा रहा है कि आमतौर से दीघा से दीदारगंज आने में इन दिनों जो 2 घंटे का वक्त लगता है वह दूरी महज 20 मिनट में पूरी हो जाएगी।

यानी कुल मिलाकर पटना के गंगा घाट आपको यहाँ आने को लुभा रहा है। और यदि आप बिहार से जुड़े हैं, बिहार के संस्कृति से आप को लगाव है तो आप अब पटना के गंगा घाटों की सैर करने से अपने को नहीं रोक सकते।

संपर्क : सुपरटेक कैपटाउन, सेक्टर– 74, नोएडा– 201301, मो : 8294 661 201

कविता

मन में उतरा वसंत

■ जनार्दन मिश्र

जब हरा-भरा रहता है मन
कँटीली झाड़ियों में
खिले फूलों की ओर
बढ़ते हाथों को
काँटों की चुभन का एहसास नहीं होता
सर्द ऋतु की बर्फीली हवाएँ भी
तन-मन को फुलकित कर देती हैं
दूसरों के अधरों पर खिलती मुसकराहट
अपनी लगती है,
हर खिला चेहरा अपना लगता है
रास्ते के नुकीले पत्थर
बढ़ती रफ्तार को कम नहीं कर पाते
इसलिए कहता हूँ
मित्रो!
वसंत, पहले पेड़-पौधों पर नहीं आता
वह तो सीधे मन में उतरता है
और मन में उतरा वसंत
जिधर देखो
छा जाता है।

संपर्क : मो.: 9953950778

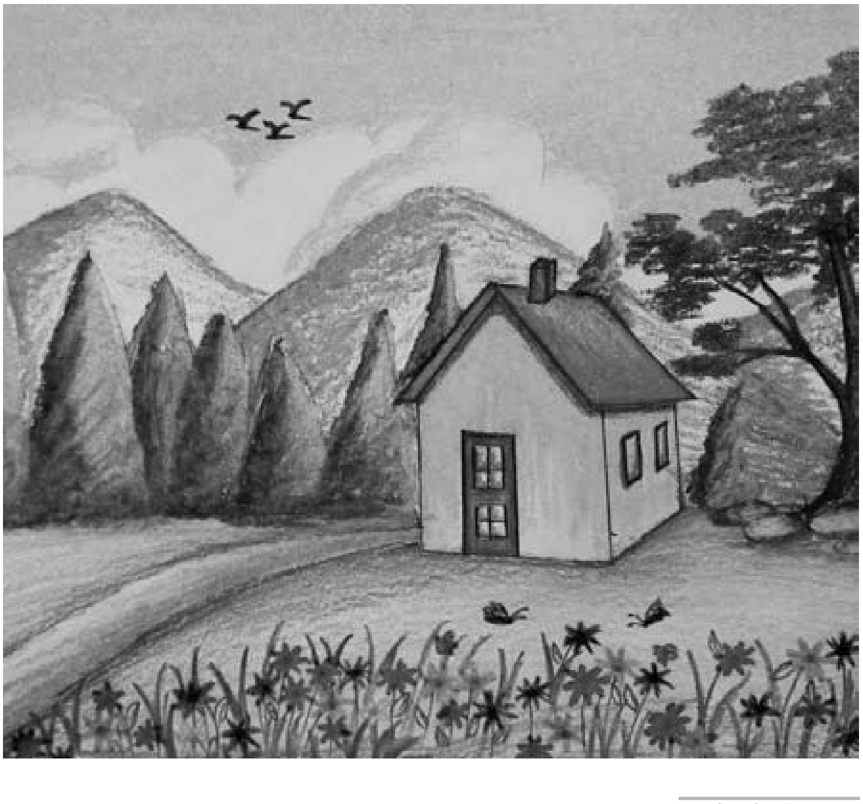

गरुड़ों का संरक्षण कर रही युवाओं की टोली

पौराणिक मान्यताओं में ये भगवान विष्णु का वाहन माने जाते हैं। बौद्ध धर्म में भी गरुड़ों का महत्त्व है। कदवा के ग्रामीण इनसे इतने भावनात्मक रूप से जुड़े हैं कि एक बार सड़क बनाने के लिए पेड़ काटने की नौबत आई, तो विरोध कर दिया। गरुड़ों ने सबसे पहले 2006 में यहाँ अपना बसेरा बनाया था, जब पहली बार इन्हें चिह्नित किया गया।

बिहार के भागलपुर में स्थानीय युवाओं के माध्यम से वन एवं पर्यावरण संरक्षण की एक अनूठी पहल की गई है। इसमें युवाओं की स्वैच्छिक भागीदारी है, इसके लिए उन्हें कोई भुगतान नहीं किया जाएगा। यह पहल वन विभाग ने की है। युवा उन एक-एक पेड़ों को गोद लेंगे, जिस पर गरुड़ों का बसेरा है। वे गिरकर घायल हो जाते हैं, तो अस्पताल पहुँचाएँगे। साथ ही उनकी रक्षा भी करेंगे, ताकि कोई उन्हें चुराकर न ले जा सके। भागलपुर के नवगछिया के कदवा दियारा में पक्षियों की प्रजातियों में दुर्लभ माने जाने वाले गरुड़ अच्छी खासी संख्या में हैं। ये असम में भी पाए जाते हैं, लेकिन देश में भागलपुर सर्वाधिक गरुड़ों वाला केंद्र बन चुका है। विदेश की बात करें तो कंबोडिया में भी पाए जाते हैं।

पौराणिक मान्यताएँ भी हैं

पौराणिक मान्यताओं में ये भगवान विष्णु का वाहन माने जाते हैं। बौद्ध धर्म में भी गरुड़ों का महत्त्व है। कदवा के ग्रामीण इनसे इतने भावनात्मक रूप से जुड़े हैं कि एक बार सड़क बनाने के लिए पेड़ काटने की नौबत आई, तो विरोध कर दिया। गरुड़ों ने सबसे पहले 2006 में यहाँ अपना बसेरा बनाया था, जब पहली बार इन्हें चिह्नित किया गया।

यहाँ का वातावरण अनुकूल

इनका मुख्य आहार मछली, साँप और केकड़ा है, जो गंगा और कोसी के बीच होने के कारण प्रचुर मात्रा में मिल जाता है। यही वजह है कि यह इलाका गरुड़ों का प्रजनन केंद्र बन चुका है। अब यहाँ साढ़े पाँच सौ से अधिक गरुड़ घोंसला बनाकर रह रहे हैं। पिछले वर्ष तक 130 घोंसले थे, जो इस वर्ष 155 के करीब हैं। मार्च में अंडे से बच्चा निकलेगा। एक मादा गरुड़ एक बार में दो से चार अंडे तक देती है। इस तरह दो महीने बाद गरुड़ों की संख्या में 400 से अधिक वृद्धि होने की उम्मीद है।

लगाए जाएँगे पाँच हजार से अधिक पौधे

कदंब, पाकड़, पीपल, सेमल आदि पेड़ों पर गरुड़ के घोंसले हैं। ऊँचे होने के कारण ये पेड़ गरुड़ों के लिए सुरक्षित और अनुकूल हैं। इस वर्ष कदवा दियारा में पाँच हजार से अधिक कदंब, पाकड़, पीपल और सेमल के पौधे लगाए जाएँगे। गरुड़ों के साथ तनिक भी छेड़छाड़ हुई तो वे भाग जाते हैं। लेकिन कदवा दियारा में प्रचुर भोजन, जलवायु और सुरक्षा के कारण वे यहाँ के मुरीद हो चुके हैं।

देश का पहला पुनर्वास केंद्र

भागलपुर के सुंदरवन में 2014 में देश का पहला गरुड़ पुनर्वास केंद्र खोला गया था, जो अब काफी समृद्ध हो चुका है। यहाँ घायल गरुड़ों को लाकर उनका इलाज किया जाता है और ठीक होने पर वापस दियारा क्षेत्र में छोड़ दिया जाता है।

कोसी कदवा दियारा दुर्लभ पक्षियों का बसेरा बनता जा रहा है। पक्षियों को यहाँ की आबोहवा पसंद आ रही है। संख्या बढ़ने का प्रमुख कारण भोजन, जलवायु और सुरक्षा है।

रिपोर्ट : अरविंद मिश्रा, पक्षी विशेषज्ञ (साभार : दैनिक जागरण पॉजिटिव न्यूज)

प्लास्टिक के बदले सैकड़ों बच्चों को मुफ्त शिक्षा और खाना दे रहा है यह स्कूल!

प्लास्टिक के कचरे को इकट्ठा कर स्कूल के गेट के पास रखे डस्टबिन में डालने के अलावा बच्चे सड़क के दोनों ओर लगे 2,000 पौधों को पानी भी देते हैं।

■ निशा डागर/बेटर इंडिया

बिहार के गया में सेवाबीघा गाँव के पद्मपनी स्कूल में हर सुबह स्कूल यूनिफार्म में अच्छे से तैयार बच्चों को आप स्कूल में अंदर आने से पहले ढेर सारा कचरा डस्टबिन में डालते हुए देखेंगे।

पहली नजर में आपको शायद लगे कि यह यहाँ का कोई अजीब रिवाज है। पर हकीकत में, इस कचरे के बदले स्कूल के 250 छात्रों को मुफ्त में शिक्षा, किताबें, स्टेशनरी, यूनिफॉर्म और यहाँ तक कि खाना भी दिया जाता है। इस अनोखी पहल को शुरू किया है स्कूल के फाउंडर मनोरंजन प्रसाद समदरसी ने।

'द बेटर इंडिया' से बात करते हुए मनोरंजन ने बताया, ''यहाँ इन इलाकों में पर्यावरण के प्रति सजगता बहुत ही कम है। ये बच्चे बहुत ही गरीब घरों से आते हैं और ज्यादातर अपने परिवार की वह पहली पीढ़ी है, जो कि पढ़ाई कर रही है। इसलिए हमने इस पहल को शुरू किया, ताकि बच्चों को कम उम्र से ही साफ-सफाई और पर्यावरण-अनुकूल जैसे कॉन्सेप्ट समझा सकें।''

एक समय था, जब आस-पास के गाँवों को स्कूल से जोड़ने वाली कच्ची सड़क पर आपको सिर्फ कचरा दिखाई पड़ता था। इसकी वजह से हानिकारक कीड़े और जीव-जंतु इस इलाके में पनपने लगे थे और वे अकसर पास के खेतों में जाकर फसल आदि को खराब कर देते थे। बारिश के मौसम में यह इन्फेक्शन फैलाने वाले मक्खी-मच्छरों का घर हो जाता था।

ग्राम पंचायत और गाँव के लोगों ने इस स्थिति को सुधारने के लिए कुछ नहीं किया। इसलिए मनोरंजनजी ने तय किया कि वे अपने छात्रों को बदलाव के सारथी बनाएँगे। इसी के तहत पहली कक्षा से आठवीं कक्षा तक के बच्चों को सड़क को साफ रखने की जिम्मेदारी दी गई।

उन्होंने बताया, ''शुरू में कचरा उठाने के विचार से ही बच्चों में काफी प्रतिरोध था। फिर मैंने शांति से उन्हें समझाया कि अपने आस-पास के इलाके को साफ रखना कितना जरूरी है। फिर धीरे-धीरे वे इस गतिविधि में भाग लेने के लिए उत्साहित हो गए।''

तब से ही, हर दिन सभी छात्र रास्ते में पड़ी प्लास्टिक की बोतल, रैपर और ज्यादातर सूखे कूड़े को इकट्ठा करके स्कूल के बाहर रखे डस्टबिन में डाल देते हैं। बाद में इस कचरे को अलग-अलग करके रीसाइक्लिंग यूनिट को दे दिया जाता है। साथ ही, स्कूल के छात्र भी अपने स्तर पर छोटा-मोटा रीसाइकल प्रोजेक्ट करते हैं, जैसे कि प्लास्टिक की बोतलों में पौधे लगाना आदि।

उनके प्रयासों की वजह से अब रास्ता ज्यादा चौड़ा और एकदम साफ दिखने लगा है। यह देखकर बच्चों का आत्म-विश्वास भी बढ़ा है। कचरा इकट्ठा करने के अलावा इस स्कूल के छात्रों ने उसी रास्ते के दोनों तरफ 2,000 पौधे भी लगाए हैं। वे रोज स्कूल आते समय इन पौधों को पानी देते हैं। उनका उद्देश्य 2021 तक स्थानीय गाँवों में पाँच हजार पौधे लगाना है।

इन गतिविधियों के अलावा मनोरंजन ने क्षेत्र में व्यक्तिगत रूप से कई सामाजिक पहल की हैं। उन्होंने आसपास के सूखाग्रस्त गाँवों में 275 हैंडपंप लगवाए हैं। साथ ही उनके चारों तरफ की चारदीवारी को बड़ा किया है, ताकि महिलाएँ स्नान कर सकें। वे उन मृतकों का अंतिम संस्कार करने में भी मदद करते हैं, जिनके परिवार वाले लकड़ियों की कीमत नहीं चुका सकते हैं।

बिना किसी दिखावे के, मनोरंजन एक सकारात्मक सोच को बढ़ावा दे रहे हैं। इन बच्चों की उनकी सेना उनके सभी सामाजिक-पर्यावरणीय प्रयासों की प्रेरक शक्ति है। वह एक ऐसे भविष्य की कल्पना करते हैं, जहाँ ये बच्चे बड़े होकर आदर्श नागरिक बनेंगे और अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए एक उदाहरण बनेंगे।

(साभार)

पद्म पुरस्कार 2020 :
आठ विभूतियों ने बढ़ाया बिहार का मान

महान वैज्ञानिक आइंस्टीन के 'सापेक्षता' के सिद्धांत को चुनौती देने वाले महान गणितज्ञ डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह को मरणोपरांत भारत सरकार पद्मश्री सम्मान से देने की घोषणा हुई है। भोजपुर जिला के जगदीशपुर निवासी स्व. सिंह ने नेतरहाट से मैट्रिक किया था। पटना साइंस कॉलेज में उन्होंने इंटर में टॉप किया। पढ़ने में इतने तेज थे कि पटना विवि प्रशासन ने उनके लिए नियम में बदलाव किया।

बिहार और बिहार से संबंध रखने वाले विभिन्न क्षेत्रों की आठ विभूतियों को इस वर्ष पद्म पुरस्कारों से नवाजा गया है। राजनीतिज्ञ जॉर्ज फर्नांडिस को जहाँ मरणोपरांत 'पद्म विभूषण' सम्मान मिला है, वहीं अन्य सात को 'पद्मश्री' के लिए चुना गया है। ये सभी अपने-अपने क्षेत्र की नामचीन हस्तियाँ हैं। सुजय कुमार गुहा, जहाँ विज्ञान के क्षेत्र में बिहार का झंडा बुलंद कर रहे हैं, वहीं शांति जैन, श्याम सुंदर शर्मा कला, विमल कुमार जैन, रामजी सिंह सामाजिक क्षेत्र, जबकि शांति राय चिकित्सा के क्षेत्र में बिहार का नाम रोशन कर रही हैं। इनके अलावा प्रसिद्ध विज्ञानी आइंस्टीन के सिद्धांत को चुनौती देने वाले महान गणितज्ञ डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह को भी मरणोपरांत पद्म अलंकरण मिला है।

डॉ. वशिष्ठ ने आइंस्टीन के सिद्धांत को दी थी चुनौती

महान वैज्ञानिक आइंस्टीन के 'सापेक्षता' के सिद्धांत को चुनौती देने वाले महान गणितज्ञ डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह को मरणोपरांत भारत सरकार पद्मश्री सम्मान से देने की घोषणा हुई है। भोजपुर जिला के जगदीशपुर निवासी स्व. सिंह ने नेतरहाट से मैट्रिक किया था। पटना साइंस कॉलेज में उन्होंने इंटर में टॉप किया। पढ़ने में इतने तेज थे कि पटना विवि प्रशासन ने उनके लिए नियम में बदलाव किया। स्नातक फाइनल परीक्षा में उन्होंने टॉप किया। इसके बाद पीजी में दाखिला लिया। हालाँकि बाद में विदेश चले गए थे। वर्ष 1969 में कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी से पीएचडी की और वॉशिंगटन विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर बन गए। कुछ समय नासा में भी काम किया। उनके गाइड जॉन केली ने अपनी बेटी के साथ विवाह प्रस्ताव दिया, जिसे डॉ. सिंह ने अस्वीकृत करते हुए कहा था कि मुझे अपने देश भारत जाना है। देश की सेवा करनी है। अपने देश के लिए जीना और मरना। 1971 में डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह वापस भारत लौट आए। शादी के बाद उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ने लगी। बाद में 1974 में मानसिक रोग से ग्रसित होने के बाद राँची स्थित मानसिक आरोग्यशाला में उन्हें भर्ती कराया गया। बिहार सरकार ने उनका इलाज कराया। 74 वर्ष की उम्र में 14 नवंबर, 2019 को उनका निधन हो गया।

आठ बार बिहार से लोकसभा पहुँचे थे जॉर्ज

कर्नाटक के मंगलौर में तीन जून, 1930 को जनमे जॉर्ज फर्नांडिस का बिहार से गहरा नाता रहा है। बिहार से वे आठ बार चुनाव जीत कर लोकसभा में पहुँचे थे। इनमें पाँच बार मुजफ्फरपुर तो तीन बार नालंदा लोकसभा सीट से चुनाव जीते थे। मुजफ्फरपुर से सबसे पहले 1977 में जब वह चुनाव जीते तब जेल में थे। बिहार से एक बार वे राज्यसभा भी गए। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में उन्होंने वर्ष 1998 से 2004 तक रक्षा मंत्री का पद सँभाला। इसी बीच 1999 कारगिल युद्ध हुआ, जिसमें भारत ने पाकिस्तान को शिकस्त दी। 1989 से 90 तक वह रेल मंत्री रहे। इसके अलावा कई अन्य मंत्रालय भी उन्होंने सँभाले। वर्ष 1994 में उन्होंने समता पार्टी का गठन किया। एनडीए के लंबे समय तक संयोजक भी रहे। जॉर्ज फर्नांडिस ऑल इंडिया रेलवे फेडरेशन के अध्यक्ष भी रहे। उनके अध्यक्ष रहते ही रेलवे में सबसे लंबी हड़ताल हुई थी। वे 18 साल की उम्र से ही सोशलिस्ट पार्टी और ट्रेड यूनियन की गतिविधियों में हिस्सा लेने लगे थे।

यह सम्मान बिहार के कलाकारों का सम्मान है : प्रो. श्याम शर्मा

प्रो. श्याम शर्मा मूलतः उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के गोवर्धन गाँव के रहनेवाले हैं। इनका जन्म 1941 में हुआ था। ये पिछले कई दशक से बिहार में रह रहे हैं। इनका मूल नाम श्याम सुंदर शर्मा है। ये कला एवं शिल्प महाविद्यालय पटना के प्राचार्य भी रह चुके हैं। 1998 में इन्हें राष्ट्रीय ललित कला अकादमी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, तो वर्ष 2012 में बिहार सरकार ने इन्हें अबुल कलाम शिक्षा सम्मान भी दिया था। कई अंतरराष्ट्रीय छापाकला प्रदर्शनियों में इनकी

पेंटिंग पुरस्कृत हो चुकी है। नीदरलैंड, फिनलैंड, सर्बिया, अमेरिका सहित कई देशों में कला-यात्रा कर चुके हैं। सफेद साँप (कविता-संग्रह), स्याह, देखा-देखी बात (नाटक के संस्मरण), गांधी और सूक्तियाँ, काष्ठ छापाकला, चित्र परंपरा और बिहार, पटना कलम सहित दर्जनों पुस्तकें लिख चुके हैं।

पद्मश्री सम्मान मिलने पर खुशी जताते हुए उन्होंने कहा कि यह सम्मान बिहार के कलाकारों का सम्मान है। वर्षों की कला साधना का सम्मान है। कला के प्रति नियमित सृजन का फल है, जो पुरस्कार बिहार के एक छापा कलाकार को मिला है।

बिहार की कला को मिला सम्मान है : डॉ. शांति जैन

पद्मश्री सम्मान से नवाजी गईं डॉ. शांति जैन का जन्म चार जुलाई, 1946 को आरा में हुआ था। एचडी जैन कॉलेज आरा में संस्कृत की विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुई हैं। वह पिछले कई दशक से पटना में रह रही हैं। डॉ. शांति जैन को वर्ष 2009 में संगीत नाटक अकादमी का राष्ट्रीय सम्मान मिला था, तो मध्य प्रदेश सरकार ने 2008 में राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान दिया था। वह मानव संसाधन विकास, साहित्य सम्मेलन, हिंदी प्रगति समिति, अल्पसंख्यक आयोग, भाषा साहित्य परिषद् सहित कई संस्थानों की सदस्य रह चुकी हैं। हिंदी साहित्य के साथ-साथ लोक साहित्य में विशिष्ट कार्य करने के लिए चर्चित हैं। कई दर्जन किताबें लिख चुकी हैं।

बिहार गौरव गान लिखनेवाली डॉ. शांति जैन को लोक साहित्य पर विशेष कार्य करने के लिए पद्म पुरस्कार मिला है। सम्मान की घोषणा के बाद कहा कि सम्मान मिलने की खुशी है, लेकिन यह थोड़ी देर से मिला। सम्मान मिलने के बाद लोगों का ध्यान जाता है, यह अच्छी बात है। वास्तव में यह बिहार का सम्मान है। बिहार की कला का सम्मान है। सम्मान हमारे अंदर उत्साह भरता है। इससे ऊर्जा मिलती है।

सम्मान मिलने के बाद जिम्मेवारी भी बढ़ गई है : डॉ. शांति राय

बिहार की प्रतिष्ठित स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. शांति राय ने 'पद्मश्री' मिलने पर खुशी जताई। उन्होंने कहा कि इस सम्मान के लिए सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ। साथ ही इस सम्मान को विनम्रतापूर्वक स्वीकार भी करूँगी। सम्मान मिलने के बाद जिम्मेवारी भी बढ़ गई है। जमीनी स्तर पर आगे भी और बेहतर तरीके से काम करूँगी।

डॉ. शांति राय 1962 में पीएमसीएच से मेडिकल की पढ़ाई पूरी की थी। उसके बाद पीएमसीएच में ही स्त्री एवं प्रसूति विभाग में विभागाध्यक्ष के तौर पर अपनी सेवाएँ दे चुकी हैं। इसके अलावा सामाजिक क्षेत्र में भी स्वास्थ्य को लेकर, खासकर महिलाओं को जागरूक करने का प्रयास हमेशा करती रहीं। इससे पहले डॉ. शांति राय को कई बार लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड भी मिल चुका है।

विमल जैन ने तीस हजार दिव्यांगों को दिया सहारा

समाज-सेवा के क्षेत्र में विमल जैन की ख्याति है। खासकर भारत विकास विकलांग न्यास के महासचिव के तौर पर उन्होंने दिव्यांगों के पुनर्वास के क्षेत्र में काफी काम किया है। उन्होंने तीस हजार से अधिक दिव्यांगों को कृत्रिम अंग दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। पोलियो से ग्रसित आठ हजार लोगों की सर्जरी करवाई है। वे दधीचि देहदान समिति बिहार के महासचिव भी हैं। इसके अलावा दर्जनों सामाजिक संस्थाओं से वे जुड़कर समाज सेवा में सक्रिय हैं।

बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के संस्थापकों में एक हैं प्रो. सुजय गुहा

पद्मश्री से सम्मानित होने वाले प्रो. सुजय कुमार गुहा का जन्म पटना में 1940 में हुआ था। उन्होंने आईआईटी खड़गपुर से बीटेक और एमटेक किया था। बाद में इलीनोइस विवि से भी मास्टर की डिग्री हासिल की। सेंट लुइस यूनिवर्सिटी से मेडिकल फिजियोलॉजी में पीएचडी की। फिर उन्होंने बायोमेडिकल इंजीनियरिंग सेंटर की स्थापना की। दिल्ली विवि से एमबीबीएस की डिग्री भी हासिल की। वे देश में बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के संस्थापकों में से एक हैं। ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा के लिए रिप्रोडक्टिव मेडिसिन और तकनीक विकसित करने में उन्होंने अहम योगदान दिया। वे 2003 में आईआईटी खड़गपुर में चेयर प्रोफेसर बने।

हिन्दी और अंग्रेजी में 60 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं गांधीवादी रामजी सिंह ने

'पद्मश्री सम्मान' से नवाजे गए प्रो. रामजी सिंह का जन्म 1927 में मुंगेर जिले के जमालपुर थाना के इंदुख गाँव में हुआ है। वह तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर रहे हैं। बाद में वह राजस्थान स्थित जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के कुलपति बने। वह देश के बड़े गांधीवादी माने जाते हैं। उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में करीब 60 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। वह जैनिज्म में पीएचडी के अलावा गांधी विचार और हिन्दुइज्म में डीलिट की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने गांधी विचार में शिक्षा प्राप्त करने वाला एशिया में पहला केन्द्र भागलपुर में गांधी विचार विभाग स्थापित किया। उन्होंने 1977 के आम चुनाव में भागवत झा आजाद को एक लाख 86 हजार मतों से हराकर भागलपुर से सांसद बने थे। ©पाँ.स्तं.

पद्मश्री सम्मान से नवाजी गईं डॉ. शांति जैन का जन्म चार जुलाई, 1946 को आरा में हुआ था। एचडी जैन कॉलेज आरा में संस्कृत की विभागाध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त हुई हैं। वह पिछले कई दशक से पटना में रह रही हैं। डॉ. शांति जैन को वर्ष 2009 में संगीत नाटक अकादमी का राष्ट्रीय सम्मान मिला था, तो मध्य प्रदेश सरकार ने 2008 में राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान दिया था। वह मानव संसाधन विकास, साहित्य सम्मेलन, हिंदी प्रगति समिति, अल्पसंख्यक आयोग, भाषा साहित्य परिषद् सहित कई संस्थानों की सदस्य रह चुकी हैं। हिंदी साहित्य के साथ-साथ लोक साहित्य में विशिष्ट कार्य करने के लिए चर्चित हैं। कई दर्जन किताबें लिख चुकी हैं।

पहला सत्याग्रही : प्रह्लाद

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी

> हद तो तब हो गई, जब एक दिन उसने प्रह्लाद को कुम्हार के आवे में रखकर चारों ओर से आग लगवा दी। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका उस आवे में प्रह्लाद को गोद में लेकर बैठी थी। होलिका के शरीर में आग का असर नहीं होता था। हिरण्यकशिपु ने सोचा, प्रह्लाद जल जाएगा और होलिका सही–सलामत निकल जाएगी।

हिरण्यकशिपु एक राक्षस राजा था। उसके आतंक से सारी पृथ्वी काँपती थी। जहाँ सुनता कि कोई तपस्या कर रहा है, उसका सिर धड़ से उड़ा देता। उसके डर से आदमी डरते, उसके डर से देवता डरते। भगवान् का नाम सुनकर ही वह जल उठता। सत्य का तो मखौल उड़ाता।

कैसा आश्चर्य! ऐसे ही राक्षसराज के घर में एक बालक उत्पन्न हुआ, जिसमें सत्य के लिए अपूर्व प्रेम था। जो भगवान् का भक्त था। जिसका मन बचपन से ही ज्ञान-ध्यान की ओर लगा रहता, जिसके हृदय में तपस्वियों के लिए श्रद्धा और भक्ति थी।

हिरण्यकशिपु को जब मालूम हुआ कि उसका बेटा उसी के घर में उसकी इच्छा के प्रतिकूल काम कर रहा है, तो वह जलभुन उठा। उसके अपने बेटे को बुलाया, जिसका नाम प्रह्लाद था। उसके आते ही वह कड़ककर बोला–

''प्रह्लाद, मैंने क्या सुना है, तू ज्ञान-ध्यान की बातें करता है? मेरे घर में रहकर तू भगवान् की उपासना करता है? तू सत्य-सत्य की रट लगाता रहता है? ऋषि-मुनियों के प्रति तू श्रद्धा प्रकट किया करता है? बोल, क्या ये बातें सही हैं?''

''हाँ, पिताजी, आपने जो कुछ सुना है, सब सही है।'' प्रह्लाद ने बड़ी नम्रता के साथ कहा।

''यह नहीं हो सकता! तू मेरा बेटा है। तुझे मेरी तरह रहना चाहिए। खा, पी, मौज कर। तपस्या वे करते हैं, जिन्हें अपनी भुजाओं पर विश्वास नहीं। देवता या भगवान् उनके लिए हैं, जिनके हृदय में न साहस हो, न शरीर में बल। मेरा पराक्रम देख। तुझमें मेरा रक्त है। अपने पराक्रम को ही सबकुछ समझ।''

''पिताजी, आपकी बातें कितनी बार आपसे सुनी हैं, इस समय भी सुन रहा हूँ। किंतु लगता है, आपके कथन में कहीं असत्य छिपा है। जो गलत है, उसे आप सही मान रहे हैं। पिताजी, जरा हर चीज को गौर से देखने की कोशिश कीजिए।''

''अरे, अब तू मुझे ही उपदेश देता है। अच्छा सपूत निकला तू! बाप को ही सिखलाने चला है!'' आगे वह क्रोध में काँपने लगा। इतने जोर से बोला कि दिशाएँ काँप उठीं–

''सुन प्रह्लाद! मेरे घर में ये चीजें नहीं चलेंगी। अगर फिर भी कभी सुना कि तू पुराने रास्ते पर ही जा रहा है, तो तुझे इसका फल भुगतना पड़ेगा। मैं बेटे को भी क्षमा नहीं कर सकता। जा… दूर हो मेरे सामने से।''

प्रह्लाद वहाँ से चला गया। किंतु अपनी टेक पर अड़ा रहा। हिरण्यकशिपु ने उसे समझाने की लाख कोशिशें कीं और कराईं, पर वह अपनी बात से जरा भी टस-से-मस न हुआ। वही ज्ञान-ध्यान; वही भगवान् की उपासना; वही सत्य पर आग्रह।

जब कोई उपाय नहीं रहा तो हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद को तरह-तरह से कष्ट देना शुरू किया। एक बार उसे पहाड़ पर ले जाया गया और वहाँ से नीचे ढकेल दिया गया। उसने समझा था, प्रह्लाद मर गया होगा; उसकी हड्डी-हड्डी चूर हो गई होगी। किंतु नीचे आकर देखता है कि प्रह्लाद ध्यान लगाए बैठा है। फिर एक बार उसे हाथी के पैर के नीचे डलवा दिया कि अब वह भुरता-भुरता हो

जाएगा। किंतु हाथी चिंघाड़ मारकर भागा, प्रह्लाद हँसता हुआ घर आ गया।

हद तो तब हो गई, जब एक दिन उसने प्रह्लाद को कुम्हार के आवे में रखकर चारों ओर से लाग लगवा दी। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका उस आवे में प्रह्लाद को गोद में लेकर बैठी थी। होलिका के शरीर में आग का असर नहीं होता था। हिरण्यकशिपु ने सोचा, प्रह्लाद जल जाएगा और होलिका सही-सलामत निकल जाएगी।

हद तो तब हो गई, जब एक दिन उसने प्रह्लाद को कुम्हार के आवे में रखकर चारों ओर से लाग लगवा दी। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका उस आवे में प्रह्लाद को गोद में लेकर बैठी थी। होलिका के शरीर में आग का असर नहीं होता था। हिरण्यकशिपु ने सोचा, प्रह्लाद जल जाएगा और होलिका सही-सलामत निकल जाएगी।

किंतु यह क्या? जब आग ठंडी हुई तो देखा गया, प्रह्लाद वहाँ भी ध्यानमन बैठा हुआ है और राक्षसी होलिका जल गई है। कहा जाता है, तभी से लोग होलिका-दहन का त्योहार मनाते हैं।

जब किसी प्रकार प्रह्लाद नहीं मर सका, तो एक दिन हिरण्यकशिपु अपने ही हाथों से उसे मारने लगा। मरता क्या नहीं करता।

प्रह्लाद को एक खंभे से बाँधकर, हाथ में नंगी तलवार लेकर वह खड़ा हुआ और बोला, ''अब भी सँभल जा, प्रह्लाद। अपनी अकड़ छोड़। नहीं तो देख यह तलवार! आज अपने ही हाथों से तुम्हारा वध करूँगा- हाँ, देख यह तलवार!''

''पिताजी, आपने जन्म दिया है। यह शरीर आपका है, इसे रखिए या मार डालिए। किंतु मैं सत्य के पथ से अलग नहीं होऊँगा।'' प्रह्लाद फिर आँखें मूँदकर ध्यान करने लगा।

''आँखें खोल जिद्दी लड़के! अब यह तलवार तेरे सिर पर गिरना चाहती है! या बुला उसको, जो तेरी रक्षा करने वाला है। कहाँ है वह? उसे बुला; नहीं तो मरने को तैयार हो जा, तैयार!''

ध्यानमग्न प्रह्लाद ने कहा, ''वह कहाँ नहीं है पिताजी? जिसे वह बचाना चाहेगा, वहाँ से किसी रूप में, प्रकट होकर बचा ही लेगा। उसे आप मार नहीं सकते।''

अब हिरण्यकशिपु के क्रोध की सीमा नहीं रही। ''तो, ले!'' ऐसा कहकर उसने तलवार चला दी!

किंतु यह क्या हुआ! उसी खंभे से एक भयानक मूर्ति प्रकट हुई। उसके सिर और नख सिंह के थे; शरीर आदमी का। उसने हिरण्यकशिपु को पटककर उसका पेट फाड़ दिया। उसकी अँतड़ियाँ निकल आईं। वह मर गया!

''भगवान् धन्य हैं आप!'' कहकर प्रह्लाद ने उस नृसिंहमूर्ति को प्रणाम किया।

बापू कहा करते थे, पहला सत्याग्रही प्रह्लाद था। प्रह्लाद की तरह सत्य पर विश्वास हो तो भगवान् को खंभा फाड़कर आना पड़ता है।

साभार : संपूर्ण बाल–साहित्य (भाग–2)

बाल-कविता | **महादेवी वर्मा**

बया हमारी चिड़िया रानी

बया हमारी चिड़िया रानी!

तिनके लाकर महल बनाती,
ऊँची डाली पर लटकाती,
खेतों से फिर दाना लाती,
नदियों से भर लाती पानी।

तुझको दूर न जाने देंगे,
दानों से आँगन भर देंगे,
और हौज में भर देंगे हम-
मीठा-मीठा ठंडा पानी।

फिर अंडे सेएगी तू जब,
निकलेंगे नन्हे बच्चे तब,
हम आकर बारी-बारी से
कर लेंगे उनकी निगरानी।

फिर जब उनके पर निकलेंगे,
उड़ जाएँगे बया बनेंगे,
हम तब तेरे पास रहेंगे,
तू मत रोना चिड़िया रानी।

प्राकृतिक संस्कृति का संपोषण करतीं लोककथाएँ

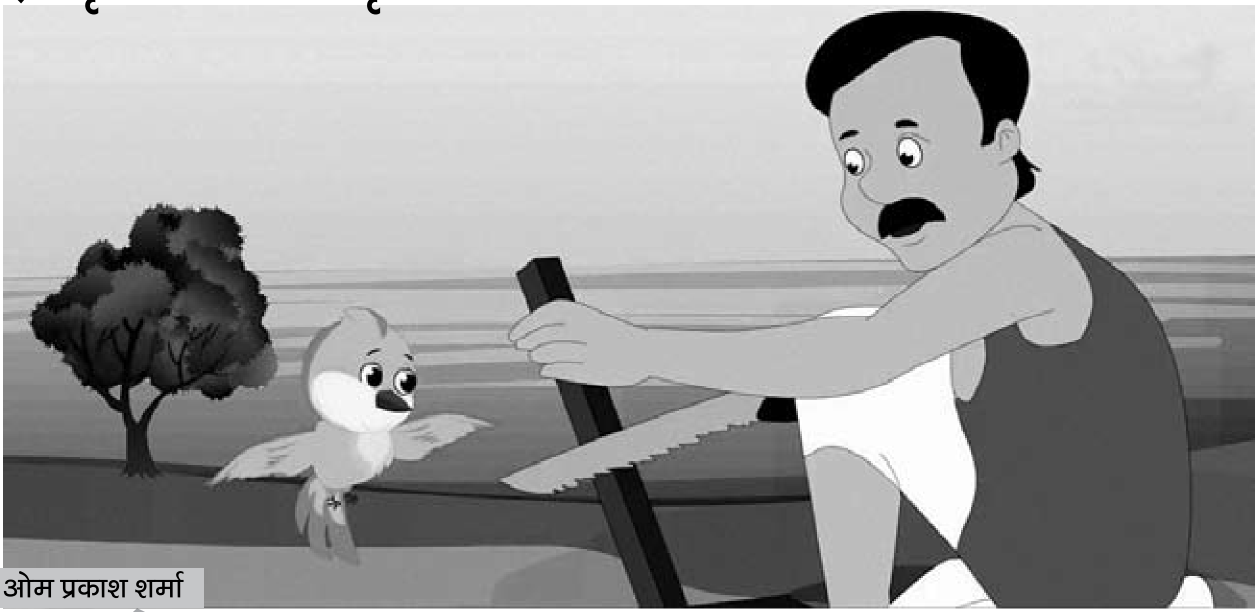

ओम प्रकाश शर्मा

लोक साहित्य विशेषकर लोककथाओं में लोक-संस्कृति की जैसी झलक मिलती है, वह पदार्थपरक कम, प्रकृतिपरक अधिक है; सीधे कहें तो प्राकृतिक संस्कृति की संवाहिका है। इसमें जीव-जंतु, पेड़-पौधे, नदी-जलाशय, पर्वत-समुद्र, हवा-पानी, अग्नि-हरीतिमा, आकाश-धरती आदि देवता या इंसान की तरह हलचल-हरकत करते हैं; वे बोलते हैं, चलते हैं और सारे कार्य करते हैं, हालाँकि उनका कार्य उस स्तर तक भी जाता है जो अविश्वसनीय है, क्योंकि वह लौकिक होकर भी लोकोत्तर की ओर उन्मुख है। जीवंत संस्कृति के अनूठे प्रतिरूप के तौर पर यह जागतिक प्रकृति के चर-अचर तत्त्वों का ऐसा परस्पर पूरक और अन्योन्यश्रित संबंधों की गुँथी उद्यान-मालिका है, जहाँ सजीव-निर्जीव का अत्यल्प भी पार्थक्य दृष्टिगत नहीं होता। इसे एक परंपरागत लोककथा 'चिड़िया की दाल' के माध्यम से समझा जा सकता है। यह किस्सा पूरे उत्तर भारत में थोड़े-थोड़े अंतर के साथ प्रचलित है।

एक दिन एक चिड़िया संभवतः गौरैया जंगल से एक चना चुगकर ले आई। वह चक्की में उसकी दाल बनाने लगी तो एक दाना निकला और दूसरा दाना खूँटे में अटक गया। चिड़िया लाख कोशिश करती रही, पर दाना न निकाल सकी। जब उसे कोई रास्ता नहीं सूझा तो वह बढ़ई के पास जाकर निवेदन करने लगी, 'बढ़ई-बढ़ई खूँटा चिरऽ, खूँटा में मोर दाल बा; का खाऊँ का पीऊँ, का ले के परदेस जाऊँ?' पर बढ़ई को अपने कमाने-खाने से कहाँ फुर्सत कि वह छोटी चिड़िया की बात सुने और फिर जो चिड़िया एक दाना के लिए स्वयं परेशान है, उससे पारिश्रमिक की भी भला क्या उम्मीद बन सकती है। बढ़ई ने अनसुना किया तो चिड़िया राजा के पास उड़ती हुई पहुँची और गुहार लगाने लगी कि बढ़ई को दंडित किया जाए, क्योंकि वह किसी जरूरतमंद के लिए अपने हुनर का उपयोग नहीं करता, 'राजा-राजा! बढ़ई दंडो, बढ़ई न खूँटा चीरे; खूँटा में मोर दाल बा; का खाऊँ का पीऊँ, का ले के परदेस जाऊँ?' राजा के पास राजकाज से परे इतना समय नहीं कि छोटी चिड़िया की बात पर अमल करे, अतः चिड़िया निराशा भाव में रानी के पास अपनी फरियाद लेकर पहुँची। वह रानी से राजा को छोड़ देने का आग्रह करने लगी, 'रानी-रानी! राजा छोड़ो, राजा न बढ़ई दंडे; बढ़ई न खूँटा चीरे, खूँटा में मोर दाल बा; का खाऊँ का पीऊँ, का ले के परदेस जाऊँ?'

रानी भला चिड़िया के कहने पर राजा को क्यों छोड़ती, अतः अपना-सा मुँह लेकर चिड़िया साँप के यहाँ गई और कहने लगी, 'सरप-सरप! रानी डँसो, रानी न राजा छोड़े; राजा न बढ़ई दंडे, बढ़ई न खूँटा चीरे; खूँटा में मोर दाल बा; का खाऊँ का पीऊँ, का ले के परदेस जाऊँ?' वजह-बेवजह किसी को भी डँसकर मार देने वाला साँप भी आखिर चिड़िया के कहने पर कुछ क्यों करे। उसने बात नहीं मानी तो चिड़िया उसके काल लाठी के पास जाकर विनती करने लगी कि 'लाठी-लाठी! साँप मारो, साँप न रानी डँसे; रानी न राजा छोड़े, राजा न बढ़ई दंडे; बढ़ई न खूँटा चीरे, खूँटा में मोर दाल बा; का खाऊँ का पीऊँ, का ले के परदेस जाऊँ?' लाठी भी साँप को मारने के लिए तैयार नहीं हुआ तो चिड़िया आग के पास गई और लाठी को जलाने की प्रार्थना करने लगी, 'आग आग! लाठी जारो, लाठी ना साँप मारे; साँप न रानी डँसे, रानी न राजा छोड़े; राजा न बढ़ई दंडे, बढ़ई न खूँटा चीरे; खूँटा में मोर दाल बा।'

आग ने भी जब इतनी छोटी बात के लिए लाठी को जलाना उचित नहीं समझा तो चिड़िया सागर के पास जाकर मिन्नत करने लगी, 'सागर-सागर! आग बुझाओ, आग न लाठी जारे; लाठी न साँप न मारे, साँप न रानी डँसे; रानी ना राजा छोड़े, राजा न बढ़ई दंडे; बढ़ई न खूँटा चीरे, खूँटा में मोर दाल बा; का खाऊँ का पीऊँ, का ले के परदेस जाऊँ?' सागर ने चिड़िया के कहने पर आग को सबक सिखाने के झमेले में पड़ने से दूर रहना ही बेहतर समझा। वहाँ से भी निराश

होकर चिड़िया सागर को निबटाने का उपाय ढूँढ़ती हाथी के पास गई और उसे समुद्र को सोखने के लिए पुकारने लगी, 'हाथी-हाथी! सागर सोखो, सागर ना आग बुझावे; आग ना लाठी जारे, लाठी न साँप न मारे; साँप न रानी डँसे, रानी न राजा छोड़े; राजा न बढ़ई दंडे, बढ़ई न खूँटा चीरे; खूँटा में मोर दाल बा; का खाऊँ का पीऊँ, का ले के परदेस जाऊँ?' हाथी को भी क्या पड़ी थी कि वह चिड़िया की बात पर गौर कर सागर को सुखाने जैसा बड़ा काम अपने हाथ में ले। वह भी तटस्थ रहा।

हाथी जैसे महाकाय ने जब चिड़िया की कोई सहायता नहीं कि तो चिड़िया का धैर्य जवाब दे गया। वह असहायावस्था में थकी-हारी निराशा में डूब गई। तभी वहाँ से गुजर रही चींटियों के एक दल का ध्यान उसकी ओर गया। उन सबने उसका हाल जानना चाहा। चिड़िया यह सोचकर कि जब हाथी जैसा बलवान उसकी सहायता नहीं कर सका तो चींटियाँ बेचारी क्या कर पाएँगी? लेकिन अपना दुखड़ा कहने से मन हल्का होता है, इसलिए उसने सब कुछ बता दिया। चींटियों ने भरसक मदद का आश्वासन दिया। अपने साथ लेकर एक चींटी हाथी के पास पहुँच गई। चिड़िया को छुपकर पेड़ पर बैठने का संकेत किया। इधर चींटी हाथी के पैर से होकर कान में जा घुसी। हाथी को बुरी तरह परेशान करते हुए वहीं खूब काटने लगी। पूरी कोशिश करके भी हाथी उसे अपनी सूँड़ से हटा नहीं पाया, क्योंकि सूँड़ की पहुँच से वह अंदर थी। उसी समय कान में चींटी फुसफुसाने लगी कि सागर को सुखाओ, ताकि चिड़िया की दाल लेने का रास्ता बन सके, नहीं तो मैं काटती रहूँगी।

हाथी जैसे महाकाय ने जब चिड़िया की कोई सहायता नहीं कि तो चिड़िया का धैर्य जवाब दे गया। वह असहायावस्था में थकी-हारी निराशा में डूब गई। तभी वहाँ से गुजर रही चींटियों के एक दल का ध्यान उसकी ओर गया। उन सबने उसका हाल जानना चाहा। चिड़िया यह सोचकर कि जब हाथी जैसा बलवान उसकी सहायता नहीं कर सका तो चींटियाँ बेचारी क्या कर पाएँगी?

लाचार होकर हाथी राजी हुआ, 'मोरे काटे-उटे जनि कोई, हम सागर सोखब लोई।' यह कहते हुए वह सागर के समीप पहुँच गया। हाथी को देखकर सागर डरा और तुरंत कहने लगा कि 'मोहे सोखे-उखे जनि कोई, हम आग बुझाएब लोई।' जब सागर ने आग के पास जाकर उसे बुझाने का अपना इरादा जताया तो आग हैरान हुई और लाठी को जलाने के लिए शीघ्र तैयार हो गई, 'मोहे बुझावे-उझावे जनि कोई, हम लाठी जारब लोई।' यह कहकर जब आग लाठी के पास गई तो लाठी घबराकर तुरंत साँप को मारने के लिए हामी भरने लगी, 'मोहे जरावे-उरावे जनि कोई, हम साँप मारम लोई।' इसी उद्देश्य से लाठी साँप की तरफ गई तो साँप जान पर आए खतरे से बचने के एकमात्र उपायस्वरूप बिना देर किए रानी को डँसने के लिए तैयार हो गया, 'मोहे मारे-उरे जनि कोई, हम रानी डँसब लोई' और यह कहकर वह चल दिया। रानी ने साँप को समीप आता देख आने का कारण पूछा तो उसने कहा कि राजा को छोड़ दो, वरना मैं तुम्हें डँसूँगा। रानी ने साँप के काटने से मरने की बजाय राजा को छोड़कर जान बचा लेने में भलाई समझी, रानी ने झट से कहा कि 'हमें डँसे-उसे जनि कोई, हम राजा छोड़म लोई।' राजा के पास जब रानी उसे छोड़ देने का प्रस्ताव लेकर पहुँची और कहा कि आपको छोड़ दूँगी, क्योंकि आप बढ़ई को दंडित कर चिड़िया बेचारी की दाल का दाना नहीं निकलवाते। राजा ने तुरंत कहा कि 'मोहे छोरे-उरे जनि कोई, हम बढ़ई दंडम लोई।' राजा ने बढ़ई को बुलवाकर चिड़िया की दाल न निकालने के जुर्म में दंडित करने का अपना फरमान सुनाया तो बढ़ई ने तुरंत खूँटा चीरकर दाल निकाल देने के लिए आश्वस्त दिया, 'मोहे दंडे-उंडे जनि कोई, हम खूँटा चीरम लोई।' बढ़ई जब अपना हथौड़ा और छेनी लेकर चक्की के खूँटा के पास चीरने पहुँचा तो खूँटा घबराकर तुरंत दाल का जो एक दाना निगल रखा था, उसे उगल दिया। इस प्रकार चिड़िया को दाल का अपना एक दाना लंबी कवायद के बाद मिल सका, जिसे लेकर वह सकून से जा सकी। बेशक वह एक दाना था, पर चिड़िया के लिए तो वही सब कुछ था।

यह लोककथा शाश्वत मूल्यों की स्थापना करती है। कमजोर की आवाज कोई नहीं सुनता, जब तक कि सुनने की मजबूरी न आ पड़े। लेकिन जब अंकुश लगाने वाला खड़ा हो जाता है, तब दंड के भय से अपेक्षित कार्य करना पड़ता है। चिड़िया की बात को बढ़ई, राजा, रानी, साँप, लाठी, आग, पानी, हाथी कोई ध्यान देने लायक नहीं समझता; 'नाम बड़े, दर्शन छोटे' ऐसी स्थिति के लिए ही तो कहा जाता है, किंतु एक 'तुच्छ' चींटी जब उसकी सहायता के लिए आगे आती है, तो हाथी से लेकर राजा, बढ़ई तक फटाफट उसका दाना निकलवाने में तत्परता दिखाते हैं। जो खूँटा दाल हजम किए बैठा था, वह चीरे जाने के भय से बिना विलंब के वापस कर देता है। इस लोककथा का संदेश है कि बड़ों के चक्कर में छोटों का तिरस्कार नहीं होना चाहिए, क्योंकि जहाँ सुई की जरूरत है, वहाँ तलवार क्या कर सकती है -

रहिमन देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई कहा करै तलवारि।।

नम्रता से नारायण मिलते हैं, जबकि अहंमन्यता से अभीप्सित-आराध्य दूर होते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे चींटी को तो शक्कर नसीब होती है, जबकि हाथी अपने सिर पर धूल फेंकता चलता है-

लघुता ते प्रभुता मिलै प्रभुता ते प्रभु दूरी।
चींटी ले शक्कर चली हाथी के सिर धूली।।

पूर्व प्रवक्ता, एस.बी.डी. गर्ल्स ;पी.जी. कॉलेज, धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.),
संपर्क : 9650914297

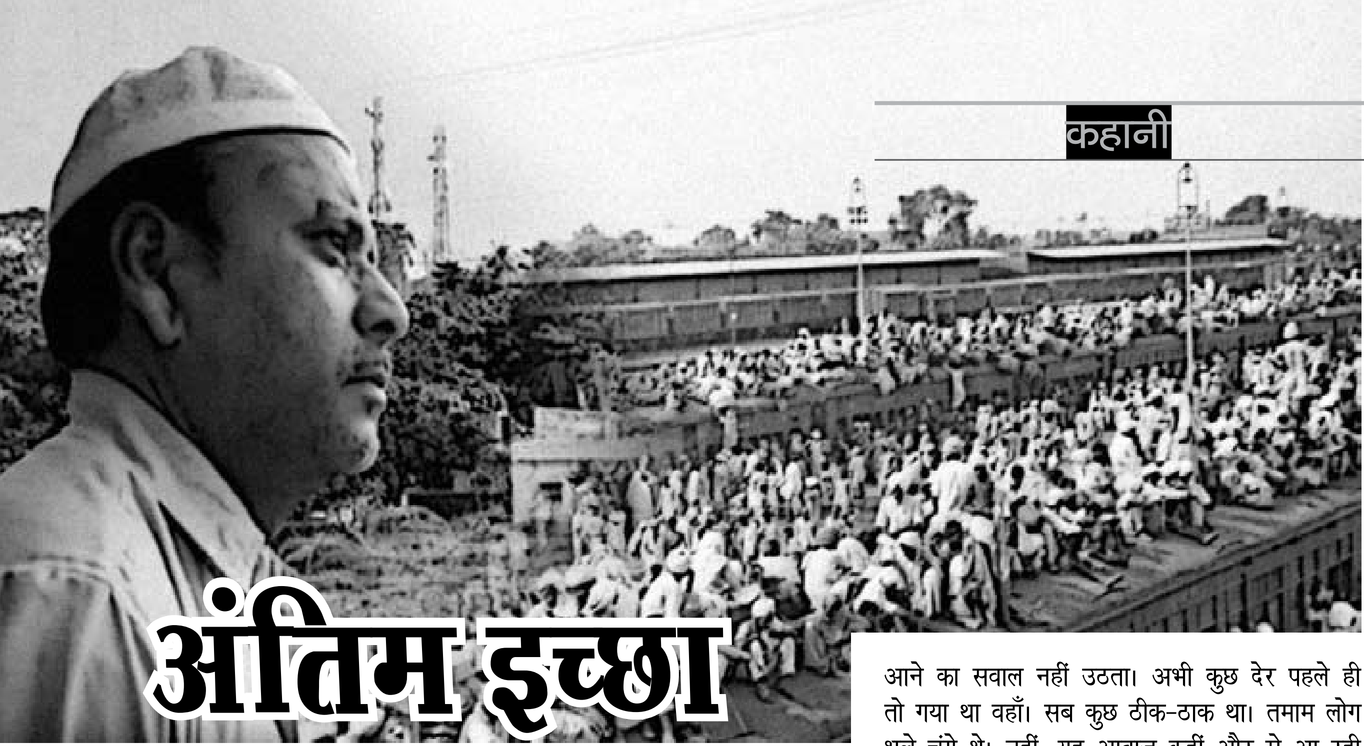

अंतिम इच्छा

बदीउज्जमाँ

प्लेटफार्म पर सरकती हुई ट्रेन के साथ लालवानी कुछ दूर तक दौड़ता रहा और चीख-चीखकर कहता रहा, ''मेरा सलाम जरूर बोलना रफीक टी-स्टॉल वाले को और अब्दुस्सतार को और मिस्टर लतीफ को। कहना लालवानी बहुत याद करता है तुम सबको। हमारा नाम याद रहेगा न।

दोपहर का खाना खाकर मैं बाहर के कमरे में तख्त पर लेटा सोने की कोशिश कर रहा हूँ। दो बार नींद आकर टूट चुकी है। एक बार कुत्तों के भौंकने की आवाज से और दूसरी बार गली में बच्चों के शोर मचाने के कारण। अब फिर सोने की कोशिश कर रहा हूँ। पलकें कुछ बोझिल होने लगी हैं। लगता है, नींद जल्दी ही मुझे अपने काबू में कर लेगी। हर तरफ गहरी खामोशी है। केवल दीवार पर लगी घड़ी की टिक्-टिक् इस खामोशी को हल्के-से तोड़ती है। लेकिन यह आवाज कानों को नागवार नहीं लगती। नींद ने फिर मुझे आ दबोचा है। एकाएक मेरी आँखें फिर खुल जाती हैं। कहीं आसपास से रोने की आवाज आ रही है। नींद का मोह मुझे इस आवाज में दिलचस्पी लेने से रोकता है। कोई रोता है तो रोने दो। मुझे क्या? मैं अपने दिमाग से इस आवाज को, जो लगातार मेरे कानों से टकरा रही है, निकाल फेंकने की कोशिश करता हूँ। लेकिन आवाज निरंतर बुलंद होती जा रही है। किसी एक व्यक्ति के रोने की आवाज नहीं लगती। सामूहिक रुदन जैसी आवाज है। बहुत सारे लोग मिलकर रो रहे हैं। जैसे किसी की मौत पर रो रहे हों।

इस आवाज को अहमियत न देना अब मेरे लिए नामुमकिन होता जा रहा है। पास-पड़ोस में जरूर किसी का मौत हो गई है। जाने कौन मर गया है। कहीं सपाती राज का लड़का तो नहीं चल बसा। बीमार था। आज सवेरे डॉक्टर देखने आया था। लेकिन वह इतना बीमार तो था नहीं। नहीं, यह बात नहीं हो सकती। मैं आवाज की दिशा का पता लगाने की कोशिश करता हूँ। नहीं, यह आवाज उधर से नहीं आ रही है जिधर सपाती राज का घर है। आवाज छोटी अम्मा के घर की तरफ से आ रही है। लेकिन छोटी अम्मा के घर से रोने की आवाज आने का सवाल नहीं उठता। अभी कुछ देर पहले ही तो गया था वहाँ। सब कुछ ठीक-ठाक था। तमाम लोग भले-चंगे थे। नहीं, यह आवाज कहीं और से आ रही है। मैं आश्वस्त होकर फिर सोने की कोशिश करने लगता हूँ। लेकिन नींद जैसे विद्रोह करने पर तुली हुई है। रोने की आवाज निरंतर बुलंद होती जा रही है। न चाहते हुए भी एक आतंक मुझे घेर लेता है। मौत की डरावनी परछाइयाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं।

एकाएक अम्मा घबराई हुई कमरे में आती हैं और कहती हैं, ''देखो तो क्या बात है? तुम्हारी छोटी अम्मा के यहाँ पिट्टस पड़ी हुई है। खुदा खैर करे। जल्दी जाओ।''

मैं बदहवासी की हालत में छोटी अम्मा के घर की तरफ भागता हूँ। पहुँचकर देखता हूँ कि वहाँ सचमुच कुहराम मचा हुआ है। छोटी अम्मा अपना सिर जमीन पर पटक रही हैं और चीख-चीखकर रो रही हैं।

''हाए! कैसा खौरा लगा दीहिस ई पाकिस्तान हमरे घर को, छीन लीहिस मेरे लाल को।''

घर के तमाम लोग गला फाड़-फाड़कर रो रहे हैं। एकाएक क्या हो गया। कुछ समझ में नहीं आ रहा है। मैं हतप्रभ-सा खड़ा सबको देखता हूँ। किसी से कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हो रही है। एकाएक चारपाई पर पड़े एक गुलाबी कागज पर मेरी नजर पड़ती है।

तार को पढ़ते ही सब कुछ मालूम हो जाता है। तार कराची से आया है। कमाल भाई के मरने की सूचना दी गई है। लेकिन एकाएक यह सब कैसे हो गया। हफ्ते-भर पहले की तो बात है। कमाल भाई का खत आया था। बीमार होते तो जरूर लिखा होता। खत में ऐसा कुछ भी तो नहीं था, जिससे उनकी बीमारी का पता चलता। वैसे उनका स्वास्थ्य बहुत दिनों से खराब चल रहा था। दो साल पहले आए थे तो पहचानना मुश्किल हो गया था उनको। पहले जैसा गठा हुआ शरीर नहीं रहा था। बेहद दुबले हो गए थे। गोरा-चिट्टा रंग भी गायब हो चुका था। चेहरा पीला पड़ गया था और गालों में गड्ढे पड़

गए थे। आँखें अंदर को धँस गई थीं। लगता ही नहीं था कि यह वही कमाल भाई हैं। कहते थे, ''कराची की आबोहवा रास नहीं आई। भूख बिल्कुल नहीं लगती और हाजमा खराब रहता है।''

मुझे अच्छी तरह याद है, कमाल भाई जब पाकिस्तान जा रहे थे तो घर के सब लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की थी। छोटे अब्बा तब जीवित थे। उनकी बात भी नहीं मानी थी कमाल भाई ने। छोटे अब्बा ने नाराज होकर कहा था, ''मैं जानता था कि यह मेरी बात नहीं मानेगा। शुरू से ही यह ऐसा है। माँ-बाप को कुछ समझता ही नहीं है।''

कमाल भाई सचमुच बहुत जिद्दी थे। छोटे अब्बा और छोटी अम्मा सिर पटककर रह गए, लेकिन वह टस से मस नहीं हुए। उल्टे कहने लगे, ''आप लोग भी निकल चलिए। बाद में पछताइएगा।''

छोटी अम्मा बोली थीं, ''यह तो हमसे न होगा। अपना घर-बार छोड़कर परदेश जा बसें।''

कमाल भाई की शादी हुए पाँच-छह महीने ही हुए थे। अपनी नई-नवेली दुलहन को लेकर वह पाकिस्तान चले गए थे।

कमाल भाई इस तरह अचानक ही चल बसेंगे, इसकी कल्पना भी नहीं की थी हम लोगों ने।

रात काफी बीत चुकी है। आसपास के वातावरण पर बहुत गहरा सन्नाटा छाया हुआ है। रह-रहकर छोटी अम्मा के रोने की आवाज सन्नाटे को तोड़ जाती है। कभी कोई कुत्ता बड़े ही डरावने स्वर में रोने लगता है, जिससे फिजां और भी भयावह हो जाती है। मन बहुत खिन्न हो गया है। सोने की कोशिश करता हूँ। लेकिन नींद कहीं दूर भाग गई है। जब भी आँखें बन्द करके सोने की कोशिश करता हूँ तो कमाल भाई की मुखाकृति सामने आकर मन को विचलित कर देती है। बहुत-सी बातें याद आ रही हैं। पर दिमाग किसी एक बिन्दु पर टिक नहीं रहा है। स्मृतियाँ किसी जुलूस की तरह गुजर रही हैं।

सामने चारपाई पर अम्मा भी करवटें बदल रही हैं। उन्हें भी नींद नहीं आ रही है। वह भी शायद कमाल भाई के बारे में सोच रही हैं।

''कमाल गरीब जवानी मौत मरा। वह भी परदेस में।'' अम्मा की आवाज मुझे सुनाई देती है। मैं कोई जवाब नहीं देता।

कमाल भाई के जाने कितने चेहरे मेरी आँखों के सामने झिलमिला रहे हैं। बारह-तेरह साल की उम्र के लड़के का चेहरा। बेहद शरीर और चंचल। अठारह-उन्नीस साल के नवयुवक का चेहरा, भाषणकला में दक्ष और गाने में माहिर। स्मृतियाँ किसी क्रम से नहीं आ रही हैं। बड़े ही बेतरतीब, क्रमविहीन ढंग से कमाल भाई की बातें याद आ रही हैं।

कमाल भाई मुझसे चार-पाँच साल ही तो बड़े थे। बचपन में उनसे मैं बहुत डरता था। क्या मजाल जो उनके हुक्म के खिलाफ कुछ कर सकूँ। लेकिन भीतर-ही-भीतर जलता भी कुछ कम नहीं था। बड़ी ईर्ष्या होती थी उन्हें देखकर। गोरा-चिट्टा रंग, बड़ी-बड़ी आँखें, लम्बा-चौडा शरीर। बड़ा ही भव्य और आकर्षक व्यक्तित्व था उनका। उनके सामने मैं तो बिल्कुल मरियल दिखाई देता था। आए दिन वह मुझे पीटते रहते थे। बड़ा क्रोध आता था मुझे। लेकिन उनपर कोई वश नहीं चलता था मेरा। अम्मा से आकर शिकायत करता तो वह भी कुढ़कर रह जातीं। अम्मा भी कमाल भाई का कुछ बिगाड़ नहीं सकती थीं। अब्बा से कुछ कहने की हिम्मत उनमें भी नहीं थी। अम्मा जानती थीं कि अब्बा कमाल भाई को कितना चाहते हैं। वह किसी से कमाल भाई के खिलाफ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे। अम्मा को यह सब बहुत बुरा लगता था। पर वह खून का घूँट पीकर रह जातीं। दिल की भड़ास अकसर मेरे सामने जरूर निकाल लेती थीं। कहतीं, ''अल्लाह मियाँ समझिए बाबू। हम कुछ ना बोले हैं। अल्लाह तो सब देखे हैं ना। कैसी जलंतही है यह सलीम की बहू। ऐसी गोतनी अल्लाह मियां हमारे भाग में ही लिखिन था। जैसी माए वैसा बेटा।''

अम्मा और छोटी अम्मा में जैसे जन्म-जन्मान्तर की दुश्मनी थी। बस चलता तो एक-दूसरी को कच्चा चबा जातीं। अम्मा अब्बा के डर से बहुत कम बोल पाती थीं। अब्बा का गुस्सा ही कुछ ऐसा था कि किसी को कुछ कहने की हिम्मत नहीं होती थी। उनके आते ही घर में सब लोगों को जैसे साँप सूँघ जाता था। पर छोटी अम्मा पर छोटी अब्बा का कुछ जोर नहीं चलता था। अम्मा कहती थीं, ''जादू कर दीहिन है कमाल के नन्हियाल वाले सलीम पर। एक मजाल जो कुछ कहे सके बीबी से।''

अम्मा मन-ही-मन कमाल भाई से बहुत जलती थीं। एक बार जब कमाल भाई स्कूल के इम्तिहान में फेल हो गए थे और मैं पास हो गया था तो अम्मा ने कहा था, ''अल्लाह मियाँ घमंड तोड़ दीहिन ना। जो सबको गिरावे उनको अल्लाह गिरावे।''

और सच पूछिए तो मुझे बेहद खुशी हुई थी। अपने पास होने से ज्यादा इसकी खुशी थी कि कमाल भाई फेल हो गए। मेरे ईर्ष्याभाव को इस घटना से बड़ी तृप्ति मिली थी। छोटी अम्मा के यहाँ उस रोज सब लोग बहुत उदास थे और कमाल भाई ने तो कई रोज तक अपनी शक्ल तक नहीं दिखाई थी। अब्बा को भी बहुत दुःख हुआ था और मेरे पास होने पर उन्हें जितना खुश होना चाहिए था, उतना खुश वह नहीं हुए थे। अम्मा ने यह

देश-विभाजन से कोई साल-डेढ़ साल पहले की बात है। टाउन हॉल में कौम-परस्त मुसलमानों का कोई जलसा हो रहा था। बाहर से भी कुछ नेता आए हुए थे। मुस्लिम लीग ने जलसे में हड़बोंग करने के लिए अपने वालंटियर भेज दिए थे। इनमें कमाल भाई भी थे। कमाल भाई और गांधी भाई की नोक-झोंक सुनते रहने के कारण राजनीति में मेरी भी कुछ रुचि हो गई थी। मैं भी इस जलसे में गया था। जैसे ही जलसे की काररवाई शुरू हुई, लीग के वालंटियरों ने हड़बोंग मचाना शुरू कर दिया। गांधी भाई और दूसरे लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की।

सब देखकर चुपके से कहा था, ''खुश कैसे हों। लाडला भतीजा जो फेल हो गया है। इनका बस चले तो बेटे को भी फेल करा दें।''

अम्मा की ये बातें उस समय मुझे बहुत अच्छी लगती थीं। कमाल भाई के व्यवहार और उनके लाड़-प्यार के कारण मैं अन्दर-ही-अन्दर सुलगता रहता था। अब्बा कमाल भाई को जितना चाहते हैं, उतना मुझे नहीं चाहते। यह सोचकर मैं ईर्ष्या से पागल हो उठता था।

ये पुरानी भूली-बिसरी बातें इस समय अनायास ही याद आ रही हैं। तब ये कितनी महत्त्वपूर्ण लगती थी! वक्त ने अब इन्हें कितना गैर-अहम बना दिया है! कितनी हैरत होती है अपने-आप पर कि बचपन में कितनी फिजूल की बातों को लेकर मैं ईर्ष्याभाव से पीड़ित रहता था।

अब्बा का जब देहान्त हुआ था तो अम्मा के धीरज का बाँध जैसे एकाएक टूट गया था। छोटी अम्मा को देखते ही अम्मा ने कहा था, ''लो, अब तो कलेजा ठंडा हो गया ना तुमरा।'' और छोटी अम्मा को जैसे साँप सूँघ गया था। एक शब्द भी तो न निकला था उनके मुँह से।

और जब छोटे अब्बा की मैयत पड़ी हुई थी तो छोटी अम्मा ने भी यही सब कहा था। अम्मा उसी तरह चुप रही थीं, जिस तरह छोटी अम्मा चुप रह गई थीं।

और आज भी ऐसा ही हुआ था। अम्मा को देखते ही छोटी अम्मा फट पड़ी थीं- ''लो, अब तो तुमरा कलेजा ठंडा हुआ ना। बहुत खटकता था ना मेरा लाल तुमरे आँख में।'' अम्मा खामोशी से यह सब सुनती रही थीं।

''दो बरस हुए, जब आया था कमाल। कहता था, 'बड़ी अम्मा, यहाँ से जाने को जी नहीं चाहता। पर क्या करें मजबूरी है।' दो महीने रहा था बेचारा। कौन कहिस था हुआं जाने को। नसीबजल्ला कहीं का। सब कहते रह गए, न जाओ। किसी का कहना ना मानिस। बेचारी करमजल्ली बीबी और दो छोटे-छोटे बच्चों का हाल होहिए।'' अम्मा के शब्द मेरे कानों में पहुँच रहे हैं। शायद अम्मा मन-ही-मन पछतावा महसूस कर रही हैं। शायद मेरा खयाल गलत है। अम्मा कोई पछतावा महसूस नहीं कर रही हैं। जैसे कमाल भाई से उनका जलना भी उसी तरह ठीक था, जिस तरह उनकी मौत पर दुखी होना। दोनों स्थितियाँ शायद अपनी-अपनी जगह पर सहज थीं।

कमाल भाई पिछली बार जाने लगे थे तो मैं भी गया था उन्हें स्टेशन तक छोड़ने। भाभी-बच्चों को वेटिंग रूम में बिठाकर हम दोनों असिस्टेंट स्टेशन मास्टर के दफ्तर में चले गए थे। कमाल भाई को रेलवे पास में एन्ट्री करवानी थी। असिस्टेंट स्टेशन मास्टर सिंधी शरणार्थी था। पास देखते ही चौंक गया, ''आप कराची में रहते हैं क्या?'' उसने पूछा।

''जी हाँ।'' कमाल भाई बोले।

''हम भी कराची से आया है। हमारा नाम लालवानी है। कराची स्टेशन के बाहर निकलते ही दाई तरफ टी-स्टॉल है ना। रफीक को हमारा सलाम बोलना। कहना लालवानी बहुत याद करता है। हम दोनों हैदराबाद का है। उसे बहुत-बहुत सलाम कहना। और कराची स्टेशन पर अब्दुस्सत्तार टी.सी. है। उसने कहना, लालवानी मिला था। बहुत याद करता है।''

बहुत देर तक वह कमाल भाई से कराची के बारे में पूछता रहा। ''बन्दर रोड पर रायल रेस्तराँ था। वह है या नहीं? डी.सी. ऑफिस में मिस्टर लतीफ हेड क्लर्क थे। अभी हैं या रिटायर हो गए। बहुत अच्छा आदमी था। हमारा बड़ा मदद करता था। मिल जाए तो हमारा सलाम बोलना।'' इसी तरह से अनगिनत ऊटपटाँग सवाल करता रहा।

कमाल भाई उसके सवालों के जवाब में 'हाँ-हूँ' करते रहे। फिर चुपके से हम दोनों वहाँ से खिसक गए।

''चलो, जरा स्टेशन के बाहर चाय पी आएँ।'' कमाल भाई बोले। मिट्टी के कुल्हड़ वाली चाय पीते हुए कमाल भाई ने कहा था :

''जानते हो, कराची में ऐसी चाय पीने को जी तरस जाता है। ऐसी सौंधी चाय कराची में कहाँ नसीब। गया में मुझे दो जगह की चाय सबसे ज्यादा पसन्द थी। स्टेशन पर इस दुकान की चाय और शहर में कोतवाली के पास बासुदेव टी-स्टॉल की चाय। इस बार बासुदेव टी-स्टॉल बन्द देखा। लगता है, वह कहीं बाहर चला गया।''

बासुदेव टी-स्टॉल बहुत दिनों से बन्द पड़ा था। मैंने यह जानने की कभी कोशिश नहीं की थी कि बासुदेव शहर में है भी या नहीं।

फिर कमाल भाई बोले थे, ''जानते हो ख्वाजा, पाकिस्तान जाकर मैंने सख्त गलती की। अब्बा का कहा मान लेता तो अच्छा रहता। मेरी हालत धोबी के गधे की हो गई है। न घर का न घाट का। सोचता हूँ, मुल्क का बँटवारा न होता तो अच्छा था।''

मैं कमाल भाई की बातें खामोशी से सुनता जा रहा था। वह बूढ़ों जैसी बातें कर रहे थे। अब यह सोचने से क्या फायदा। मुल्क का बँटवारा हो चुका था और यह भी एक हकीकत थी कि कमाल भाई पाकिस्तान चले गए थे। साँप जब निकल गया है तो लकीर को पीटते रहने का क्या लाभ?

जब गाड़ी प्लेटफार्म पर सरकने लगी तो मैंने देखा कि लालवानी तेंजी से भागता हुआ कमाल भाई के डिब्बे की तरफ आ रहा है।

प्लेटफार्म पर सरकती हुई ट्रेन के साथ लालवानी कुछ दूर तक दौड़ता रहा और चीख-चीखकर कहता रहा, ''मेरा सलाम जरूर बोलना रफीक टी-स्टॉल वाले को और अब्दुस्सतार को और मिस्टर लतीफ को। कहना लालवानी बहुत याद करता है तुम सबको। हमारा नाम याद रहेगा न। लालवानी यानी रेड...'' ट्रेन प्लेटफार्म से आगे निकल चुकी थी। कुछ दूर तक कमाल भाई का हिलता हुआ हाथ दिखाई देता रहा। फिर सारी ट्रेन एक लाल बिन्दु में सिमटकर आँखों के सामने चमकती रही। और कुछ देर के बाद यह लाल बिन्दु भी अंधकार में विलीन हो गया। मैंने चारों तरफ एक नजर डाली। प्लेटफार्म बिल्कुल वीरान दिखाई दे रहा था। एक तरफ लालवानी खड़ा हाँफ रहा था। मैंने सोचा था, यह जिंदगी भी अजीब चीज है। लालवानी, जिसकी रग-रग में कराची बसा हुआ है, गया की जमीन पर खड़ा हाँफ रहा है और कमाल भाई, जो गया की हवाओं के लिए तरसते हैं, कराची में आजीवन रहने पर मजबूर हैं।

उस रोज स्टेशन पर कमाल भाई की बातें सुनकर मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ था। कमाल भाई की विचारधारा तो शुरू से ही मुस्लिम लीगी थी। 'पाकिस्तान लेकर रहेंगे' और 'कायदे आजम जिन्दाबाद' के नारे लगाते मैं उन्हें देख चुका था। मुहम्मद अली जिन्ना जब गया आए

थे और बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया था तो आगे-आगे रहने वालों में कमाल भाई भी थे। यह उन दिनों की बात है, जब मुस्लिम लीग का असर तेजी से फैल रहा था और राजनीति के स्तर पर हिन्दू और मुसलमान बड़ी हद तक बँट चुके थे। पर दैनिक जीवन के स्तर पर सब कुछ पहले की तरह चल रहा था। राजनीति की सतह पर हिन्दुओं को मुसलमानों से शिकायतें थीं और मुसलमानों को हिन्दुओं से। पर रोजमर्रा की जिन्दगी में पूरा सम्पर्क बना हुआ था। सोचता हूँ तो यह सारा झगड़ा मुझे अम्मा और छोटी अम्मा के झगड़े जैसे लगता है। तमाम शिकवे-शिकायतें और उतार-चढ़ाव के बावजूद अम्मा और छोटी अम्मा के सम्बन्धों में कभी ऐसी दरार नहीं पड़ी कि दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हो जाएँ।

हम लोगों के रिश्ते के एक भाई थे, जो विचारधारा की दृष्टि से कौम-परस्त मुसलमान कहे जा सकते थे। यह राजनीति में सक्रिय भाग तो नहीं लेते थे, लेकिन राजनीतिक मामलों और सवालों में बड़ी गहरी दिलचस्पी लेते थे। यह मुस्लिम लीग और पाकिस्तान की माँग के कट्टर विरोधी थे। उम्र में मुझसे और कमाल भाई से बड़े थे। कांग्रेस, गांधीजी और मौलाना अबुल कलाम आजाद के बड़े भक्त थे। कमाल भाई से उनकी अकसर बड़ी जोरदार बहसें हुआ करती थीं। इनका नाम तो अहमद इमाम था, लेकिन बहुत-से लोग इन्हें गांधीजी कहकर पुकारते थे। औरों की देखा-देखी हम लोग भी उन्हें गांधी भाई कहने लगे थे।

एक बार हमारे मुहल्ले में मुस्लिम लीग का कोई जलसा हुआ था। इसमें कमाल भाई ने इकबाल का मशहूर तराना 'चीनी खबर हमारा हिन्दुस्तां हमारा, मुस्लिम हैं हम वतन है सारा जहाँ हमारा' गाकर सुनाया था। कमाल भाई ने बड़ा अच्छा गला पाया था और उनके गाने की सब लोगों ने बहुत तारीफ की थी। जलसा खत्म होने पर कमाल भाई हमारे यहाँ आए तो गांधी भाई भी मौजूद थे। गांधी भाई ने शायद कमाल भाई को छेड़ने की खातिर कहा था :

''क्यों भाई कमाल, तुम्हें कोई और नज्म गाने को नहीं मिली, जो इकबाल का यह तराना गाने लगे। इकबाल फलसफी हो सकते हैं, लेकिन इनसान के दर्द को वह नहीं समझते।''

''अजी, आप क्या समझेंगे इकबाल की शायरी को।''

कमाल भाई ने नाराज होकर जवाब दिया था। बात आई-गई हो गई थी। उस समय इकबाल की शायरी को समझने की योग्यता मुझमें नहीं थी। पर आगे चलकर जब मैं इकबाल की कविताओं और देश की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों को समझने के काबिल हुआ तो मैं भी उसी नतीजे पर पहुँचा, जिस नतीजे पर गांधी भाई बहुत पहले पहुँच चुके थे। उस रोज गया स्टेशन पर कमाल भाई की बातें सुनकर मुझे यही लगा कि गांधी भाई ने इकबाल के बारे में ठीक ही कहा था। कमाल भाई खुद को इकबाल के साँचे में ढला हुआ मुसलमान समझते थे। तभी तो गया से अपना रिश्ता तोड़ते हुए उन्हें जरा भी हिचक नहीं हुई। पर क्या यह रिश्ता टूट सका? उनका उदास चेहरा इस बात का साक्षी था कि गया से उनकी रूह का जो रिश्ता है, वह नहीं भी टूट सकता।

गांधी भाई ने एक बार कहा था, ''इकबाल का सारा नजरिया दरअसल इनसान-विरोधी है। हालाँकि बजाहिर ऐसा दिखाई नहीं देता। लेकिन उनका 'मर्दे मोमिन' नीत्शे के अतिमानव (सुपर मैन) के अलावा कुछ और नहीं है। नीत्शे ने हिटलर को जन्म दिया था। देखना, इकबाल का 'मर्दे मोमिन' भी बड़ी तबाही लाएगा।''

गांधी भाई और कमाल भाई में अकसर लम्बी बहसें होती थीं और कभी-कभी तो इनमें कटुता भी आ जाती थी। बहस में बहुत-से दूसरे लोग भी शामिल हो जाते थे। बिचारे गांधी भाई हमेशा अकेले पड़ जाते थे। मुस्लिम लीग का विष इतना फैल चुका था कि गिनती के लोग ही इससे मुक्त रह सके थे। जहाँ कमाल भाई के पक्ष में दस-दस, बारह-बारह आदमी होते, वहाँ गांधी भाई को अकेले ही इतने सारे वार सहने पड़ते।

देश-विभाजन से कोई साल-डेढ़ साल पहले की बात है। टाउन हॉल में कौमपरस्त मुसलमानों का कोई जलसा हो रहा था। बाहर से भी कुछ नेता आए हुए थे। मुस्लिम लीग ने जलसे में हड़बोंग करने के लिए अपने वालंटियर भेज दिए थे। इनमें कमाल भाई भी थे। कमाल भाई और गांधी भाई की नोक-झोंक सुनते रहने के कारण राजनीति में मेरी भी कुछ रुचि हो गई थी। मैं भी इस जलसे में गया था। जैसे ही जलसे की कारवाई शुरू हुई, लीग के वालंटियरों ने हड़बोंग मचाना शुरू कर दिया। गांधी भाई और दूसरे लोगों ने उन्हें रोकने की कोशिश की। तू-तू, मैं-मैं से बढ़कर बात हाथापाई तक पहुँच गयी। इसी बीच किसी ने बिजली का मेन स्विच ऑफ कर दिया और जलसा दंगे में बदल गया। गांधी भाई को लीग के वालंटियरों ने बुरी तरह पीटा था। वह अधमरे-से हो गए थे। कई हफ्ते बिस्तर पर पड़े रहे थे। कमाल भाई ने कहा था, ''गद्दारों का यही अंजाम होता है। कौम से गद्दारी करेंगे तो क्या कौम फूलों के हार पहनाएगी।'' यह मात्र संयोग की बात थी कि गांधी भाई की जान बच गई थी। लीग के वालंटियरों ने तो अपनी समझ से उन्हें जान से मार डाला था।

कमाल भाई और गांधी भाई की बहस आम तौर पर एक ही दायरे में घूमती थी। कमाल भाई कहते, ''मुसलमानों की संस्कृति, भाषा, पहनावा, खानपान, धर्म, रीति-रिवाज सब कुछ हिन्दुओं से अलग हैं। वे अलग कौम हैं। अखंड भारत में उनकी संस्कृति सुरक्षित नहीं रह सकती।''

गांधी भाई कहा करते थे, ''धर्म को छोड़कर हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई अंतर नहीं है। जो अन्तर दिखाई देता है, वह केवल बाहरी है। इससे अधिक अन्तर तो खुद मुसलमानों के विभिन्न वर्गों और हिन्दुओं के विभिन्न वर्गों में दिखाई दे जाएगा। क्या तुमने कभी गौर किया है कि आम मुसलमान की जिन्दगी जन्म से लेकर मौत तक जिन रीति-रिवाजों के दायरे में घूमती है, वे आम हिन्दू से जरा भी अलग नहीं हैं? जन्मोत्सव, छठी की रस्म, शादी-ब्याह के गीत, यहाँ तक कि मरने के बाद बहुत-से संस्कार बिल्कुल वैसे ही हैं, जैसे कि हिन्दुओं के। दो कौम का नजरिया बहुत बड़ा जाल है, जिसमें भोले-भाले मुसलमानों को फाँसने की कोशिश की जा रही है। इसके नतीजे बहुत खतरनाक होंगे।''

गांधी भाई के तर्कों में बड़ा वजन था। मैं जो सांप्रदायिकता और मुस्लिम लीगी विचारधारा के विष से स्वयं को मुक्त रख सका तो इसका कारण शायद गांधी भाई के यही खयालात थे, जो मुझे सही लगते थे। आश्चर्य है कि कमाल भाई और उन जैसे हजारों-लाखों मुसलमानों को इनमें कोई सचाई नजर नहीं आती थी। लेकिन यह कैसी विडंबना थी

कि गांधी भाई जैसे इनसान, जो सांप्रदायिकता का कट्टर विरोधी था, जो मुस्लिम फिरकारपस्तों के हाथों एक बार मरते-मरते बचा था, जिसने सांप्रदायिकता की तेज आँधी में भी सांप्रदायिक एकता का दीया अपने कमजोर हाथों में पकड़ रखा था, वह देश-विभाजन के बाद एक सांप्रदायिक दंगे में किसी हिंदू के हाथों मार डाला गया था।

कमाल भाई के बारे में सोचते हुए आज ये सब बातें मुझे याद आ रही हैं। स्मृतियों का जुलूस एक बिन्दु पर पहुँचकर रुक-सा गया है। गया रेलवे स्टेशन पर पाकिस्तान को जानेवाली स्पेशल ट्रेन खचाखच भरी हुई है। जितने आदमी अन्दर हैं, उससे कहीं ज्यादा प्लेटफार्म पर हैं। जानेवालों में कमाल भाई भी हैं। हजारों आदमी इन्हें विदा करने आये हैं। इन्होंने अपनी इच्छा से उस जमीन को हमेशा के लिए छोड़ने का फैसला किया है, जिसे छोड़ने की शायद इन्होंने कुछ दिन पहले कल्पना भी नहीं की थी। ये सब स्वेच्छा से जा रहे हैं, लेकिन इनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। इन्हें अपने निर्णय पर कोई पछतावा, कोई दुख, कोई ग्लानि नहीं है। इन्हें पूरा विश्वास है कि इनका फैसला सही है। गांधी भाई भी स्टेशन पर मौजूद हैं। ट्रेन प्लेटफार्म पर सरकने लगती है। हजारों आँखें ट्रेन को जाते देखती रहती हैं और जब तक ट्रेन दृष्टि से ओझल नहीं हो जाती वे उसका पीछा करती रहती हैं। और तब तक अजीब-सी उदासी और वीरानी का एहसास सब हावी होने लगता है, जैसे जानेवालों से वे हमेशा-हमेशा के लिए कट चुके हैं। गांधी भाई फूट-फूटकर रोने लगते हैं। सिसकियों में डूबे हुए उनके शब्द आज भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं, ''इन्हें वतन कभी नसीब नहीं होगा। ये भी इजराइल की तरह ये हमेशा भटकते रहेंगे और अपनी मिट्टी और हवाओं के लिए तरसते रहेंगे।'' कमाल भाई के शब्द मेरे कानों में गूँजने लगते हैं। उन्होंने कहा था, ''दिन तो रोजी के झमेले में किसी तरह बीत जाता है। लेकिन रात के सन्नाटे में एक अजीब पुरअसरार वीरानी का एहसास छाने लगता है। एक अजीब अस्पष्ट-सा खयाल दिल और दिमाग पर हावी होने लगता है, जैसे फिर वहीं लौट जाना है, जहाँ से आए थे। लेकिन कब और कैसे? इन सवालों के जवाब नहीं मिलते।''

रिवाज के मुताबिक चौथे दिन 'कुल' हुआ। उसी बैठक में जहाँ बरसों पहले छोटे अब्बा का 'कुल' हुआ था, कमाल भाई का 'कुल' भी हुआ। अगरबत्तियाँ जलाई गईं। कुरान शरीफ की तिलावत हुई, फिर मीलाद हुआ। मरने वाले की रूह की शांति के लिए दुआएँ माँगी गई। फिर गरीबों को खाना खिलाया गया। दोपहर होते-होते 'कुल' की सारी गहमागहमी खत्म हो गयी। मैं बैठक में अकेला बैठा जिन्दगी के उतार-चढ़ाव के बारे में सोचता रहा। वर्षों पहले जब छोटे अब्बा मरे थे या उनसे भी पहले जब अब्बा का इंतकाल हुआ था तो उनके 'कुल' में भी यही सबकुछ हुआ था। पर इसके अलावा भी कुछ हुआ था, जो कमाल भाई के 'कुल' में हम लोग नहीं कर सकते थे। हम सब 'कुल' के दिन शाम को अगरबत्ती और फूल की चादर लेकर अब्बा और छोटे अब्बा के मजार पर गए थे और फातिहा पढ़कर लौट आए थे। पर कमाल भाई के कब्र पर हम लोग कहाँ जा सकते थे। वह तो हजारों मील दूर थे। शायद यह दूरी इससे भी ज्यादा थी-ऐसी दूरी जो मीलों में नहीं नापी जा सकती। मैं भावुकता की तरंगों में बहकर सोचने लगा, कमाल भाई ने जिन्दगी की आखिरी घड़ियों में जाने अपने घर को, अपने बचपन को, गया के गली-कूचों को, अपनी माँ को, अपने भाई-बहनों को किस-किस तरह याद किया होगा? कौन कह सकता है, उनके दिमाग में यादों के कितने दीये जले-बुझे होंगे। या शायद उन्हें इन बातों की याद तक नहीं आई हो। मौत की खौफनाक परछाइयों ने इन स्मृतियों को भी निगल लिया हो।

उसी रोज शाम को डाक से भाभी का खत आया। लिखा था, 'उन्हें जैसे मालूम हो गया था कि अब नहीं बचेंगे।' जब से बीमार पड़े थे, यही कहते थे, ''मुझे गया ले चलो अम्मा के पास। मैं कराची में रेगिस्तान में मरना नहीं चाहता। मुझे वहीं दफन करना फलगू नदी के उस पार कब्रिस्तान में, जहाँ अब्बा की कब्र है और बड़े अब्बा की।''

एकाएक मुझे लगा, जैसे वक्त ने अपना दामन समेट लिया है और मौलवी साहब की कड़कदार आवाज मेरे कानों से टकरा रही है :

''हजरत यूसुफ ने अपनी जिन्दगी का बड़ा हिस्सा मिस्र में ही गुजारा और जब उनकी उम्र एक सौ साल की पहुँची तो उनका इंतकाल हो गया। हजरत यूसुफ ने इंतकाल से पहले अपने खानदान वालों से यह वायदा कराया कि वे उन्हें मिस्र की जमीन में दफन नहीं करेंगे, बल्कि जब खुदा का यह वायदा पूरा हो कि बनी इसराइल दुबारा फिलिस्तीन यानी अपने पुरखों की जमीन में वापस हों तो उनकी हड्डियाँ वे अपने साथ लेते जाएँगे और वहीं मिट्टी के सुपुर्द कर देंगे। चुनाँचे उन्होंने वायदा किया और हजरत यूसुफ का इंतकाल हो गया तो उनको ममी करके ताबूत में हिफाजत से रख दिया और जब हसरत मूसा के जमाने में बनी इसराइल मिस्र से निकले तो इस ताबूत को भी अपने साथ लेते हुए गए और पुरखों की जमीन में ले जाकर इसे दफन कर दिया।''

'हजरत यूसुफ ने ऐसा क्यों कहा, मौलवी साहब?' कमाल भाई ने पूछा था।

''हजरत यूसुफ आखिर को इनसान थे भाई। मिस्र में उन्होंने बड़ी शान से हुकूमत की। इज्जत, शुहरत, दौलत! ऐसी कौन-सी चीज थी जो उन्हें वहाँ नहीं मिली। लेकिन वतन फिर भी वतन है। मिट्टी खींचती है भाई। तुम अभी इसे नहीं समझोगे।'' मौलवी साहब बोले थे।

तब कौन जानता था कि एक जमाना ऐसा भी आएगा, जब कमाल भाई को अपने संबंधियों से वही कुछ कहना पड़ेगा, जो हजरत यूसुफ ने बनी इसराइल से कहा था। पर बनी इसराइल से तो खुदा ने वायदा किया था कि वे पुरखों की जमीन में फिर वापस होंगे। कमाल भाई ने तो खुदा ने ऐसा वायदा नहीं किया था। और तभी मुझे लगता है कि कमाल भाई बहुत लम्बे अर्से तक एक बहुत बड़े झूठ के सहारे जीते रहे थे। लेकिन उनकी जिन्दगी में ऐसा समय भी आया था, जब उन्होंने इस झूठ को पहचानना शुरू कर दिया था और अपने जीवन के अंतिम क्षणों में तो उन्होंने झूठ से इस लबादे को बिल्कुल उतार फेंका था और उस सचाई को पूरी तरह से महसूस कर लिया था, जिसे गांधी भाई बहुत पहले ही जान चुके थे। और तब कमाल भाई का चेहरा कोई एक चेहरा नहीं रहता। वह हजारों-लाखों चेहरों में बदलने लगता है। चेहरे जो न हिन्दू हैं, न मुसलमान, महज इनसान के चेहरे, जो अपनी जड़ों से कटकर बहुत करुण बन गए हैं और जिन्हें निहित स्वार्थों के षडयंत्र ने आजीवन नरक में झोंक दिया है।

साभार

क्या वह धमकी थी?

> **मैंने माना था कि बिना विचारे उत्साह में जवाब देने वाले बहुतेरे युवकों की भाँति मोतीलाल भी होंगे। पर उन्होंने बहुत दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, "हम जरूर जेल जाएँगे। पर आपको हमें रास्ता दिखाना होगा। काठियावाड़ी के नाते आप पर हमारा पहला अधिकार है। इस समय तो हम आपको रोक नहीं सकते, पर लौटते समय आपको वढ़वाण उतरना होगा।**

अपने बड़े भाई की विधवा पत्नी और दूसरे कुटुम्बियों से मिलने के लिए मुझे बंबई से राजकोट और पोरबंदर जाना था। इसलिए मैं उधर गया। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह की लड़ाई के सिलसिले में मैंने अपनी पोशाक जिस हद तक गिरमिटिया मजदूरों से मिलती-जुलती की जा सकती थी, कर ली थी। विलायत में भी घर में मैं यही पोशाक पहनता था। हिंदुस्तान आकर मुझे काठियावाड़ी पोशाक पहननी थी। दक्षिण अफ्रीका में मैंने उसे अपने साथ रखा था। अतएव बंबई में मैं उसी पोशाक में उतर सका था। इस पोशाक में कुर्ता, अँगरखा, धोती और सफेद साफे का समावेश होता था। ये सब देशी मिल के कपड़े के बने हुए थे। बंबई से काठियावाड़ मुझे तीसरे दर्जे में जाना था। उसमें साफा और अँगरखा मुझे झंझट मालूम हुए। अतएव मैंने केवल कुर्ता, धोती और आठ-दस आने की कश्मीरी टोपी का उपयोग किया। ऐसी पोशाक पहनने वाले की गिनती गरीब आदमी में होती थी। उस समय वीरमगाम अथवा वढ़वाण में प्लेग के कारण तीसरे दर्जे के यात्रियों की जाँच होती थी। मुझे थोड़ा बुखार था। जाँच करने वाले अधिकारी ने मेरी हाथ देखा तो उससे गरम लगा। इसलिए उसने मुझे राजकोट में डॉक्टर से मिलने का हुक्म दिया और मेरा नाम लिख लिया।

बंबई से किसी ने तार या पत्र भेजा होगा। इसलिए वढ़वाण स्टेशन पर वहाँ के प्रसिद्ध प्रजा-सेवक दर्जी मोतीलाल मुझसे मिले। उन्होंने मुझसे वारमगाम की चुंगी-संबंधी जाँच-पड़ताल की और उसके कारण होने वाली परेशानियों की चर्चा की। मैं ज्वर से पीड़ित था, इसलिए बातें करने की इच्छा न थी। मैंने उन्हें थोड़े में ही जवाब दिया, 'आप जेल जाने को तैयार हैं?'

मैंने माना था कि बिना विचारे उत्साह में जवाब देने वाले बहुतेरे युवकों की भाँति मोतीलाल भी होंगे। पर उन्होंने बहुत दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, "हम जरूर जेल जाएँगे, पर आपको हमें रास्ता दिखाना होगा। काठियावाड़ी के नाते आप पर हमारा पहला अधिकार है। इस समय तो हम आपको रोक नहीं सकते, पर लौटते समय आपको वढ़वाण उतरना होगा। यहाँ के युवकों का काम और उत्साह देखकर आप खुश होंगे। आप अपनी सेना में जब चाहेंगे, तब हम भरती कर सकेंगे।"

मोतीलाल पर मेरी आँख टिक गई। उनके दूसरे साथियों ने उनकी स्तुति करते हुए कहा, "ये भाई दर्जी हैं। अपने धंधे में कुशल हैं, इसलिए रोज एक घंटा काम करके हर महीने लगभग पंद्रह रुपए अपने खर्च के लिए कमा लेते हैं और बाकी का समय सार्वजनिक सेवा में बिताते हैं। ये हम सब पढ़े-लिखों का मार्गदर्शन करते हैं और हमें लज्जित करते हैं।"

बाद में मैं भाई मोतीलाल के संपर्क में काफी आया था और मैंने अनुभव किया था कि उनकी उपर्युक्त स्तुति में लेशमात्र भी अतिशयोक्ति नहीं थी। जब सत्याग्रहाश्रम स्थापति हुआ, तो वे हर महीने वहाँ कुछ दिन अपनी हाजिरी दर्ज करा ही जाते थे। बालकों को सीना सिखाते और आश्रम का सिलाई का काम भी कर जाते थे। वीरमगाम की बात तो वे मुझे रोज सुनाते थे। वहाँ यात्रियों को जिन मुसीबतों का सामना करना पड़ता था, वे उनके लिए असह्य थी। इन मोतीलाल को भरी जवानी में बीमारी उठा ले गई और वढ़वाण उनके बिना सुना हो गया।

राजकोट पहुँचने पर दूसरे दिन सबेरे मैं उपर्युक्त आज्ञा के अनुसार अस्पताल में हाजिर हुआ। वहाँ तो मैं अपरिचित नहीं था। डॉक्टर शरमाए और उक्त जाँच करने वाले अधिकारी पर गुस्सा होने लगे। मुझे गुस्से का कोई कारण न दिखाई पड़ा। अधिकारी ने अपने धर्म का पालन ही किया था। वह मुझे पहचानता नहीं था और पहचानता होता तो भी उसने जो हुक्म दिया, वह देना उसका धर्म था। पर चूँकि मैं सुपरिचित था, इसलिए राजकोट में मैं जाँच कराने जाऊँ, उसके बदले लोग घर आकार मेरी जाँच करने लगे।

ऐसे मामलों में तीसरे दर्जे के यात्रियों की जाँच करना आवश्यक है। बड़े माने जानेवाले लोग भी तीसरे दर्जे में यात्रा करें, तो उन्हें गरीबों पर लागू होनेवाले नियमों का स्वेच्छा से पालन करना चाहिए। पर मेरा अनुभव यह है कि अधिकारी तीसरे दर्जे के यात्रियों को आदमी समझने के बदले जानवर जैसा समझते हैं। 'तू' के सिवा उनके लिए दूसरा कोई संबोधन ही नहीं होता। तीसरे दर्जे का यात्री न तो सामने जवाब दे सकता है, न बहस कर सकता है। उसे इस तरह का व्यवहार करना पड़ता है, मानो वह अधिकारी का नौकर हो। अधिकारी उसे मारते-पीटते हैं, उसे लूटते हैं, उसकी ट्रेन छुड़वा देते हैं, उसे

टिकट देने में हैरान करते हैं। यह सब मैंने स्वयं अनुभव किया है। इस वस्तुस्थिति में सुधार तभी हो सकता है, जब कुछ पढ़े-लिखे और धनिक लोग गरीबों जैसे बनें, तीसरे दर्जे में यात्रा करके गरीब यात्रियों को न मिलने वाली सुविधा का उपयोग न करें और अड़चनों, अशिष्टता, अन्याय और बीभत्सता को चुपचाप न सहकर उसका सामना करें और उन्हें दूर कराएँ। काठियावाड़ में मैं जहाँ-जहाँ भी घूमा, वहाँ-वहाँ मैंने वीरमगाम की चुंगी-संबंधी जाँच की शिकायतें सुनीं।

अतएव मैंने लार्ड विलिंग्डन के दिए हुए निमंत्रण का तुरंत उपयोग किया। इस संबंध में जो भी कागज-पत्र मिले, उन सबको मैं पढ़ गया। मैंने देखा कि शिकायतों में बहुत सच्चाई है। इस विषय में मैंने बंबई सरकार से पत्र-व्यवहार शुरू किया। सेक्रेटरी से मिला। लार्ड विलिंग्डन से भी मिला। उन्होंने सहानुभूति प्रकट की, किंतु दिल्ली की ढील की शिकायत की।

सेक्रेटरी ने कहा, ''हमारे ही हाथ की बात होती, तो हमने यह चुंगी कभी की उठा दी होती। आप केंद्रीय सरकार के पास जाइए।''

मैंने केंद्रीय सरकार से पत्र-व्यवहार शुरू किया, पर पत्रों की पहुँच के अतिरिक्त कोई उत्तर न पा सका। जब मुझे लार्ड चेम्सफर्ड से मिलने का मौका मिला, तब अर्थात् लगभग दो बरस के पत्र-व्यवहार के बाद मामले की सुनवाई हुई। लार्ड चेम्सफोर्ड से बात करने पर उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया। उन्हें वीरमगाम की कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनी और उसी समय टेलीफोन करके वीरमगाम के कागज-पत्र मँगवाएँ और मुझे वचन दिया कि आपके कथन के विरुद्ध अधिकारियों को कोई आपत्ति नहीं हुई, तो चुंगी रद्द कर दी जाएगी। इस मुलाकात के बाद कुछ ही दिनों में चुंगी उठ जाने की खबर मैंने अखबारों में पढ़ी।

मैंने इस जीत को सत्याग्रही नींव माना, क्योंकि वीरमगाम के संबंध में बाते करते हुए बंबई सरकार के सेक्रेटरी ने मुझसे कहा था कि मैंने इस विषय में बगसरा में जो भाषण किया था, उसकी नकल उनके पास है। उन्हें सत्याग्रह का जो उल्लेख किया गया था, उस पर उन्होंने अपनी अप्रसन्नता भी प्रकट की थी। उन्होंने पूछा था, ''क्या आप इसे धमकी नहीं मानते? और इस तरह कोई शक्तिशाली सरकार धमकियों की परवाह करती है?''

मैंने जवाब दिया, ''यह धमकी नहीं है। यह लोकशिक्षा है। लोगों को अपने दुःख दूर करने के सब वास्तविक उपाय बताना मुझ जैसों का धर्म है। जो जनता स्वतंत्रता चाहती हैं, उसके पास अपनी रक्षा का अंतिम उपाय होना चाहिए। साधारणतः ऐसे उपाय हिंसात्मक होते हैं। पर सत्याग्रह शुद्ध अहिंसक शस्त्र है। उसका उपयोग और उसकी मर्यादा बताना मैं अपना धर्म समझता हूँ। मुझे इस विषय में संदेह नहीं है कि अंग्रेज सरकार शक्तिशाली है। पर इस विषय में भी मुझे कोई संदेह नहीं है कि सत्याग्रह सर्वोपरि शस्त्र है।''

चतुर सेक्रेटरी ने अपना सिर हिलाया और कहा, ''ठीक है, हम देखेंगे।''

(क्रमशः)

लोकतंत्र का
पाँचवाँ स्तंभ
सकारात्मक चिंतन एवं विकास का संवाहक

पी.टी. 62/20 कालकाजी, नई दिल्ली-19
फोन नं. +91-11-26231999
इ.मेलः editorpanchwastambh@gmail.com
panchvan.stambh@gmail.com

(मासिक पत्रिका) का सदस्यता फार्म

पूरा नाम ....
पता ....
....
फोन .... मोबाइल .... ई–मेल ....

सदस्यता वार्षिक ₹220, पांच वर्षीय ₹1000, आजीवन ₹2500

सदस्यता राशिः ₹.......... नकद/मनीऑर्डर/ड्राफ्ट क्रमांक .... दिनांक ....

कृपया सदस्यता राशि मनीऑर्डर/ड्राफ्ट "Panchwa Stambh" (पाँचवाँ स्तंभ) के नाम पी.टी 62/20 कालकाजी, नई दिल्ली–110019 के पते पर भेंजे।

RTGS/NEFT के लिए "Panchwa Stambh", Central Bank Of India A/c No. 3504660941, IFSC Code: CBIN0280308, Branch Name: Kalkaji, New Delhi-19 के खाते में जमा कर सूचित करें।

स्थान .... दिनांक .... हस्ताक्षर ....

(प्रिय पाठको, यह आपके प्रेम का ही परिणाम है कि आज पाँचवाँ स्तंभ पत्रिका देश के 28 राज्यों में पहुंच रही है और निरंतर आपकी सराहना मिल रही है। आपसे अनुरोध है आप इसका स्वयं सदस्य बनें एवं अपने इष्ट मित्रों को भी सदस्य बनायें।)

बिहार सरकार
मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग
बिहार सरकार का एक और महत्त्वपूर्ण निर्णय
पैतृक/पारिवारिक संपत्ति के बंटवारे का निबंधन हुआ सस्ता
मुद्रांक एवं निबंधन शुल्क संपत्ति के मूल्यांकन का 5% से घटा कर मात्र 100 रु. किया गया
अपील
आपसी सहमति के बंटवारे का निबंधन कराकर
भू–अभिलेखों में अपना नाम अवश्य दर्ज कराएं।
विशेष जानकारी के लिए समीप के निबंधन कार्यालय से संपर्क करें।

किस्त-दर-किस्त

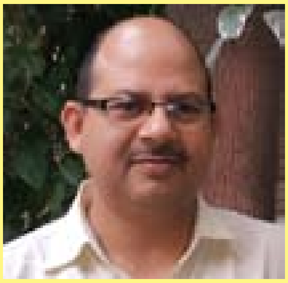

संजय कुमार मिश्र
M 0997 1189 229

जीरो बजट प्राकृतिक खेती में रसायनिक खाद की जगह भूमि की प्राकृतिक उर्वराशक्ति को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है। इसमें रासायनिक खाद के विकल्प के तौर पर 'जीवमृथा' का इस्तेमाल होता है।

जल-जीवन-हरियाली

हम सभी यह जानते हुए भी कि जमीन पर ही चलना है, इसी पर पलना है, इसी की हरियाली से हर श्वास चलती है, इसी जमीन के उपजे अनाजों एवं फलों पर हमारा जीवन निर्भर है। फिर भी अपनी जमीनी बात, जड़ों की बात करना दकियानूसी और पुरातनपंथी मान बैठे हैं। इसी का परिणाम है कि आज हमारी सारी नदियाँ और जल प्रदूषित हो गई हैं। विकास और क्रांति के नाम पर हमारी जमीन और खेत दिनोदिन अनुर्वर, बंजर और खद्यान्न जहरीले होते गए। हम आयातित तकनीक, जहरीले उर्वरक और बीज पर इस कदर निर्भर होते चले गए कि आज हमारा गोधन और लोग बेकार-बेरोजगार हो गए। कर्ज में दबे किसान आत्महत्या को मजबूर हैं।

ऐसे माहौल में बिहार की धरती से फिर एक बार फिर इन मूल आधारभूत संसाधनों को बचाने के लिए जोरदार आवाज 19 जनवरी को उठी, जब जल-जीवन और हरियाली के लिए पाँच करोड़ से ज्यादा लोगों ने सड़क पर उतरकर अठारह हजार किमी से ज्यादा लंबी मानव शृंखला बनाकर इतिहास रचा। मुख्य कार्यक्रम का आयोजन पटना के गांधी मैदान में किया गया। इसके पहले दिसंबर में आयोजित 'जल-जीवन-हरियाली' जागरूकता सम्मेलन में हजारों लोगों के बीच मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा था कि जल-जीवन-हरियाली अभियान मिशन मोड में चलेगा। इस अभियान को सफल बनाने के लिए पर्यावरण संबंधी चौतरफा काम किए जाएँगे। उनके इन प्रयासों की झलक बिहार के नए बजट में भी दिख रही है। इस बजट में पर्यावरण संकट को ध्यान में रखते हुए हरित बजट या हरियाली बढ़ाने पर केंद्रित है। इस बजट में तकरीबन सभी विभागों की योजनाओं में हरित आवरण बढ़ाने के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं।

केंद्रिय वित्त मंत्री निर्मला सीतामरण ने पिछले साल 2019-20 में जीरो बजट प्राकृतिक खेती की बात की थी, जिसकी खूब चर्चा भी हुई। यही वजह है कि 2020-21 के बजट में यह उम्मीद के अनुरूप बजटीय प्रावधान किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी विभिन्न मंचों पर जीरो बजट खेती और रसायन मुक्त खेती की बात कर चुके हैं। इसके लिए परंपरागत कृषि विकास योजना की शुरुआत भी की गई है। इसमें लोगों को जैविक खेती के लिए प्रेरित किया जाता है। अब अनेक राज्यों में जीरो बजट प्राकृतिक खेती की बात होने लगी है। यदि सरकार और लोग रासायनिक खादों से मुक्त प्राकृतिक खेती की अवधारणा पर पुनः सोचने लगे हैं तो इसका श्रेय गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत तथा महाराष्ट्र के कृषि वैज्ञानिक पद्मश्री सुभाष पालेकर को जाता है।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने सरकारों और आम लोगों के दिलो-दिमाग में प्राकृतिक खेती से पैदा होने वाली वस्तुओं के सेवन का बीज बो दिया है। आचार्य का खुद का गुरुकुल कुरुक्षेत्र में करीब 250 एकड़ का जैविक खेती का फार्म हाउस है, जिसे देश-दुनिया की कई बड़ी हस्तियाँ देखने के लिए वहाँ जा चुकी हैं। विश्वविद्यालयों के कुलपति और प्रोफेसर से लेकर संसद के अनेक सदस्य तथा कई कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल की प्राकृतिक खेती के फार्मूले के मुरीद हो चुके हैं।

जीरो बजट खेती का विचार सबसे पहले रासायनिक खाद, कीटनाशक और भरपूर सिंचाई आधारित हरित क्रांति के विकल्प के तौर पर महाराष्ट्र के कृषि वैज्ञानिक पद्मश्री सुभाष पालेकर ने 1990 में दिया में ही दिया था। पालेकर का मानना है कि किसानों पर बढ़ते कर्ज और आत्महत्या की प्रमुख वजह खेती में बाहरी लागत के बढ़ते दाम हैं। इसके साथ ही खेती में इस्तेमाल होने वाले रसायनों की वजह से वातावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है और भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित हो रही है। बाजार से निर्भरता खत्म करने से किसानों के खर्च में कटौती होगी और उन्हें कर्ज लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इससे कई छोटे किसानों को कर्ज के फंदे से मुक्ति मिलेगी।

जीरो बजट प्राकृतिक खेती में रसायनिक खाद की जगह भूमि की प्राकृतिक उर्वराशक्ति को बढ़ावा देने पर जोर दिया जाता है। इसमें रासायनिक खाद के विकल्प के तौर पर 'जीवमृथा' का इस्तेमाल होता है। इसे देशी गाय के गोबर, गौमूत्र, गुड़, दाल का आटा, पानी और मिट्टी के किण्वित माइक्रोबियल मिश्रण से बनाया जाता है। ये सभी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होते हैं और किसान को इसे बाजार से खरीदने की जरूरत नहीं होती है। यह जैविक मिश्रण खेत की उर्वराशक्ति को बढ़ाने के साथ-साथ सूक्ष्म जीवों और केंचुओं को सक्रिय कर खेतों में होने वाली जैविक प्रक्रियाओं को बढ़ावा देता है और तीन साल के बाद खेत को बाहरी उर्वरक की जरूरत नहीं रह जाती है। जीरो बजट प्राकृतिक खेती सदियों से चली आ रही परंपरागत खेती का ही परिवर्तित रूप है। जिसमें किसी भी प्रकार के रसायन जैसे कि रासायनिक खाद, कीटनाशक का इस्तेमाल नहीं होता है।

खेती में बढ़ती लागत और किसानों के कर्ज के दुरूह चक्र के बाद जीरो बजट प्राकृतिक खेती की जरूरत बढ़ गई है। नेशनल सैंपल सर्वे (एनएसएसओ) की ओर से जारी डाटा के मुताबिक 70 प्रतिशत किसान अपनी कमाई से अधिक खर्च करते हैं और आधे से अधिक किसान कर्ज में डूबे हैं। पंजाब और हरियाणा ऐसा राज्य है, जहाँ हर साल हजारों लोग कैंसर से अपनी जान गँवा रहे हैं। कभी किसानों और खेती की रीढ़ कहलाने वाले हमारे गोधन खासकर बैल बेकार होकर किसानों और सरकारों पर बोझ बन गए हैं। प्राकृतिक खेती पूरी तरह से हमारे इस अमूल्य गोधन का बेहतर इस्तेमाल हो पाएगा।

आचार्य देवव्रत एवं डॉ. पालेकर की सबसे बड़ी सफलता यही है कि अब हरियाणा, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, बिहार समेत अनेक राज्य सरकारें उनके कम लागत वाले प्राकृतिक खेती के फार्मूले को आत्मसात् कर रही हैं। इसके अलावा पूर्वोत्तर राज्यों के लिए ऑर्गेनिक वेल्यू चेन डवलपमेंट फॉर नार्थ ईस्ट रीजन और नेशनल प्रोजेक्ट ऑन ऑर्गेनिक फार्मिंग नाम से भी योजनाएँ चलाई जा रही हैं। बहुत ज्यादा नुकसान उठाने के बाद अब सरकार और समाज का ध्यान प्राकृतिक खेती पर गया है। बिहार से जल-जीवन-हरियाली के लिए जो लाखों हाथ उठे हैं, उस मानव शृंखला को पूरे देश तक विस्तार देने की जरूरत है, ताकि असली हरित क्रांति देश में आ जाए, जो सबके लिए मंगलकारी हो। ©पां.स्तं.

बिहार सरकार

मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता भत्ता योजना

'राज्य सरकार की अभूतपूर्व पहल'

- इस योजना के तहत 20–25 वर्ष के बेरोजगार युवा को रोजगार तलाशने के दौरान सहायता के तौर पर 1000 रुपये प्रतिमाह की दर से भत्ता दिया जाता है।
- साथ ही कुशल युवा कार्यक्रम का निः शुल्क प्रशिक्षण भी अनिवार्य रूप से कराया जाता है।
- स्वयं सहायता भत्ता 2 वर्षो के लिए दिया जाता है।
- योजना का लाभ उठाने के लिए युवाओं का आधार कार्ड, आवासीय प्रमाण पत्र, अनुसूचित बैंक में खाता तथा ई–मेल आवश्यक है।

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्त... समाज सशक्त

- पंचायती राज संस्थानों एवं नगर निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण।
- प्राथमिक शिक्षकों की नियुक्ति में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण।
- बालिकाओं के समग्र विकास हेतु मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना लागू।
- जीविका के स्वंय सहायता समूहों के माध्यम से आत्मनिर्भरता एवं सशक्तिकरण।
- सरकारी सेवाओं में 35 प्रतिशत आरक्षण।

बिहार सरकार

सूचना एवं जन–सम्पर्क विभाग

POSTAL REGD. NO. DL(S)-01/3287/2019-21
RNI NO. DELHIN/2006/18597
PUBLISHING DATE: 25TH-26TH PREVIOUS MONTH
POSTING DATE: 5TH-6TH EVERY MONTH